सिद्ध
शाबर मंत्र

योगीराज के आजमाये हुए

सिद्ध शाबर मंत्र

लेखक

यो. अवतार सिंह अटवाल (तांत्रिक)

☎ 212696

प्रकाशक

अमित पाकेट बुक्स

सखुजा मार्किट, नज़दीक चौंक अड्डा टांडा,
जालन्धर-8

मूल्य : 90:00

प्रकाशकः

अमित पाकेट बुक्स

चौंक अड्डा टांडा, जालन्धर।

चेतावनी– इस पुस्तक का उद्देश्य केवल प्रस्तुत विषय से संबधित जानकारी प्रदान करना है। पुस्तक को पढ़कर यदि कोई व्यक्ति किसी टोने-टोटके, गण्ड़े, तावीज अथवा नक्श आदि का प्रयोग करता है और उससे उसे कोई लाभ नहीं होता या फिर किसी वजह से नुकसान होता है, तो उसकी जिम्मेदारी प्रकाशक, लेखक या मुद्रक की कतई नहीं होगी क्योंकि हमारा उद्देश्य केवल विषय से परिचित कराना है। किसी गंभीर रोग अथवा उसके निदान की दशा में अपने योग्य विशेषज्ञ से अवश्य परामर्श लें।

लेखकः-

यो. अवतार सिंह अटवाल (ताँत्रिक)

(कार्यालय तन्त्रमणि)

मु. पो. - मननहाना, नज़दीक-कोट फ़तूही,

ज़िला होशियारपुर - 144 519

Ph.0181- 5001696

मुद्रक

योजना प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर।

विषय सूची

सिद्धि कर्म

सर्व सिद्धि के लिए माँ कालिका के सफल एवं सिद्ध शाबर मन्त्र

सर्व कार्य सिद्धि के लिए श्री हनुमान जी के सफल एवं सिद्ध शाबर मंत्र

अमित पाकेट बुक्स

नज़दीक चौक अड्डा टांडा,

जालन्धर-144001

भूमिका

शाबर मंत्र विद्या अति गहन एवं गूढ़ रहस्यों से भरपूर विद्या है। अत्यन्त सरल भाषा में पाए जाने वाले सभी मंत्र शाबर मंत्र कहे जाते है। ये सभी मंत्र अत्यन्त सरल भाषा में पाए जाने पर भी इनका कोई अर्थ नहीं होता, यह मंत्र सभी बोली जाने वाली भाषाओं में पाए जाते है।

प्राचीन समय से चली आ रही भारतीय परम्पराओं से अवगत होने वाली इस तंत्र-मंत्र विद्या में अब लोगों का विश्वास कम होने लगा था लेकिन पिछले कुछ समय में इस विद्या के विभिन्न विषयों पर अनेकों लेखकों ने अनेकों पुस्तके लिख डाली पर उनमें से कुछ ही पुस्तकें समय की कसौटी पर खरी उतरी है। क्योंकि जितनी भी पुस्तके बाजार में उपलब्ध है, उनमें दी हुई आधी अधूरी विधि को उपयोग कर कोई भी साधक सफल नहीं हुआ, किसी भी तंत्र साहित्य के मूल रहस्यों को पूर्ण रूप में समझने के लिए किसी योग्य गुरू की शरण में जाना पड़ता है।

यह प्राचीन तंत्र विद्या गुरू शिष्य प्रणाली के अन्तर्गत ही प्राप्त हो सकती है पुस्तकों के आधार पर किसी भी विद्या में कोई भी साधक सफल नहीं हो सकता, जब तक गुरु की छत्रछाया साधक पर न हो, एक सफल व सिद्ध गुरु साधक व पाठक को तंत्र विद्या का ज्ञान कुछ ही समय में करवा देता है।

साधक व पाठक शुद्ध, स्वच्छ, सच्चे मन से गुरु से दीक्षा व शिक्षा प्राप्त कर के ही इस विद्या का ज्ञान प्राप्त करें।

मंत्र का यथार्थ स्वरूप यद्यपि चित् शक्ति है, तथापि साधना शक्ति मंत्र शक्ति से सम्बन्ध हुए बिना साधक को उसकी अनुभूति नहीं होती, पूजा ध्यान और अन्य प्रक्रियाओं में साधक की केवल साधना शक्ति ही काम करती है, जबकि मंत्र साधना में साधना शक्ति, मंत्र शक्ति से एकाकर स्थापित करके क्रियाशील होती है।

एक सशक्त साधनाशील की व्यक्तिगत शक्ति के सम्पर्क में मंत्र शक्ति कई गुना प्रबलता से कार्य करती है, तब मंत्र में वह शक्ति उत्पन्न हो जाती है, तब साधक असम्भव कार्य को भी सम्भव कर सकता है, मंत्र की सहायता से दैवी शक्ति भी रूपान्तरित हो जाती है, जिससे मनुष्य दैविक कार्य भी सम्पन्न कर सकता है।

मंत्र शास्त्र का विषय गहन और जटिल है, इसे समझ लेना हर किसी साधारण के बस की बात नहीं, इस विद्या के विषय का जो विवेचन प्राचीन शास्त्रों में किया गया है, वह अत्यन्त, बुद्धिगम्य और माननीय है, उसे यहां पर मैं प्रकट करने का कुछ प्रयास मात्र कर रहा हूँ। भारतीय वाङ्मय में मंत्र विद्या का आसन बहुत ऊँचा माना गया है।

साधक गुरू से मंत्रोपदेश (दीक्षा) प्राप्त कर साधना में बैठे तभी सफल

हो सकता है, बिना गुरू के मंत्र जप किया कभी भी सफल नहीं हो सकता। गुरू द्वारा प्रदान ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ है, साधक गुरू चरणों का सहारा लेकर ही मंजिल प्राप्त कर सकता है।

वेद पुराण आदि भारतीय ग्रन्थों में मंत्र-तंत्र विद्या के द्वारा इस लोक-परलोक के सुख की प्राप्ति के अनेकों प्रसंग पद-पद पर आये है।

शब्द 'अक्षर' है जिसका अर्थ होता है, अविनाशी ठीक यही संगति ध्वनि के साथ है, जो ध्वनि एक बार हो जाती है, वह कभी भी नष्ट नहीं होती, इसलिये अक्षर में अक्षरत्व है, और यह अविनाशित्व उसी ब्रह्म का गुण है, जागतिक चमत्कारों को प्राप्त करने के लिये किसी भी भाषा के मंत्रों को काम में लिया जाये, किन्तु वे भी मंत्रत्व प्राप्त करने के लिये प्राण प्रतिष्ठा चाहते हैं, और वह प्राण प्रतिष्ठा उस नादब्रह्म की यथाविधि उपासना से हो सकती है।

शाबर मंत्रों का जन्म प्रायः सिद्ध साधकों के द्वारा हुआ है, सम्भवतः यही कारण है कि मंत्र के समापन के समय देवता को विकट आन दी जाती है, इस सच्चाई से तो कभी भी मुख नहीं मोड़ा जा सकता कि कभी-कभी शास्त्रीय मंत्रों के प्रभाव की कमी को ये शाबर मंत्र बड़ी ही सफलता से पूर्ण करते है। शाबर मंत्रों में अपने आप में गोली की तरह शक्ति एक सफलता, स्पष्ट प्रभाव होने के कारण ये मंत्र आज भी तांत्रिकों के गले की शोभा बने हुए है।

शाबर मंत्र ग्राम्य शाखा के सिद्ध मंत्र है। शाबर मंत्रों का अर्थ अपरिष्कृत अथवा ग्राम्य भी होता है, शाबर मंत्रों का आप अंदाजा सहज लगा सकते है, कि हमारे प्राचीन समय के तांत्रिक सर्पदंश का सन्देश लेकर आए व्यक्ति को एक थप्पड़ मारकर मीलों दूर बैठे रोगी व्यक्ति का विष का स्तम्भन कैसे करते थे, कैसे कोडिया फैंककर विषधर को वह अपने मुकाम पर बुलाता था, यह प्राचीन शाबर विद्या लुप्त हो रही है, जरूरत है, इस विद्या के प्राचीन ग्रन्थों को फिर द्वारा जागृत करने की एक गांव का अनपढ़ ओझा कौन सी संस्कृत जानता है, उसकी सफलता का मुख्य राज सिद्ध शाबर मंत्र है। यह मंत्र कभी भी निष्फल नहीं जाते, इन सिद्ध शाबर मंत्रों को गुरु से दीक्षा प्राप्त कर करे तो आप इन मंत्रों का प्रभाव स्पष्ट रूप से खुद देख सकेगे।

कलि बिलोकि जग हित हर गिरजा।
साबर मंत्र जाल जिन्ह सिरजा।।
अनमिल आखर अरथ न जापू।
प्रगट प्रभाउ महेश प्रतापू।।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी रामचरित मानस में इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है, कि श्री उमा महेश्वर ने कलियुग के प्राणियों पर दया करके शाबर मंत्रों की रचना की ताकि कलियुग में मानव के संकट, कष्ट शाबर साधना से शीघ्र नष्ट हो, प्राचीन तंत्र शास्त्र के अनुसार

शाबर मंत्रों को सफल इस लिए भी माना है, कि यहां संस्कृत वैदिक मंत्र कीलित है, वहां यह मंत्र कीलित नहीं है, इसलिए यह गुरु कृपा दीक्षा से शीघ्र सिद्ध हो जाते है।

हमने आप हजारों पाठकों के पत्रों का अवलोकन कर आपकी माँग को मुख्यतः ध्यान में रखकर आपकी कही मुख्यत बातों को ध्यान में रखकर आप सभी पाठको व साधकों के लिए एक अनूठा संग्रह रूपी ग्रंथ तैयार किया है, जो पाठकों को उनकी मंजिल तक पहुँचाने में पूर्ण रूप में सफल होगा, साधक तंत्र विद्या के सम्पूर्ण कार्य को गुरु की छत्रछाया में रहकर प्राप्त करे, तभी साधक पूर्ण रूप में सिद्ध व सफल होगा। साधक शुद्ध, स्वच्छ, सच्चे मन से गुरु के प्रति श्रद्धा भाव रखकर, गुरु से शिक्षा प्राप्त कर सकता है, गुरु अनेकों प्राचीन पुस्तकों रुपी समुन्द्र का मन्थन कर साधक को शक्ति रुपी सिद्धि रत्न पहनाता है। जो साधक को सिर्फ गुरु द्वारा ही प्राप्त हो सकता है।

पाठकों, साधको, जिज्ञासुओं के विचार शिरोधार्य हैं, आप अपने पत्र हिन्दी में साफ-साफ शब्दों में लिखे, तथा अपने पत्र में अपना पता लिखा समुचित टिकट लगा लिफाफा साथ में अवश्य भेजे योग्य पत्रों के उचित उत्तर शीघ्र दिये जायेगें।

यदि आप अपने पत्र का शीघ्र उत्तर चाहते है, तो रजिस्ट्री पत्र द्वारा सम्पर्क करें, यदि आपकी कोई भी जटिल समस्या हो जिसका समाधान आप हमसे करवाना चाहते हैं, तो प्रत्येक शाम 7 बजे से 9 बजे रात्रि तक फोन नं. 01884-50030 पर सम्पर्क कर सकते हैं, तथा आपको किसी भी प्रकार की सिद्ध तांत्रिक सामग्री प्राप्त करने में कठिनाई हो तो भी सम्पर्क कर असली व सिद्ध सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।

हमारा लक्ष्य आपको संतुष्ट व सफल करना है, आप अपने विचार निःसंकोच पूर्ण पुस्तक पढ़कर हमें पत्र लिखे आप के पत्र का उत्तर अवश्य मिलेगा और अगली नई पुस्तक आपके पत्रों के आधार पर ही प्रकाशित होगी। आप गुरु के द्वारा यह विद्या प्राप्त कर सफल होगे इसी आशा के साथ।

आपका अपना
यो. अवतार सिंह अटवाल (तांत्रिक)
कार्यालय तंत्रमणि
मु.पो. मननहाना
नज़दीक कोट फतूही
जिला होशियारपुर (पंजाब)
पिन कोड - 144 519
फोन नंः 01884-50030

साधकों के लिए यो. अटवाल जी का विशेष सुझाव

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व साधक निम्न नियमों का पालन अवश्य करें–

1. गुरु से ज्ञान प्राप्त करें।
2. गुरु से शक्ति दीक्षा अवश्य प्राप्त करें।
3. ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्ण रूप से पालन करें।
4. अपने गुरु एवं परमात्मा पर पूर्ण विश्वास और श्रद्धा रखें।
5. मन एवं शरीर को शुद्ध और पवित्र रखें।
6. प्राचीन तंत्र शास्त्रों पर विश्वास कर साधना करें।
7. मास-मदिरा का सेवन न करें।
8. गुरु के सिवा किसी भी अन्य व्यक्ति से साधना सम्बन्धी कोई बात न करें।
9. साधना के लिए एकांत और शुद्ध स्थान का उपयोग करें।
10. गुरु के छत्र-छाया में ही अनुष्ठान करें।
11. साफ-स्वच्छ, धुले हुए वस्त्रों का उपयोग करें।
12. तेल, सुगन्ध, साबुन, पाउडर आदि का उपयोग न करें।
13. अकेले एकांत में ही साधना करें।
14. अपने पास प्रत्येक साधना समय में असली धूप का ही उपयोग करें।
15. साधना काल में शुद्ध देसी घी का अखण्ड दीपक जलायें।
16. साधना के समय जल का लोटा अपने पास रखें।
17. साधना एक नियत समय पर ही करें।
18. पुस्तक में वर्णित मंत्रों का विधि-पूर्वक जप करें।
19. साधना में बताए गये अनुष्ठान के दिनों तक बिना नागा किये प्रतिदिन जप अवश्य करें।
20. साधना आरम्भ से पूर्व मंत्र को कण्ठस्थ करके जप करें।
21. जप के समय जल का जो पात्र समीप में रखे हों, उस पात्र का जल 24 घण्टे बाद किसी वृक्ष पर चढ़ा दें।
22. जप के समय क्रोध, लड़ाई, चिंता आदि से बचें।
23. जप काल में झूठ का त्याग अवश्य करें।
24. साधना काल में धूम्रपान या कोई अन्य नशा आदि न करें।
25. साधना शान्त, नियत स्थान पर एकांत में ही करें।
26. साधना वाले दिनों में मौन धारण करें।

27. साधना समय में जिस मंत्र का जप कर रहें हों, उस मंत्र के देवता की प्रतिमा या फोटो अवश्य सामने स्थापित करें।
28. जप शुरु करने से पहलें अपनी रक्षा अवश्य करें।
29. जप साधना में असली शुद्ध सामग्री का ही उपयोग करें।
30. जप काल में भोग आदि सामग्री, फल-फूल, मिठाई आदि ताजा एवं शुद्ध होनी चाहिए।
31. साधना काल में साधक अपने वस्त्र, जूठे बर्तन आदि स्वयं साफ करें।
32. साधक साधना में उपयोग की सामग्री (नैवेद्य, भोग) तथा अपना भोजन स्वयं तैयार करें।
33. साधना रात्रि के शान्त वातावरण में करें।
34. साधक, अनुष्ठान, जप के बाद भी नियमित मंत्र जप करते रहें।

सिद्धि कर्म

इस अध्याय में श्री भैरव जी की सिद्धि के लिए मंत्र तथा विधि प्रस्तुत किये गये है।

श्री भैरव जी के प्रत्यक्ष दर्शन का

॥ मन्त्र ॥

ॐ रिं रिक्तिया भैरो दर्शयस्वाहा।
ॐ क्रं-क्रं-काल प्रकटय-प्रकटय स्वाहा।
रिं रिक्तिया भैरऊ रक्त जटां दर्शे।
वर्षे रक्त-घटा आदि-शक्ति।
सब मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र सिद्धि-परायण रह-रह।
रुद्र, रह-रह, विष्णु रह-रह, ब्रह्म रह-रह।
बेताल रह-रह, कंकाल रह-रह, रं रण-रण-
रिक्तिया सब भक्षण हुं, फुरो मन्त्र।
महेश वाचा की आज्ञा फट कंकाल-
माई को आज्ञा, ॐ हुं चौहरिया वीर-
माहो, शत्रु ताहो भक्ष्य, मैदि आतू चूरि-
फारि, तो क्रोधाश भैरव फारि-तोरि डारै।
फुरो मन्त्र, कंकाल-चण्डी का आज्ञा।
रिं रिक्तिया संहार-कर्म कर्ता महा-संहार-पुत्र।
"अमुंक" गृहण-गृहण, भक्ष-भक्ष, हुं। मोहिनी-
मोहिनी बोलसि, माई मोहिनी। मेरे चउआन-
के डारउ माई। मोहूँ सगरो गाँउ। राजा-
मोहु, प्रजा मोहु, मोहु मन्दं गहिग। मोहिनि-
जाहि, माथ नवइ। पाहि सिद्ध गुरु के वन्द-
पाइ, जस दे कालि का माई।

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की सिद्धि के लिए पूर्व वर्णित मन्त्र की विधि का अवलोकन कर श्री भैरव विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए अनुष्ठान सम्पन्न करें। इसके सिद्धि से साधक की सर्व-मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं, तथा श्री भैरव कृपा हमेशा बनी रहती है। इस मन्त्र से झाड़ा करने पर सभी व्याधियों का नाश होता है।

कामना पूरक श्री भैरव

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो भैरुँनाथ।
काली का पुत्र!
हाजिर होके-
तुम मेरा कारज करो तुरंत।
कमर बिराजे मस्तंगा लँगोट।
घूँघर-माल, हाथ बिराजे डमरू
खप्पर-त्रिशूल, मस्तक-
बिराजे तिलक सिन्दूर।
शीश बिराजे जटा-जूट।
गल बिराजे नोद जनेऊ।
ॐ नमो भैरुँनाथ।
काली का पुत्र! हाजिर-
होके तुम मेरा कारज करो
तुरन्त। नित उठ करो-
आदेश-आदेश॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान 21 दिन का है, भैरव विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए किसी भी शनिवार से भैरव जी का पन्चोपचार से पूजन कर, भोग में गुड़ व तेल का शीरा तथा दही–बड़े, मद्य–मांस रखकर प्रतिदिन 1 माला जप करें, जपांत में भोग–सामग्री को काले कुत्ते को खिलावें तो यह सिद्ध होगा। इसके प्रयोग से भैरव जी की कृपा से सभी कार्यों में सफलता मिलती है, और साधक पर हमेशा भैरव कृपा बनी रहती है।

नोट– इस मन्त्र के जप में महाशंख मणियों की माला ही का उपयोग करें।

समस्त कार्य की सिद्धि का भैरव

॥ मन्त्र ॥

ॐ ह्रीं महा-काल।

भैरवाय नमः॥

ॐ ह्रीं महा-।

विक्राल-भैरवाय नमः॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान ग्रहण–काल में, श्री भैरव विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए 11 माला जप व दशांश हवन, भोगादि देने से सिद्ध होगा, फिर प्रयोग के लिए किसी भी शनिवार की रात्रि को, सवा मुट्ठी चावल, हल्दी व मीठा डालकर बनाये। प्रातः रविवार को इन मीठे चावलों को एक सौ बार अभिमन्त्रित कर के छत पर या आँगन में रख दें, कुछ समय पश्चात् दो कौवे जब वह मीठा चावल खाने के समय आपस में लड़ेंगे तो उनमें से किसी का पंख गिरेगा। जब पंख गिरे तो उस समय आप उस पंख को उठाकर सुरक्षित रख लें और यात्रादि व किसी भी कठिन कार्यों के लिए अपने साथ में ले जाए, तो कार्य सिद्ध होगा। यदि पहले रविवार को इस तरह करने से पंख प्राप्त न हो तो पुनः विश्वास पूर्वक किसी अन्य रविवार को प्रयोग कर पंख प्राप्त कर लें।

मान-सम्मान प्राप्ति के लिए भैरव

॥ मन्त्र ॥

ॐ काला भैरूँ
कपिला केश
कानो कुण्डल
भगवा वेष।
तिर पतर लियो
हाथ, चौंसठ-
जोगिनियाँ खेले-
पास, आस माई।
पास माई, पास माई।
सीस माई सामने-
सामने गादी बैठे-
राजा, पीड़ो बैठे-
प्रजा मोहि, राजा-
को बनाऊँ कूकड़ा।
प्रजा को बनाऊँ गुलाम
शब्द साँचा, पिण्ड-
कांचा, राज गुरु का
वचन जुग-जुग साँचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की साधना 11 दिन की है, श्री भैरव विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए भैरव जी की मूर्ति या चित्र के समक्ष गुग्गुल की धूप देकर, भेंट रखकर प्रतिदिन 2 माला का जप करें 11 वें दिन दशांश हवन, भोग में, मद्य, मांस, लड्डू, दही बड़े, नारियल, बाकला सवा पाव, रोट सवा पाव, लाल कनेर के फूल अर्पित करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा। इसकी सिद्धि से साधक को प्रत्येक स्थान पर मान-सम्मान की प्राप्ति होती है। किसी भी स्थान पर जायें तो इसे जप कर जायें तथा सभा आदि में जप कर फूँक मार दें तो सभी जन साधक को इज्जत-सम्मान देते हैं।

श्री भैरव सिद्धि के लिए

॥ मन्त्र ॥

ॐ गुरु जी! काल-भैरूँ
कपला केश, कानों मुन्दरा
भगवा भेष, मार-मार-
काली-पुत्र, बारह कोस की
मार, भूतां हाथ कलेजी।
खूँहाँ गेडिया, जहाँ जाऊँ।
भैरूँ साथ, बारह कोस की-
ऋद्धि ल्यावो, चौबीस कोस
की सिद्धि ल्यावो, सूत्यो होय
तो जगाय ल्यावो, बैठ्या-
होय, तो उठाव ल्यावो।
अनन्त केसर को भारी ल्यावो।
गौराँ पार्वती की बिछिया ल्यावो।
गेले की रस्तान मोय।
कुवें की पानिहारी मोय, हटा
बैठ्या बणियाँ मोय, घर बैठी
बणियानी मोय, राजा की-
रजवाड़ मोय, महलाँ बैठी-
राणी मोय, डाकिनी को, साकिनी-
को, भूतणी को, पलीतणी को।
ओपरी को, पराई को लाग कूँ।
लपट कूँ, धूम कूँ, धमका कूँ।
अलीया को, पलीया को, चौड़-
को, चौगट को काचा को, कं-
लवा को, भूत को, पलींत को।

जिन को, राक्षस को, बैरियाँ-
से बरी करदे, नजराँ जड़ दे ताला॥
इत्तां भैरव नहीं करे, तो
पिता महादेव की जटा तोड़-
तागड़ी करे, माता पार्वती का-
चीर फाड़ लँगोट करे
चल-डाकिनी शकिनी
चौड़ूँ मैला बाकरा।
देस्यू मद की धार,
भरी सभा में, द्यूँ आने में-
कहाँ लगाई थी बार,
खप्पर मे खाय, मुसाण में
लोटे, ऐसे कुण काला भैरूँ-
की पूजा मेटे, राजा मेटे राज-
से जाय, प्रजा मेटे-दूध-पूत
से जाय, जोगी मेरे ध्यान से-
जाय, शब्द साचा, ब्रह्मवाचा।
चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की साधना 41 दिन की है, श्री भैरव विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए शनिवार की रात से साधना प्रारम्भ करें भैरव मन्दिर या त्रिकोन पत्थर को भैरव मान कर स्थापित करके उस के ऊपर तेल, सिन्दूर, पान चढ़ायें और नारियल रखें, प्रतिदिन साधना के समय सरसों के तेल का दीपक अखण्ड जलाए, छाड़–छड़ीला, कपूर–केशर लौंग की धूप दें, निश्चित समय पर मन्त्र की 1 माला जप करें, अंतिम दिन दशांश हवान करें, भैरव जी जब दर्शन दें तब डरे नहीं उनका स्वागत फूलों की माला पहना कर करें और लड्डू, बाटी–बाकला, पान–सुपारी, बकरे की कलेजी, शराब की बोतल समक्ष रख दें, इससे भैरव जी सिद्ध हो जाएंगे और साधक की सम्पूर्ण मनोकामनाएँ पूरी करेंगे। अगर दर्शन न हो तो मूर्ति के समक्ष सभी वस्तुएं अर्पण कर देवें, और साधना के दिनों में काले कुत्ते को भैरव प्रिय वस्तुओं को खिलाने से भैरव जी शीघ्र प्रसन्न होते हैं।

भैरव जी की सिद्धि के लिए

॥ मन्त्र ॥

ॐ आद भैरव, जुगाद भैरव।
भैरव है सब थाईं भैरों ब्रह्मा।
भैरों विष्णु, भैरों ही भोला साईं।
भैरों देवी, भैरों सब देवता।
भैरों सिद्धि भैरों नाथ भैरों गुरु।
भैरों पीर, भैरों ज्ञान, भैरों ध्यान
भैरों योग-वैराग,भैरों बिन होय-
ना रक्षा, भैरों बिन बजे ना नाद।
काल भैरव, विकराल भैरव।
घोर भैरों, अघोर-भैरों।
भैरों की महिमा अपरम्पार।
श्वेत वस्त्र, श्वेत जटाधारी।
हत्थ में मुगदर श्वान की सवारी।
सार की जंजीर, लोहे का कड़ा।
जहाँ सिमरूँ, भैरों बाबा हाजिर खड़ा।
चले मन्त्र, फुरे वाचा देखाँ-
आद भैरों! तेरे इल्मी चोट का तमाशा।

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की साधना 41 दिन की है, भैरव विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन भैरव–मन्दिर में 1 माला का जप, हवन, दही बड़े, मद्य, मांस का भोग देकर सिद्ध करें, फिर इस मन्त्र के प्रयोग से भैरव बाबा, साधक की सम्पूर्ण इच्छाओं को पूर्ण करते हैं। नित्य जप के समय सरसों के तेल का दीपक अखण्ड जलाना चाहिए।

श्री भैरव जी की सिद्धि के लिए

॥ मन्त्र ॥

ॐ गुरु, ॐ गुरु, ॐ गुरु, ॐ कार।
ॐ गुरु भू मसान, ॐ गुरु सत्य-
गुरु, सत्य नाम काल-भैरव।
कामरु जटा चार पहर खेले चौं-
पटा, बैठे नगर में, सुमरो तोय।
दृष्टि बाँध दे, सब को मोय, हनु-
मान बसे हथेली, भैरव बसे कपाल।
नरसिंह जी की मोहिनी, मोहे सकल-
संसार, भूत मोहूँ, प्रेत मोहूँ, जिन्न-
मोहूँ, मसान मोहूँ, घर का मोहूँ।
बाहर का मोहूँ, ब्रह्म-राक्षस मोहूँ।
कोढा मोहूँ, अघोरी मोहूँ, दूती मोहूँ।
दुमनी मोहूँ, नगर मोहूँ, घेरा मोहूँ।
जादू-टोना मोहूँ, डंकिनी-शंकिनी मोहूँ।
रात का बटोही मोहूँ, बाट का बटोही मोहूँ
पनघट की पनिहारी मोहूँ, इन्द्र का इन्द्रा-
सन मोहूँ, गद्दी बैठा राजा मोहूँ, गद्दी-
बैठा बणिया मोहूँ, आसन बैठा योगी
मोहूँ, और को देखे जले-भुने, मोय-
देख पायन परे, जो कोई काटे मेरा-
वाचा, अन्धाकार, लूला कर, सिडी-
बोरा कर, अग्नि में जलाये, धरी को
बताय दे, गढ़ी को बताय दे, हाथ को-
बताय दे, गाँव को बताय दे, खोए को
मिलाय दें, वाचा छोड़ कुवाचा चले, तो-
माता का चोखा दूध हराम करे।

हनुमत की आण, गुरुन को प्रणाम।
ब्रह्मा विष्णु साख भरे, उनको भी सलाम
लोना चमारी की आण
माता गौरा-पार्वती महा-
देव जी की आण, गुरु गोरख-
की आण, सीता रामचन्द्र की
आण, मेरी भक्ति, गरु की शक्ति।
गुरु के वचन से चले। तो-
मन्त्र ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान 41 दिन का है, साधक श्री भैरव विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए किसी भी शनिवार या रविवार से जप शुरु करें, भैरव मंदिर या किसी एकान्त स्थान में एक तीन कोने वाला पत्थर लेकर उसे भैरव मान कर स्थापित करें, और सरसों के तेल में काला रंग मिला कर लेप करें। पान, नारियल का भेंट चढ़ाकर प्रतिदिन एक माला इस मन्त्र की जपें, जप समय नित्य–अखण्ड दीपक सरसों के तेल का जलायें, जपांत में छाड़–छड़ीला, कपूर केशर और लौंग की आहुति नित्य दें, भोग में मांस, मदिरा, लड्डू, दही बड़े दें। जब भैरव देव दर्शन दें तो डरे नहीं भक्ति–पूर्वक प्रणाम करके उन्हें भोग की सामग्री अर्पित करें और उनसे प्रार्थना कर मनवांछित वर प्राप्त करें।

विष नाशक टोटका

1. नीम के पत्र को मसूर के साथ खाने से एक वर्ष तक किसी प्रकार के विष से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है।
2. इस नीम की जड़ को कमर में धारण किया जाये तो भूत की बाधा को यह दूर करती है।
3. वन्ध्याककेटिक (बाँस ककोड़े) को शुभ मुहूर्त और शुभ वार में सफेद सूत्र में बाँधकर, दाहिने हाथ में धारण करने से सभी प्रकार के विष का असर जाता रहता है।
4. अधिक परिमाण में नीम के ताजे पत्ते को उखाड़कर उसी के ऊपर रोगी को सुलाने से तेज विष, मद और खून के विकार मिट जाते हैं।
5. अंकोल की छड़ी जिसे 'ढेरा' या 'ढेला' भी कहते हैं और उसमें काँटे होते हैं, हमेशा हाथ में रखने से शरीर में विष का असर नहीं होता।

भैरव दर्शन का सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

ॐ काली-कंकाली
महाकाली के पुत्र
कंकाल भैरव हुकुम हाजिर रहे।
मेरा भेजा रक्षा करे
आन बाँधूँ, बान बाँधूँ
फूल में भेजूँ फूल में जाँय
कोठे जी पड़े थर-थर कांपे
हल-हल-हले।
गिरि-गिरि-परे।
उठि-उठि-भगे।
बक-बक-बके।
मेरा भेजा सवा घड़ी।
पहर-सवा, दिन-सवा।
मास-सवा, सवा-बरस-
को बावला न करे।
तो माता काली की शय्या-
पे पग धरे, वाचा चूके तो-
उमा सूखै, वाचा छोड़-
कुवाचा करै।
धोबी की नाँद
चमार के कूँडे में पड़ै।
मेरा भेजा बावला न करे
तो रुद्र के नेत्र से आग-
की ज्वाला कढ़ै।
सिर की जटा टूट भूमि में गिरे।

माता पार्वती के चीर पे चोट पड़े।
बिना हुकुम नहीं मारना
हे काली के पुत्र कंकाल भैरव
फुरे मन्त्र, ईश्वरो वाचा
सत्य-नाम आदेश गुरु जी का।

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की सिद्धि भी, पूर्व वर्णित मन्त्र के विधि-विधानुसार कर सिद्ध करें। इसके भी जप से श्री भैरव जी प्रकट होकर दर्शन देकर साधक की मनोकामनाएँ पूरी करते हैं।

जहर नाशक टोटका

1. जिसे बर्रे ने काटा हो उसके काटे हुए स्थान पर बर्रे के छत्ते की मिट्टी पीस जल के साथ लेप लगा देने से जहर मिटता तथा जलन शान्त होती है।
2. जिसे बर्रे के काटने से तकलीफ हो रही हो उसे सात सुतिही शुद्ध शहद पिला दें और उससे 1 से 200 तक गिनती गिनवायें तो बर्रे का जहर मिटता, दाह और दाग भी समाप्त हो जाते हैं।

रक्त नाशक टोटके

1. यदि रक्त प्रदर के कारण स्त्री के अधिक रक्त निकले और साथ-साथ दाह भी हो तो बैठाकर उसके सिर पर मिट्टी के घड़े में बासी पानी थोड़ी देर तक स्थापित करें। इससे दाह और तीव्र रक्तस्राव तुरंत रुक जायेगा।
2. स्त्री की कमर में फरहद की जड़ बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
3. काकजंघा की जड़ को कमर में धारण करने से आसानी से बच्चा पैदा हो जाता है।
4. नीम के पेड़ पर उत्पन्न बांदे की जड़ को कमर में बांधने से सुख से प्रसव होता है।

श्री भैरव जी की सिद्धि के लिए

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरु जी का
काला भैरव, काला केश
कानों मुँदरा, भगवा भेष
मार-मार काली पुत्र-
बारह कोश की मार
भूताँ हाथ कलेजी खूंहा
गेड़िया जहाँ जाऊँ भैरो साथ
बारह कोस की ऋद्धि लाओ
चौबीस कोस की सिद्धि लाओ
सोती होय जगाय लाओ
बैठी होय उठाय लाओ
अनन्त केशर की भारी लाओ
गौरा-पार्वती की बिछिया लाओ
गेल्यां की रस्सतान मोह
कुएँ बैठी पणिहारी मोह
गद्दी बैठा बनिया मोह
गृह बैठी बणियानी मोह
राजा की रजवाड़िन मोह
महलों बैठी रानी मोह
डाकिनी को, शाकिनी को।
भूतिनी को पलीतनी को
औपरी को, पराई को।
लाग को, लपटाई को।
धूम को, धक्का को।
पलीया को, चौड़ को।
चुगाट को, काचा को।

कलवा को, भूत को।
पलीत को, जिन को।
राक्षस को, बैरिनो से-
बरी करदे।
नजरों जड़ दे ताला।
इत्तां भैरव न करे तो-
पिता-महादेव की जटा-
तोड़ तागड़ी करे।
माता-पार्वती का चीर
फाड़ लंगोट करे।
चल डाकिनी शाकिनी
चौडूं मैला बाकरा
देऊँ मद की धार
भरी सभा में द्यूँ आने में-
कहाँ लगाई बार।
खप्पर में खाय मसान में लोटे
ऐसे काला भैरों की कुण पूजा मेटे।
राजा मेटे राज से जाये।
प्रजा मेटे-दूध-पूत से जाये
जोगी मेटे-ध्यान से जाये
शब्द सांचा, पिण्ड कांचा
फुरे मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान 41 दिन का है, श्री भैरव जी विषयक सभी नियमों का पालन करतेहुए एक काले रंग का त्रिभुजाकार पत्थर लेकर काले रंग और चमेली के तेल को मिलाकर उसे रंग दें, और किसी धरातल पर सीधा खड़ा कर दें। शनिवार की रात्रि में इसके सामने सरसों के तेल का अखण्ड दीपक जलायें। दो लौंग, एक नारियल तथा पान की पूजा रखें, मदिरा भी रखें। पुनः धूप जलाकर काले कुत्ते को खीर–हलुवा खिलायें और मंदिर में भैरव जी के दर्शन करें, यह क्रिया नित्य करते रहें तो भैरव जी शीघ्र ही दर्शन देंगे। दर्शन में भैरों जी को मांस–मदिरा का भोग दें और उनसे अपना इच्छित वर प्राप्त करें।

श्री भैरव जी की सिद्धि के लिए

॥ मन्त्र ॥

ॐ काली-कंकाली
महा-काली के पुत्र
कंकाल-भैरव!
हुक्म हाजिर रहे।
मेरा भेजा काल करे।
मेरा भेजा रक्षा करे।
आन बाँधू, बान बाँधू।
चलत-फिरते के औसान-
बाँधू, दसो स्वर बाँधू।
नव-नाड़ी, बहत्तर कोठा
बाँधूँ, फूल में भेजूँ।
फूल में जाय, कोठे जीव-
पड़े, थर-थर काँपे, हल-
हल-हलै, गिर-गिर पड़ै।
उठ-उठ भगे, बक-बक-
बकै, मेरा भेजा सवा घड़ी
सवा-पहर सवा दिन।
सवा-माह, सवा बरस
को बावला न करे, तो-
माता काली की शैया
पर पग धरे, वाचा चूके।
तो उमा सूखें, वाचा छोड़-
कुवाचा करे, तो धोबी-
की नाँद में, चमार के कूण्डे-
में पड़े, मेरा भेजा बावला-
न करें, तो रुद्र के नेत्र से-

अग्नि की ज्वाला कढ़ै, सिर-
की जटा टूट भूमें गिरै, माता-
पार्वती के चीर पर चोट पड़ै।
बिना हुक्म नहीं मारना हो।
काली के पुत्र? कंकाल-भैरव?
फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।
सत्य नाम, आदेश गुरु को॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान 41 दिन का है, श्री भैरव विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए सूर्यग्रहण की रात्रि या कालरात्रि से प्रारम्भ करें, त्रिखूटा (तीन कोने का) चौका बनाकर, दक्षिण की ओर मुँह करके, भोग सामग्री समक्ष रख कर प्रतिदिन 1 माला जप करें जप समय लाल कनेर के फूल, लड्डू, दही बड़े, मद्य, मांस, लौंग जोड़ा व सरसों के तेल का चौमुखा दीपक अखण्ड जलाकर रखें, अंतिमदिन हवन में शहद, दही बड़े, लड्डू, मांस आदि की दशांस आहुतियाँ दें, ऊपर से मद्य की धार देवें, जब भैरव जी दर्शन दें तो डरे नहीं। तत्काल फूलों की माला उनके गले में डाल कर लड्डू उनके आगे रखें, फिर उनसे इच्छित वरदान प्राप्त कर लें, दर्शन तो भाग्य वश ही होते हैं अगर दर्शन न हो तो निराश न हो तो मन एकाग्र कर जप करें, सभी कार्य भैरव कृपा से सिद्ध होंगे, फूलों की माला मुर्ति के गले में डाल कर लड्डू उस मूर्ति के समक्ष रख देवें।

श्री भैरव हवन

॥ मन्त्र ॥

ॐ हूं खों जं रं लं वं क्रों
एंहिं महाकाल भैरव
सर्व विघ्ननाशाय हीं
फट् स्वाहा।
ॐ भैरवनाथ जी नमः स्वाहा।
ॐ भूत विडारण नमः स्वाहा।
ॐ रुण्डमाल भैरव नमः स्वाहा।
ॐ क्षेत्रपाल भैरव नमः स्वाहा।
ॐ वावरा बिवराल भैरव नमः स्वाहा।
ॐ महाबली भैरव नमः स्वाहा।
ॐ अनन्त कोट सिद्धो के-
आज्ञावान भैरव नमः स्वाहा।
ॐ बनारस जी भैरव नमः स्वाहा।
ॐ कमल नाथ जी भैरव नमः स्वाहा।
ॐ बृजनाथ जी भैरव नमः स्वाहा।
ॐ कालसेन भैरव नमः स्वाहा।
ॐ बटुक भैरव नमो स्वाहा।

अष्ट भैरव

ॐ आदि अलील नाथ जी-
सुध-बुध भैरव नमः स्वाहा।
ॐ ईश्वर महादेव भैरव नमः स्वाहा।
ॐ दादा मत्स्येन्द्रनाथ भैरव नमः स्वाहा।
ॐ सिद्ध चौरंगीनाथ भैरव नमः स्वाहा।
ॐ सत्यनाम ब्रह्माजी भैरव नमः स्वाहा।
ॐ संतोषनाथ विष्णु जी भैरव नमः स्वाहा।
ॐ बासुकि नाग भैरव नमः स्वाहा।
ॐ गुरु गोरक्षनाथ भैरव नमः स्वाहा।

॥ विधि ॥

श्री भैरव जी की हवन करते समय इस मन्त्र का जाप करे।

श्री भैरव प्रसन्नता के लिए

॥ मन्त्र ॥

ॐ भैरों ऐंडी
भैरों मैंडी।
भैरों सबका दूत।
देवी का दूत
देवता का दूत।
गुरु का दूत।
पीर का दूत।
नाथों का दूत
पीरों का दूत
भैरों छड़िया कहाए।
जहाँ सिमरूँ तहाँ आए।
जहाँ भेजूँ, तहाँ जाए।
चले मन्त्र, फुरे वाचा।
देखूँ छड़िया भैरों।
तेरे इल्म का तमाशा।

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान 21 दिन का है, साधक श्री भैरव विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए श्मशान में भैरव के पूजनोपरान्त 10 माला का जप नित्य सात दिनों तक करें फिर सातवें दिन मद्य, मांस की आहुति दें फिर चौबाटे (चौराहे) में बैठकर 10 माला जप नित्य सात दिन करें, सातवें दिन दही बड़े, मद्य–मांस की आहुति दें, इसके बाद घर के एकान्त कमरे में सात दिन तक नित्य 10 माला का जप करें और सातवें दिन दही बड़े, बाकला–बाटी और मद्य–मांस की आहुतियाँ दें, इससे भैरव जी प्रसन्न होकर साधक की सभी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। इस मन्त्र का सदुपयोग सिर्फ जनता की भलाई के लिए ही करें किसी का गलत न करें नहीं असर उल्टी भी हो सकता है।

श्री भैरव जी का चोला

॥ मन्त्र ॥

सत नमो आदेश।
गुरु जी को आदेश।।
ॐ गुरु जी तुम।
भैरव, काली का पूता।।
सदा रहे मत वाला।
चढ़े तेल सिंदूर।।
गल फूलों की माला।
जिस किसी पर।।
संकट पड़े, जो सुमिरे।
तुम्हें उसकी रक्षा करें।।
तुम हो रक्षपाल
भरी कटोरी तेल की
धन्य तुम्हारा प्रताप
काल भैरव, अकाल-
भैरव, लाल भैरव,
जल भैरव, थल भैरव
बाल भैरव, आकाश
भैरव, क्षेत्रपाल भैरव
सदा रहो कृपाल
इतना चोला जाप
सम्पूर्ण भया, नाथ जी-
गुरु जी आदेश।

॥ विधि ॥

श्री भैरव जी को चोला चढ़ाते समय इस मन्त्र का जाप करे।

श्री भैरव जी का "खप्पर सिद्धि" हेतु

॥ मन्त्र ॥

सत नमो आदेश, गुरु जी को आदेश
ॐ गुरु जी, खप्पर धर्ती, खप्पर आकाश
खप्पर तीन लोक में करे निवास
पहिला खप्पर ॐकार का, दूसरा
खप्पर सिद्धो का, तीसरा खप्पर-
धर्ती सारी, चौथा खप्पर की ज्योति-
प्रकाश, कौन खप्पर आटे-घाटे
कौन खप्पर ब्रह्मा बाटे, कौन खप्पर
खाय खीर, कौन खप्पर उद्धारे शरीर
चान्दी खप्पर आटे-घाटे, सोना-
खप्पर ब्रह्मा बाटे, जहरी खप्पर खाय
खीर, मिट्टी खप्पर उद्धारे शरीर
खप्पर में खाय मसान में लेटे
काल भैरव की पूजा कौन मेटे।
राजा मेटे "राज"-पाट से जाय
योगी मेटे योग ध्यान से जाय
प्रजा मेटे दूध-पूत से जाय
काल भैरव कपले केश, गुरु
का बालका करता फिरे अलेष-
अलेष, काला, पीला, तोतला
तीनों रहे पाताल, मस्तक
बिन्दी सिन्दूर की, हनुमान भैरव
योद्धा करें रक्षपाल, नाथ जी
गुरु जी को आदेश। आदेश।

श्री भैरव डण्डा

॥ मन्त्र ॥

सत नमो आदेश
गुरु जी को आदेश
ॐगुरौ, ॐआद का धर्म
अपार ब्रह्म जोगी भैरव
नमो नमस्ते। दण्ड हा
खप्पर काल भैरव
गले माल रुण्ड-मुण्ड
निर्भय जोगी जंगल
फिरे श्मशान फिरे, फिरे-
सारे ब्रह्माण्ड। अनहद नाद
घूघर बोल, गुरु शब्द
गुरु ज्ञान, भरे संसार
झरे संसार, फिरे जोगी
अनभय काल।
दण्ड-दण्ड-महा दण्ड।
प्रथम दण्ड काल भैरव हाथ
भर खप्पर तेल सिन्दूर रक्षपाल
दूसरा दण्ड अकाल भैरव हाथ
भर खप्पर तेल सिन्दूर रक्षपाल
तीसरा दण्ड लाल भैरव हाथ,
भर खप्पर तेल सिन्दूर रक्षपाल
चौथा दण्ड जल भैरव हाथ
भर खप्पर तेल सिन्दूर रक्षपाल
पाँचवां दण्ड थल भैरव हाथ
भर खप्पर तेल सिन्दूर रक्षपाल
षष्ट में दण्ड बाल-भैरव हाथ
भर खप्पर तेल सिन्दूर रक्षपाल

सातवाँ दण्ड आकाश भैरव हाथ
भर खप्पर तेल सिन्दूर रक्षपाल
आठवाँ दण्ड क्षेत्रपाल भैरव हाथ
भर खप्पर तेल सिन्दूर रक्षपाल
येता अष्ट-भैरव सदा रहो कृपाल
दण्ड हमारा पिण्ड का प्राण
वज्र हो काया कर रक्षा काली
का पूत, आवे दण्ड जावे दण्ड
सो काल भागे बारा कोस
काल दण्ड शिर कंटक का फोड़
हम को रख्ख, दुष्ट को भख्ख
एता भैरव दण्ड मंत्र सम्पूर्ण भया
श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश-आदेश

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की विधि किसी योग्य गुरु से प्राप्त करे।

प्रसव कारक टोटका

1. बारहसींगे की सींग को कमर में धारण करने से शीघ्र प्रसव हो जाता है।
2. स्त्री के तलवे के नीचे गिद्ध का पंख बाँधने से प्रसव हो जाता है।
3. शरपुंखे की जड़ कमर में बाँधने से शीघ्र प्रसव हो जाता है।
4. लाल वस्त्र में सेंधानमक की डली बाँधकर स्त्री की बायीं ओर लटकाने से प्रसव की पीड़ा का निवारण और शीघ्र प्रसव हो जाता है।
5. यदि प्रसवकाल में मूढ़ गर्भ (अस्वाभाविक ढंग से बच्चे का निकलना या रुक जाना) हो जाये, तो ताजा शरपुंखे की जड़ को लाकर स्त्री के सिर के बाल में बाँध दें, तो सुखपूर्वक प्रसव हो जायेगा।

गर्भ-धारण के लिए

1. रोहिणी नक्षत्र में सफेद घुंघची का पौधा लेकर रोपण करें। जब वह बड़ा हो जाये तब ऋतुधर्म से शुद्ध होकर स्त्री उसकी तीन माशे जड़ को जल में घिसकर पी जाये, तो वह गर्भिणी हो जाती है।

श्री भैरव जी का ज्योत जगाने का सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

सत नमो आदेश
गुरु जी को आदेश
ॐ गुरु जी, ॐ सुयत
की ज्योत, पवन की
बाती पी पी पीवे तेल
जागे दिन-राती
बैठी धर्ती खटा आकाश
जोगन बैठी कंनजली
के पास, पाँच महेश्वर
आज्ञा करे तो भैरव
ज्योत का भया प्रकाश
श्री नाथ जी गुरु जी को
आदेश। आदेश

॥ विधि ॥

श्री भैरव जी की ज्योत जगाते समय इस मन्त्र का जाप करें।

गर्भ स्तम्भन के लिए टोटका

1. जिस स्त्री का गर्भ गिर जाता हो, तो कुसुम के फूल में रंगे कपड़े में एक साबूत करंजुए को बाँधकर उसे जब तक बच्चा पैदा न हो तब तक कमर में धारण किये रहना चाहिए।
2. कुमारी कन्या के हाथ से कते सूत से गर्भवती स्त्री के सिर से पैर तक नाप लें और इसे इक्कीस हिस्सों में कर मजबूत बँट दें। उसी सूत में काले धतूरे की जड़ को सात टुकड़े कर, पृथक् पृथक् सात गाँठों में बाँध दें। उसे गर्भवती स्त्री अपनी कमर में तब तक धारण करे, जब तक बच्चा पैदा न हो। इससे गर्भ की रक्षा होती है।

सर्व-कार्य सिद्धि दायक श्री भैरव

॥ जंजीरा ॥

ॐअस्य श्री बकुट-भैरव-स्तोत्रस्य
सप्त-ऋषिः ऋषय, मातृका-छन्दः
श्री बटुक-भैरवो देवता ममेप्सित-
सिद्धयर्थं जपे विनियोगः ॥

ॐकाल-भैरों, बटुक-भैरों
भूत-भैरों। महा-भैरव
महा-भय विनाशनं देवता-
सर्व-सिद्धिर्भवेत्। शोक-दुःख-
क्षय-करं निरंजनं, निराकारं-
नारायणं, भक्ति-पूर्णं त्वं महेशं।
सर्व-काम-सिद्धिर्भवेत्। काल-
भैरव, भूषण-वाहनं काल-हन्ता-
रुपं च, भैरव गुनी? महात्मनः-
योगिनां महा-देव-स्वरुपं। सर्व-
सिद्धयेत्। ॐकाल-भैरों, बटुक-
भैरों भूत-भैरों? महा-भैरव महा-
भय-विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत्॥

ॐ त्वं ज्ञानं, त्वं ध्यानं, त्वं योगं, त्वं तत्त्वं
त्वं बीजं, महात्मानं त्वं शक्तिः, शक्ति-धारणं
त्वं महादेव-स्वरुपं। सर्व-सिद्धिंभवेत्।
ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो।
महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता।
सर्व-सिद्धिंभवेत्॥
ॐ काल-भैरव? त्वं नागेश्वरं, नाग-हारं-

च त्वं, वन्दे परमेश्वरं। ब्रह्म-ज्ञानं, ब्रह्म-ध्यानं।
ब्रह्म-योगं, ब्रह्म-तत्वं, ब्रह्म-बीजं महात्मनः।
ॐ काल-भैरव, बटुक-भैरव,
भूत-भैरव? महा-भैरव, महा-
भूत-विनाशनं देवता। सर्व-
सिद्धिर्भवेत्॥

त्रिशूल-चक्र-गदा-पाणिं
शूल-पाणि पिनाक-धृक्।
ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो
भूत-भैरो? महा-भैरव।
महा-भय-विनाशनं देवता।
सर्व सिद्धिर्भवेत्॥

ॐ काल-भैरव? त्वं विना गन्धं
विना धूपं, विना दीपं, सर्व-शत्रु-
विनाशनं। सर्व सिद्धिर्भवेत्॥

विभूति-भूति-नाशाय, दुष्ट-क्षय-कारकं
महा-भैरवे नमः। सर्व-दुष्ट-विनाशनं-
सेवकं सर्व सिद्धिं कुरु। ॐ काल-भैरौ
बटुक-भैरो, भूत-भैरो? महा-भैरव
महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥

ॐ काल-भैरव? त्वं महा-ज्ञानी, महा-ध्यानी
महा-योगी, महा-बली, तपेश्वर? देहि में सिद्धिं
सर्वं। त्वं भैरवें भीम-नादं च नादनम्।
ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरों, भूत-भैरो?
महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता।
सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं। अमुकं मारय-मारय
उच्चाटय-उच्चाटय, मोहय-मोहय
वशं कुरु-कुरु। सर्वार्थकस्य
सिद्धि-रुपं त्वं महा-काल? काल-
भक्षणं महा-देव-स्वरुपं त्वं। सर्व सिद्धयेत?
ॐकाल-भैरौ, बटुक-भैरो
भूत-भैरो? महा-भैरव, महा-भय-
विना शनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत्॥
ॐ काल-भैरव? त्वं गोविन्द, गोकुला नन्द।
गोपालं, गोवर्धनं धारणं त्वं। वन्दे परमेश्वरं।
नारायणँ नमस्कृत्य, त्वं धाम-शिव-रुपं च।
साधकं सर्व सिद्धयेत्। ॐकाल-भैरो, बटुक
भैरो, भूत-भैरो? महा-भैरव महा-भय-
विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥

ॐ काल-भैरव? त्वं राम-लक्ष्मणं, त्वं श्रीपति-
सुन्दरं, त्वं गरुड़ वाहनं, त्वं शत्रु-हन्ता च।
त्वं यमस्य रुपम्। सर्व-कार्य-सिद्धिं कुरु।
ॐ काल-भैरव, बटुक-भैरो, भूत-भैरव?
महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता।
सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥
ॐ काल-भैरव? त्वं ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरं
त्वं जगत्-कारणं, सृष्टि स्थिति-संहार-कारकं
रक्त-बीजं, महा-सैन्यं, महा-विद्या, महा-
भय-विनाशनम्। ॐकाल-भैरो, बटुक-
भैरो, भूत-भैरो? महा-भैरव महा-भय-
विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥
ॐकाल-भैरव। त्वं आहार मद्य, मासं, च,
सर्व-दुष्ट-विनाशनं, साधकं सर्व-सिद्धि-प्रदा॥
ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं अघोर-अघोर
महा-अघोर, सर्व-अघोर, भैरव-काल?

ॐकाल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-
भैरो? महा-भैरव महा-भय-विना-
शनं देवता। सर्व-सिद्धिभर्वेत्॥

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं। ॐ आं क्लीं क्लीं क्लीं।
ॐ आं क्रीं क्रीं क्रीं। ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं, रुं रुं रुं।
क्रूं क्रूं क्रूं। मोहन? सर्व-सिद्धिं कुरु-कुरु।
ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं। अमुकं उच्चाटय-उच्चाटय।
मारय-मारय। प्रूं प्रूं, प्रें प्रें, खं खं, दुष्टान्
हन्-हन्। अमुकं फट् स्वाहा। ॐ काल-भैरो।
बटुक-भैरो, भूत-भैरो? महा-भैरव महा-
भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥

ॐ बटुक-बटुक योगं च बटुक नाथ महेश्वरः।
बटुकं वट-वृक्षै बटुकं प्रत्यक्ष सिद्धयेत्। ॐ
काल-भैरो, बटुक-भैरो भूत-भैरो? महा-
भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-
सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल-भैरव, श्मशान-भैरव, काल-रुप
काल-भैरव? मेरो वैरी तेरो आहार रे।
काढ़ि करेजा चखन करो कट-कट।
ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो।
महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता।
सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥

ॐनमों हंकारी वीर ज्वाला-मुखी? तूं दुष्टन-
बध करो। बिना अपराध जो मोहिं सतावे,
तेकर करेजा छिदि परै, मुख-चाट लोहू आवे।
को जाने ? चन्द्र, सूर्य जाने की
आदि-पुरुष जाने. काम रुप-

कामाक्षा देवी। त्रि-वाच्या सत्य
फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा
ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो
भूत-भैरो। महा-भैरव, महा-
भय-विनाशनं देवता। सर्व-
सिद्धिर्भवेत्॥

ॐकाल-भैरव! त्वं डाकिनी
शाकिनी, भूत पिशाचश्च। सर्व-
दुष्ट-निवारणं कुरु-कुरु, साधकानां
रक्ष-रक्ष। देहिं में हृदये सर्व-सिद्धिम्।
त्व भैरव-भैरवीभ्यो, त्वं महा-भय-
विनाशनं कुरु। ॐ काल-भैरव,
बटुक-भैरो, भूत-भैरो! महा-भैरव
महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-
सिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं। पच्छिम दिशा में सोने का मठ
सोने का किवाड़, सोने का ताला, सोने की
कुंजी, सोने का घण्टा, सोने की साँकुली।
पहली साँकुली अठारह कुल-नाग के बाँधों।
दूसरी साँकुली अठारह कुल-जाति के बाँधों।
तीसरी साँकुली वैरि-दुष्टन के बाँधों।
चौथी साँकुली डाकिनी-शाकिनी के बाँधों।
पाँचवीं साँकुली भूत-प्रेत के बाँधों।
जरती अगिन बाँधों, जरता मसान बाँधों।
जल बाँधों, थल बाँधो, बाँधों अम्मर ताई।
जहाँ तहाँ जाई। जेहि बाँधि मगावों, तेहिं-
का बाँधि लाओ। वाचा चूकै, उमा सूखै।
श्री बावन वीर ले जाये, सात समुंदर तीर।
त्रिवाचा फुरोमन्त्र, ईश्वरी वाचा।

ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो।
महा-भैरव, महा-भय-विनाशनं-
देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥

ॐ आं ह्रीं। उत्तर दिशा में रुपे का मठ।
रुपे का किवार, रुपे का ताला, रुपे
की कुंजी रुपे का घन्टा, रुपे की साँकुली।
पहिलि साँकुली अठारह कुल नाग बाँधों।
दूसरी साँकुली अठाहरह कुल जाति को बाँधों।
तीसरी साँकुली बैरि-दुश्मन को बाँधों।
चौथी साँकुली डाकिनी-शाकिनी को बाँधों।
पाँचवीं साँकुली भूत-प्रेत को बाँधों?
जलत अगिन बाँधों, जलत मसान बाँधों।
जल बाँधों, थल बाँधों, बाँधों अम्मर ताई।
जहाँ भेजूँ, तहाँ जाई। जेहिं बाँधि मँगावों
तेहि का बाँधि लाओ, वाचा चूकै, उमा सूखें।
श्री बावन वीर ले जाय, समुन्दर तीर। त्रिवाचा।
फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ॐ काल-भैरो,
बटुक-भैरों, भूत-भैरो? महा-भैरव।
महा-भय विनाशनं देवता, सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥
ॐ आं ह्रीं। पूरब दिशा में तामे का मठ
तामे का किवार, तामे का ताला, तामे की कुंजी
तामे का घंटा, तामे की साँकुली। पहली
साँकुली अठारह कुल-नाग को बाँधू
दूसरी साँकुली अठारह कुल-जाति को बाँधूँ।
तीसरी साँकुली वैरि-दुष्टन को बाँधूँ।
चौथी साँकुली डाकिनी-शाकिनी को बाँधूँ
पाँचवीं साँकुली भूत-प्रेत को बाँधूँ।
जलत अगिन बाँधू, जलत मसान बाँधू।
जल बाँधों थल बाँधों, बाँधों अम्मर ताई।
जहाँ भेजूँ, तहाँ जाई। जेहिं बाँधि मगावों।
वाचा चूके, उमा सूखै श्री बावन-

वीर लेजाये सात समुन्दर तीर।
त्रिवाचा फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।
ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-
भैरव। महा-भैरव महा-भय-
विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥

ॐ आं ह्रीं। दक्षिण दिशा में अस्थि
का मठ, अस्थि का किवार अस्थि-
का ताला, अस्थि की कुंजी, अस्थि-
का घण्टा, अस्थि की साँकुली।
पहली साँकुली अठारह कुल-नाग-
को बाँधों, दूसरी साँकुली अठारह-
कुल जाति को बाँधों, तीसरी साँकुली-
वैरि-दुष्टन को बाँधों, चौथी साँकुली-
डाकिनी-शाकिनी को बाँधों।
पाँचवीं साँकुली भूत-प्रेत को बाँधों।
जलत अगिन बाँधों, जलत मसान-
बाँधों, जल बाँधों, थल-बाँधों,
बाँधों अम्मरताई। जहाँ भेजूँ तहाँ-
जाई। जेहि बाँधि मगावों, तेहि का
बाँधि लाओ। वाचा चूकै, उमा सूखै
श्री बावन वीर ले जाय सात समन्दर
तीर। त्रिवाचा फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा
ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो।
महा-भैरव महा-भय-विनाशनं-
देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत्॥

ॐ काल-भैरव! त्वं आकाशं, त्वं पातालं।
त्वं मृत्यु-लोकं। चतुर्भुजं, चतुर्मुखं।
चतुर्बाहुं, शत्रु-हन्ता च त्वं भैरव! भक्ति-
पूर्ण कलेवरम्। ॐकाल-भैरो, बटुक-भैरो
भूत-भैरो! महा-भैरो महा-भय-विनाशनं-

देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥
ॐ काल-भैरव त्वं। वाचा चूकै
उमा सूखै, दुश्मन मरे अपने घर में।
दुहाई काल-भैरव की। जो मोर वचन-
झूठा होय, तो ब्रह्मा के कपाल फूटै
शिव जी के तीनों नेत्र फूटै, मेरी भक्ति
गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा
ॐ काल-भैरव-बटुक भैरव, भूत-
भैरव! महा-भैरव, महा-भय-विनाशनं
देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्॥

ॐ काल-भैरवं! त्वं ज्ञानी, त्वंध्यानी
त्वं योगी, त्वं जंगम स्थावरं त्व
सेवित सर्व-काम-सिद्धिभवेत्। ॐ
काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो!
महा-भैरव महा-भय विनाशनं देवता।
सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

ॐ काल-भैरव! तुम जहाँ जाहु।
जहाँ दुश्मन बैठ होय, तो बैठे को-
मारो। चलत होय, तो चलते को मारो।
सोवत होय, तो सोते को मारो। पूजा-
करत होय, तो पूजा में मारो। जहाँ-
होय, तहाँ मारो। व्याघ्र लै भैरव, दुष्ट-
को भक्षौ। सर्प ले भैरव! दुष्ट को
डँसो। खड्ग से मारो, भैरव! दुष्ट को।
शिर गिरैवान से मारो, दुष्टन करेजा-
फटै। त्रिशुल से मारो, शत्रु छिदि परै
मुख वाट लोहू आवे। को जाने ? चन्द्र
सूरज जाने की आदि-पुरुष जाने।
काम-रूप कामाक्षा देवी। त्रिवाचा
सत्य फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो!
महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता।
सर्व-सिद्धिर्भवेत्।
ॐ काल-भैरव! त्वं वन्दे-
परमेश्वरं, ब्रह्म-रुपं,
प्रसन्नो भव। गुनि, महा-
त्मानां महा-देव-स्वरुपं
सर्व-सिद्धिर्भवेत्।
ॐ काल-भैरव! त्वं
भूतस्य भूत-नाथश्च।
भूतात्मा भूत-भावनः।
त्वं भैरव, सर्व-सिद्धिं
कुरु-कुरु। ॐ काल-भैरो
बटुक-भैरो, भूत-भैरो।
महा-भैरव महा-भय-
विनाशनं देवता। सर्व-
सिद्धिर्भवेत्।

॥ विधि ॥

इस जंजीरे की सिद्धि के लिए किसी पर्व काल में या ग्रहण काल में श्री भैरव जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए जप व हवन करें, तथा इसका नित्य प्रतिदिन एक बार जप करने से साधक की सभी मनोकामनाएँ भैरव कृपा से पूरी होती हैं।

प्रसूता कष्ट नाशक सिद्ध टोटका

1. स्त्री के बायें हाथ में मिकनातीस पत्थर रखा रहने से प्रसूता के कष्ट मिटते हैं।
2. साँप की केंचुल को स्त्री के नितम्ब प्रदेश पर बाँध देने से प्रसव–काल का कष्ट मिट जाता है।

गर्भ नाशक सिद्ध टोटका

1. पुष्य नक्षत्र में उखाड़कर लाये हुए काले धतूरे के फूल को नारी अपनी कमर में कसकर बाँध ले और फिर पुरुष समागम करे, तो कदापि गर्भ धारण न हो।
2. जिस लड़के के दूध के दाँत पहले–पहले गिरें उसे भूमि में न गिरने देकर हाथ में ही ले लें और चाँदी में मढ़वाकर भुजा में बाँधें तो गर्भ का निरोध होता है।

सर्व-कार्य सिद्धि दाता भैरव

॥ मन्त्र ॥

ॐ गुरु जी।
काल-भैरव।
काली लट हाथ।
फरसी साथ।
नगरी करहुँ प्रवेश।
नगरी की करो बकरी।
राजा को करो-
बिलाई, जो कोई-
मेरा जोग भंग करै।
बाबा कृष्ण नाथ
की दुहाई।

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की साधना होली, दीपावली या अमावस्या को श्री भैरव विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए 11 माला जप व दशांश हवन, भोगादि रख कर करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर जब किसी ग्राम या नगर में किसी विशेष काम से जाएं तो उस नगर या गाँव में प्रवेश करते ही 21 बार मन्त्र–जप कर फूँक मार कर प्रवेश करें, तो सभी कार्य अवश्य पूर्ण होंगे।

गर्भ दाता सिद्ध टोटका

1. यदि ऋतुस्नान के पश्चात् कुमारी कन्या के हाथ से काकमाची की जड़ से निचोड़े रस को, अधिक परिमाण में पुष्य नक्षत्र में नारी पान करती है, तो उसे ठीक से गर्भ धारण हो जाता है।
2. यदि गर्भ को इच्छावाली नारी पीपल के बंदाक को दूध में पकाकर सेवन करती है, तो उसे गर्भ की स्थिति हो जाती है। यह कार्य ऋतु से शुद्ध होने पर सोलह दिनों तक करना चाहिए।
3. पुष्य नक्षत्र में असगन्ध की जड़ को उखाड़ दूध के साथ पीसकर पीने से और दूध का ही आहार करते रहने से स्त्री पुत्ररत्न को प्राप्त करती है। यह कार्य ऋतुधर्म से शुद्ध होने पर करना चाहिए।

सर्व-मनोकामना पूरक भैरव

॥ मन्त्र ॥

ॐ काली-कंकाली
महा-काली के पुत्र-
कंकाल-भैरूँ।
हुकुम हाजिर रहे।
मेरा भेजा काल करे।
मेरा भेजा रक्षा करे।
आन बाँधू, वान बाँधूँ
चलते-फिरते औसान बाँधूँ
दसो सुर बाँधूँ, नौ नाड़ी-
बहत्तर कोठा बाँधूँ।
फूल में भेजूँ, फूल में जाय।
कोठे जो पड़े, थर-थर काँपे।
हल-हल-हले, गिर-गिर पड़े।
उठ-उठ भागे, बक-बक बके।
मेरा भेजा सवा घड़ी, सवा पहर।
सवा दिन, सवा मास, सवा-
बरस कूँ बावला न करे, तो-
माता काली की शय्या पर पग धरे।
वाचा चूके, तो उमा सूखे।
वाचा छोड़, कुवाचा करे, तो
धोबी की नांद-चमार के-
कुण्ड में पड़े।
मेरा भेजा बावला न करे।
तो रुद्र के नेत्र की ज्वाला कढे।
शिर को लटा टूटि भूमि में गिरे।

माता पार्वती के चीर पर चोट पड़े।
बिना हुकुम नहीं मारना हो
तो काली के पुत्र कंकाल-भैरूं।
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥
सत्य नाम आदेश गुरु जी का॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान दीपावली अथवा ग्रहण काल में श्री भैरव जी विषयक नियमों का पालन करते हुए चौमुखा दीपक जलाए, त्रिकोण (Δ) चौका लगाकर दक्षिण की ओर मुख करके बैठें। जप समय काली–कनेर के फूल, लड्डू, लौंग–जोड़ा, मांस, मदिरा और पुष्प–माला अपने समक्ष रख कर इस मंत्र की 11 माला का जप करें एवं दशांश हवन करें तो यह मन्त्र सिद्धि हो जाएगा। आवश्यकता के वक्त श्री भैरव जी से प्रार्थना करें तो मनोकामनाएँ पूर्ण होगी।

यंत्र–मंत्र–तंत्र सिद्ध करने के लिए किसी भी तांत्रिक या पहुँचे हुए व्यक्ति की सलाह अवश्य लें। अन्यथा फायदे की जगह आपको नुक्सान हो सकता है।

गर्भ धारण के निमित्त

1. जिस दिन स्त्री ऋतुस्नान से शुद्ध हो उसके एक दिन पूर्व सांयकाल में पलाश के वृक्ष के नीचे जाकर एक तांबे का पैसा और एक सुपारी रख न्योता दे और मन ही मन कहे कि प्रातःकाल एक पत्ता पुत्रार्थ लूँगी। दूसरे दिन सूर्योदय से पूर्व ही जाकर एक मुलायम पत्ता तोड़ ले और उसे काली गौं के ताजे दूध से पीस और दूध ही में मिला पी जाये तो इससे सर्वगुण सम्पन्न, सुन्दर और बलवान पुत्र उत्पन्न होगा।
2. जो स्त्री ऋतुस्नान से एक दिन पूर्व शिवलिंगी लता की जड़ में सुपारी और पैसे से न्योता दे आये और दूसरे दिन सूर्योदय से पूर्व ही जाकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करे कि 'हे संसार–वैद्य! इस सन्तानहीन की चिकित्सा आप ही करें। पुत्र से शून्य इस घर को उसके सुख की उज्जवलता से प्रकाशयुक्त करें' ऐसा कह शिवलिंगी लता की जड़ में अपने आँचल सहित दोनों हाथ फैला घुटने के बल बैठ जाय और सिर को लता की जड़ में स्पर्श करती हुई प्रणाम करे। फिर पाँच शिवलिंगी के पके लाल फल तोड़कर अपने आँचल में लपेटकर घर लौट आये। फिर काली गौ के दूध में उसे पीसकर तथा दूध में ही घोलकर पी जाये, तो वह पुत्र ही उत्पन्न करेगी।

श्री भैरव जी का नित्य-जप के लिए पाठ

॥ मन्त्र ॥

ॐ सत् नमो आदेश गुरु जी को आदेश।
ॐ गुरु जी। तुम भैरों काली का पूत
सदा रहे मतवाला, चढ़े तेल-सिंदूर।
गल फूलों की माला, जिस किसी पर-
संकट पड़े, जो सुमिरे तुम्हें उसकी-
रक्षा करें, तुम हो रक्ष-पालं। भरी-
कटोरी तेल की, धन्य तुम्हारा
प्रताप, काल-भैरो अकाल-भैरों।
लाल-भैरों, जल-भैरों, थल-भैरों।
बाल-भैरों, आकाश-भैरो, क्षेत्रपाल-
भैरो, सदा रहो कृपाल भैरो चोला-
जाप सम्पूर्ण भया, नाथ जी, गुरु जी-
आदेश-आदेश-आदेश॥

॥ विधि ॥

इसका नित्यदिन जाप करने से जपकर्ता के ऊपर श्री भैरव जी की असीम कृपा बनी रहती है, परन्तु इस जप का लाभ सिर्फ उन्हीं को होगा जिनके इष्ट श्री भैरव जी होंगे।

लू से बचने के लिए

रक्त पलांडु (लाल प्याज) को काटकर अपने पास रखने से ग्रीष्म ऋतु में लू लगने का भय जाता रहता है।

अग्नि-प्रकोप से रक्षार्थ

गाँव में जिस समय आग लग जाये उस वक्त तुलसी–चौरे में जल डालने से अग्नि–प्रकोप के भय से रक्षा होती है।

श्री भैरव जी के द्वादश नाम

॥ पाठ ॥

काल - भैरो
बटुक - भैरो
ब्रह्म - भैरो प्रगामिनि
नृसिंह - भैरो महा-प्रेतः
दूध - भैरो प्रजन्ततः
भूत - भैरो भद्र चंच
कोट - भैरो महा धनम्
रुद्र - भैरो महा-प्रेतः
त्रिनेत्रे च जटा-धरम्
वैताल - भैरो महा.प्रेतः
रक्त-वीजम् महेश्वरः
सम्बोध-भैरो महाऽऽकारम्।
त्रिशूल रण धारणम्।
भूत-प्रेत-पिशाचादि-
सर्व-शंका-निवारणम्।

॥ विधि ॥

इस पाठ का नित्य जाप करने से साधक का सर्व–बाधाओं का नाश होता है और श्री भैरव जी की कृपा साधक पर हमेशा बनी रहती है।

रक्तविकार और खुजली में

जिसे अधिक खुजली हो और रक्तविकार से शरीर सूख रहा हो, तो नित्य प्रातःकाल स्नान कर पियावांसा (कट सरैया) के पीले फूलों की माला अपनी गर्दन में धारण करें।

समस्त कार्य की सिद्धि का भैरव

॥ मन्त्र ॥

भैरों उचके
भैरों कूदे
भैरों सों
मचावै।
(मेरा कहना
ना करे) तो
कालिका का-
पूत न कहावै
शब्द-साँचा
फुरो मन्त्र
ईश्वरी वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र के अनुष्ठान में श्री भैरव विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए होली की रात्रि में, सफ़ेद मिट्टी या लाल मिट्टी से चौंका बनाकर एरण्ड की सूखी लकड़ी तेल का हवन करें। जब लौ प्रज्जवलित हो तब उसी प्रज्जवित लौ को चमेली के फूलों की माला पहना दें। सिन्दूर, मद्य, मांस, दही बड़े, लड्डू, लौंग, पान आदि चढ़ा कर गुग्गल से हवन करें और 11 माला इस मन्त्र की जपें तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। फिर जब कोई कार्य सिद्ध करना हो तो जहां ''मेरा कहना ना करे'' लिखा है, उस स्थान पर ''मेरा''अमुक''कार्य ना करे'' कहें और श्री भैरव जी से प्रार्थना करें की मेरा अमुक कार्य पूर्ण करें।

सिद्ध टोटके

जिस गौ के फोड़े में कीड़े पड़ जायें उसके शरीर में लाल इन्द्रायण के फल को दोनों हाथों की तलहथियों से फोड़कर, फोड़े से कुछ ऊपर बाँध दें, तो उसके सभी कीड़े मर जायेंगे।

श्री भैरव जी का नित्य-जप के लिए

॥ पाठ ॥

सत नमो आदेश गुरु को आदेश
ॐ गुरु जी, चण्डी-चण्डी तो प्रचण्डी
अलावला फिरे नव-खण्डी।
तीर बाँधू, तलवार बाँधू, बीस-
कोस पर बाँधू वीर, चक्र ऊपर-
चक्र चले, भैरो बली के आगे-
धरे, छल चले, बल चले, तब-
जानवा काल-भैरों। तेरा रुप।
कौन भैरों ? आदि भैरो, युगादि-
भैरो, त्रिकाल भैरों, कामरु देश
रोला मचावे, हिन्दू का जाया, मुसल-
मान का मुर्दा फाड़-फाड़ बगाया।
जिस माता का दूध पिया, सो माता की
रक्षा करना, अवधूत खप्पर में खाय।
मसान में लेटे, काल-भैरों की पूजा-
कौन मेटे ? राजा मेटे राज-पाट से जाय
योगी मेटे, योग-ध्यान से जाय, प्रजा मेटे।
दूध-पूत से जाय, लेना भैरों, लौंग
सुपारी, कड़वा प्याला, भेंट तुम्हारी।
हाँथ काती मोढ़े मढ़ा, जहाँ सिमरूँ-
तहाँ हाजिर खड़ा। श्री नाथ जी, गुरु जी-
आदेश-आदेश॥

॥ विधि ॥

इस जंजीरे का नित्य जप करने से सभी कार्यों में सफलता मिलती है, इस जंजीरे का जप करते हुए झाड़ा करने से भूत–प्रेतादि बाधा से ग्रसित रोगी की बाधा दूर होती है। यह लाभ सिर्फ उन्हीं को होगा जिस साधक के श्री भैरव जी इष्ट होंगे।

सर्व-कार्य सिद्धि के लिए भैरव

॥ मन्त्र ॥

ॐ काला-भैरव।
काला बान।
हाथ खप्पर लिए
फिरे मसान।
मद्य-मछली का
भोजन करे
साँचा भैरव हाँकता-
चले। काली का लाडला।
भूतों का व्यापारी
डाकनी-शाकिनी
सौदागरी। झाड़-
झटक, पटक-पछाड़।
सर खुला मुख बला।
नहीं तो माता कालिका
का दूध हराम।
शब्द साँचा, पिण्ड काँचा।
चलो-भैरव।
ईश्वरो वाचा

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की साधना 40 दिन की है, श्री भैरव विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए साधक शुद्ध होकर किसी भी शनिवार से यह साधना प्रारम्भ करें, सर्वप्रथम एक मिट्टी के घड़े के ऊपरी हिस्से को तोड़कर, नीचे का जो आधा और ज्यादा भाग रहे, उस हिस्से में आग जलावे, उसके पास एक बाजू में सरसों के तेल का दीपक जलाकर रखें और दूसरे बाजू में गुग्गुल की धूप जलायें और उसके सामने मद्य, मांस (मछली के कबाब) का भोग रखकर इस मन्त्र की एक माला का जप करें जपांत में भोग को अग्नि में डाल देवें, प्रतिदिन भोग आदि देकर जप करते रहें प्रत्येक आठवें दिन ''भोग''–सामग्री का विशेष हवन अलग से किया करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा। फिर इसके बाद कार्य सिद्धि के लिए जप करने व भैरव प्रिय पदार्थों की भेंट देकर हवन करने से साधक की सम्पूर्ण कामनाएँ पूरी होती हैं।

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए माँ कालिका के सफल एवं सिद्ध शाबर मन्त्र

इस अध्याय में, सर्व-कार्य सिद्धि दायक, रोजगार-प्राप्ति, एवं सुख-समृद्धि दायक मन्त्र और इनके विधि-विधान को विशेष रुप में प्रस्तुत किया गया है।

माँ कालिका की कृपा पाने का सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

ॐ काली-काली।
महा-काली।।
इन्द्र की बेटी।
ब्रह्मा की साली।।
कूचेपान बजावे ताली।
चल काली।।
कलकत्ते वाली।
आल बाँधूँ-ताल बाँधूँ।।
और बाँधूँ तलैया।
शिव जी का मंदिर बाँधूँ।।
हनुमान जी की दुहैया।
शब्द साँचा।।
पिण्ड काँचा।
फुरे मन्त्र।।
ईश्वरो वाचा।।

॥ विधि ॥

इस मंत्र का अनुष्ठान 41 दिन का है, साधक नदी किनारे एकांत स्थान में घी का दीपक जलाकर सुगंधित धूप सुलगाकर मौसमी फल व मिठाई भेंट रखकर हर रोज दो माला जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा। जप करते समय जब कालिका प्रत्यक्ष दर्शन दें तब उस समय पान उल्टा और एक पान सीधा (चिकना भाग ऊपर) रखकर उस पर कपूर जला दें तथा साधक अपने दायें हाथ की अनामिका अंगुली की कुछ बूँद खून धरती पर टपका दें फिर मां कालिका से तीन वचन ले लें कि बुलाने पर हाजिर होना पड़ेगा, जो काम कहा जाय करना होगा तथा मुझे वरदान दो मैं सदा दुनिया की भलाई करुं व सदा आपके नाम का गुणगान करूँ।

माँ कालिका के दर्शन हेतु सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरु को
डण्ड-भुज-डण्ड प्रचण्ड
नो खण्ड प्रगट देवी
तुहि झुण्डन के झुण्ड
खगर दिखा खप्पर लियां
खड़ी कालका तागदड़े मस्तंग
तिलक मागर दे मस्तंग
चोला जरी का फागड़ दीफू
गले फुल माल, जय-जय-
जयन्त, जय आदि-शक्ति
जय कालका खपर-धनी
जय मचकुट छन्दनी देव
जय-जय महिरा, जय
मरदिनी, जय-जय चण्ड-
मुण्ड, भण्डासुर-खण्डनी।
जय रक्त-बीज बिडाल-बिहण्डनी।
जय निशुम्भ को दलनी।
जय शिव राजेश्वरी।
अमृत-यज्ञ धागी-धृट।
दृवड़-दृवड़नी, बड़ रवि-
डर-डरनी, ॐ-ॐ-ॐ॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का नित्य जो साधक 1 माला जप धूप दीप नैवेद्य विधि आदि से करता है, उसको माँ जगदम्बा कालिका के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं। इस मंत्र का जप, एकाग्रचित हो गुरु जी की आज्ञा से करने पर शीघ्र सिद्धि मिलती है।

रहस्यमयी कालिका सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

ओम कालिका खड्ग।
खप्पड़ लिये ठाडी॥
जोत तेरी है निराली।
पीती भर भर॥
रक्त पियाली।
करे भक्तों॥
की रखवाली।
न करे रक्षा तो॥
महाबली भैरव की दुहाई॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का नित्य जप करने से साधक की सभी समस्याओं का हल हो जाता है, इस मन्त्र को सिद्ध कर, उच्चारण करते हुए अपनी छाती पर फूँक मारने से सभी ओर से रक्षा होती है। इस मंत्र में अनेको रहस्य सिमटे हुए हैं जिनका अनुभव इस मन्त्र का नित्य जप कर प्राप्त करें।

बच्चे के अनामक रोगनाशार्थ टोटका

1. कोई भिक्षा माँगनेवाला साधु आये, तो उसे कुछ पैसे देकर उससे उससे एक कौड़ी खरीद लें। उस कौड़ी में पारा डालकर उसका मुख मोम से बन्द कर दें। अनामक से ग्रसित बालक के गले में पहना दें तो रोग धीरे-धीरे मिट जायेगा।
2. नील कमल के ताजे पत्ते पर अनामक रोग से पीड़ित बालक को सुलाने से रोग-मिट जाता है। एक सप्ताह या इससे भी अधिक समय तक करना चाहिए।

श्री भद्र काली का सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

ॐ सिंहादुत्थाय कोपाद्
धधङ्-धङ्-धडा धावमाना
भवानी शत्रुणां शस्त्र-पाते
ततङ्त्तङ्त्तङ्ग त्रोटयन्ती
शिरांसि तेषाँ रक्तं पिबन्ती
घुघुट्-घुट्-घुटा घोटयन्ती
पिशाचान् तृत्तास्तृप्ता हसन्ती
खखल्-खल्-खला
शाम्भवी वः पुनातु
उग्र-चण्डा प्रचण्डा च
चण्डोग्रा चण्ड-नायका
चण्डा चण्डवती चैव
चण्ड-रुपाति-चण्डिका

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का जप श्मशान या एकांत स्थान में रात्रि 12 बजे के बाद 41 दिन में सवा लाख जपे धूप–दीप नैवेद्य, मांस, मदिरा, बलि आदि का प्रबंध करके जप करें। जप के समय साधक अपनी रक्षा हेतु ''रक्षा मंत्र'' से घेरा बनाकर ही जप करें, जप का दशांश हवन, तर्पण, करें तो भद्र काली की साधक पर पूर्ण रुप से कृपा होती है। इस मंत्र का जप गुरु के निर्देशानुसार ही करें।

सभी प्रकार के प्रदर पर सिद्ध टोटका

भुई आँवले के ताजे पौधों को, आधा पाव के करीब एक मलमल की थैली में भरें और रात्रि में सोते वक्त स्त्री के पेडू पर उसे रखकर किसी कपड़े से हल्के–फुल्के बाँध दें तो इसके प्रभाव से सभी प्रकार के प्रदर और गर्भाशय के विकार दूर हो जाते हैं। पुराने रोगों से यह क्रिया लगातार 40 दिनों तक करनी चाहिए।

गर्भस्थापक–जीयापोता (जीव पुत्रक) के बीजों की माला कमर में धारण करने से गर्भ स्थिर होता है।

ऋद्धि-सिद्धि प्राप्ति के लिए कालिका का

॥ मन्त्र ॥

ॐ काली
काली-महाकाली
मदे मांसे
करे देवाली
इन्द्र की बेटी
ब्रह्मा की साली
घोड़े की पीठ
बजावे ताली
चाम की कोथली
हाड़ की जप-माली
पताल की सर्पिणी
उडु-मंडल की बिजुली
जहाँ पठाऊँ
तहां जाईह
रिद्धि-सिद्धि ल्याहूँ
दश कोश बाँएँ
दश कोश दाहिने
दश कोश आगे
दश कोश पाछे
मेरा वैरी
तेरा भक्ष्य
मैं दिया
तरुसिले-चूसि ले
क्रीं काली महा-काली

फुरो मन्त्र अन्नूठ चण्डाली
न फुरे, तो ब्रह्मा-
विष्णु-महेश वाचा
पावु पखा ले
मेरी भक्ति
गुरु की शक्ति
फुरो मन्त्र
ईश्वरो वाच

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की साधना करने से साधक को ऋद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती है तथा शत्रु नाश के लिए भी प्रयोग किया जाता है।

बच्चे के दाँत के रोग पर टोटका

1. शुभ दिन में शंखपुष्पी की जड़ को उखाड़कर बच्चे की भुजा में बाँध देने से बिना कष्ट के दाँत निकल आते हैं। इस जड़ी के प्रभाव से दाँत निकलते वक्त के कष्ट भी दूर हो जाते हैं।
2. जवासे पौधे की जड़ की ताबीज को बाजू में धारण करने से बच्चे के दाँत बिना तकलीफ के निकल आते और अन्य प्रकार के उपद्रव भी दूर हो जाते हैं।
3. खिरनी के फूल के बीज की ताबीज बाजू में धारण करने से बच्चे के दाँत शीघ्र और बिना कष्ट के निकल आते हैं।
4. यदि बिना कष्ट के और सुखपूर्वक बच्चे के दाँतों को उगाना चाहें तो उसके गले में कड़वी तूम्बी के बीजों की ताबीज पहना दें।

बालग्रह और सुखंडी पर टोटका

बड़े करंज (डिठोरी) के फल को काले धागे में गूँथकर बच्चे के गले में धारण कराने से सुखंडी और कई प्रकार के दृष्टि-दोष तथा बालग्रह का निवारण होता है।

बाल-रोग नाशक टोटका

वाल ज्वरनाशक-तुलसी के पौधे को एक रोज पूर्व ही निमन्त्रित कर रविवार के दिन उसकी जड़ को उखाड़ लें और उसे लाल सूत में लपेट 20 बार निम्नलिखित मंत्र से अभिमन्त्रित कर बालक की शिखा में बाँध दें, तो उसका विषम ज्वर नष्ट हो जायेगा। मंत्र इस प्रकार है- 'ओं कुरु बन्दे अमुकस्य (अमुकस्य शब्द को हटाकर रोगी बालक का नाम लेना चाहिए) ज्वर नाशय नाशय ह्रीं स्वाहा।'

माँ कालिका का सिद्ध रक्षा

॥ मन्त्र ॥

ॐ काली-काली
महा-काली, ज्यावे
सीपी, वलके डाहोली
दोनों हात से बजावे
टाली, बाँएँ याट जा
बसे, काल-भैरव
उसका काट-काट
कौन रखा कनकाला
तोहू, म्हसासूर येऊ
का उज्याला कर
आला मछिन्द्र का
सोटा, काल-भैरव
का पाँव तुटा, दूरा
लाजी लूखा, किया
हाला सती सके का
बाँधु, काल राखे
गोरखनाथ सिंहनाथ
फूरे अडबंगी बोले
फूरो मंत्र, ईश्वरी वाचा

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का ग्रहण काल में, पुस्तक में कही विधि के अनुसार जप कर सिद्ध करें। फिर आवश्यकता के समय 21 बार जपकर ताली बजाने से या रक्षा घेरा बनाने से सुरक्षा प्राप्त होती है।

अदृश्य होने के लिए सिद्ध कालिका

॥ मन्त्र ॥

ॐ हुँ फट्।
काली काली॥
माँस शोणितं।
खाद्य खाद्य॥
देवी माँ।
पश्यतु॥
मानुषेति।
हुँ फट् स्वाहा। ॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की साधना खतरनाक है, इस मन्त्र की साधना 41 दिन की है। इस मन्त्र की साधना महाकाली के मंदिर में करें, जप पूरा होने के बाद आक की रुई, शाल्मली की रुई, कपास की रुई और रेशम की बत्तियाँ बनाकर, पाँच मुण्ड लेकर उनमें सुगन्धित तेल भरकर और वह बत्तियाँ उनमें डाल दें और उन्हें दीपक की भांति प्रज्जवलित कर दें, इनका अलग-अलग काजल एकत्र करें फिर एक में मिलाकर इस मन्त्र द्वारा 4200 बार अभिमन्त्रित कर काजल को नेत्रों में लगायें तो साधक अदृश्य हो जाता है।

भद्र काली का सिद्ध शाबर

॥ मन्त्र ॥

ॐ सिंहो दत्तो बिकोवा
धड़ित धड़धड़ात
ध्यायमान भवानी
दैत्यनाम देह-
नाशनाम तोड़यान्ति
सिरांसी रक्तां पिबन्ति
पिशाचा त्रिहाप
त्रिहाप हसन्ति
खदत खद-खदात
त्रिरोष मम भद्र-काली
नौ नाथ चौरासी सिद्धन
के बीच में बैठ कर
काली मन्त्र स्वाहा

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का जप श्मशान या एकांत स्थान में रात्रि 12 बजे के बाद 41 दिन में सवा लाख जप करें। धूप–दीप, नेवैद्य, माँस, मदिरा, बलि आदि का प्रबन्ध कर के जप करें। जप के समय साधक अपने चारों ओर रक्षा का घेरा बनाकर जप करें एवं जप का दशांश हवन करें, तो भद्र–काली साधक को दर्शन देती है।

ग्रहयुक्त बाल-रोग में टोटका

1. जब चन्द्रग्रहण का योग उपस्थित हो, तो शिर के बालों या अपनी शिखा खोलकर मयूर शिखा की जड़ उखाड़ लायें और उसे बालक की जाँघ या गर्दन में बाँध दें, तो उसका रोग मिट जाता है।

हजरात बंगाली कालिका सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

ॐ काली माता।
काली माता।
ओतो ते॥

॥ विधि ॥

इस मंत्र का 21 दिन में इक्कीस हजार जप विधि–विधान सहित करने से यह मन्त्र सिद्ध होगा। फिर कपूर का काजल बनाकर उसमें कुछ बूँदे चमेली के सुगंधित तेल की डाल कर उस काजल को सम्भाल कर रखें, आवश्यकता के समय जिस दिन आकाश साफ हो तो सुबह आठ बजे से पहले किसी 11 वर्ष के बच्चे को आसन पर बिठा कर, इस मंत्र से गुड़ 21 बार अभिमंत्रित कर उसे खिलायें, फिर उसके दाहिने हाथ के अंगूठे पर काजल वाली स्याही लगा दें और बच्चे को उस काजल को ध्यान से देखने को कहें, जब लड़का उस अंगूठे पर ध्यान एकाग्रचित करेगा तो उसे एक मैदान दिखाई देगा उसमें कुछ आकृतियां दिखाई देंगी। तब लड़का कहे कि भंगी हाजिर हो तो अंगूठे वाले मैदान में भंगी आ जायेगा, तो लड़का उसे झाड़ लगाने को कहे, जब झाड़ू लगाकर खड़ा हो जाये तो लड़का कहे भंगी साब आप जाये और पानी छिड़काव करने वालों को भेजें, जब पानी छिड़काव करने वाला आ कर खड़ा हो जाये तो उसे लड़का पानी छिड़कने को कहे जब वह पानी छिड़ककर खड़ा हो जाय तो उसे लड़का आदेश करे कि आप जायें और फर्श लगाने वाले को भेजें। जब फर्श लगाने वाला आकर फर्श लगादे और सिंहासन स्थापित कर दे तो उसे कहे आप जाए और मुंशी जी या पण्डित जी को बुलायें। जब वह मुंशी जी को साथ लेकर पधारें तो बालक उसने निवेदन करे कि मैं कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ क्या उप इसके लिए तैयार हैं ? तो वह जब हाँ में सिर हिलाए तो लड़का मुंशी को कहे कि माँ कालिका जी को आदर सहित सिंहासन पर लाए। जब माँ कालिका सिंहासन पर बिराजे तो लड़का माँ कालिका को 11 रुपये फल–फूल, मिठाई, अगरबत्ती से उनकी पूजा कर, जो प्रश्न मुंशी जी से पूछना चाहे पूछे। मुंशी जी माँ कालिका से उत्तर पूछ कर बालक को हाँ या ना में जवाब देंगे या बालक मुंशी जी से निवेदन करेगा कि मुझे इस भाषा में लिखकर उत्तर दो तो मुंशी स्लेट पर लिखकर भी उत्तर देगा। प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के बाद माँ कालिका की सवारी को वापिस जाने का निवेदन करें। इस प्रयोग से साधक हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर सकता है। इस प्रयोग को सिद्ध करने वाला साधक कभी किसी से रुपया–पैसा न ले तथा गुरु से दीक्षा प्राप्त कर इस सिद्धि को सम्पन्न करें।

हाजरात सिद्धि के लिए कालिका सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं
हाजरात-सिद्धि
कुरु कुरु स्वाहा॥

॥ विधि ॥

इस मंत्र का मंगलवार से जप आरम्भ कर 21 दिन में 21000 बार जप विधि–विधान सहित करें, फिर इस मंत्र का दशांश हवन चमेली के फूल और कपूर मिला कर करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा।

फिर पूर्व में वर्णित हाजरात की ही विधि से बालक द्वारा प्रश्न पूछ लें।

ग्रहयुक्त बाल-रोग में टोटका

1. बरसाती मेढ़क की बायीं जाँघ की हड्डी को गले या कमर में बाँधने से अहिण्डिका रोग समाप्त हो जाता है।
2. मीठा तेलिया जहर के एक टुकड़े को कपड़े की ताबीज में रख गले में धारण करने से अहिण्डिका रोग शान्त हो जाता है।

बच्चे के गिरने पर टोटका

यदि गोद का बच्चा गोद से एक–ब एक गिर जाये और पैर इत्यादि से रौंदी हुई धूल और मिट्टी आदि से उसका शरीर मलिन हो जाये, तो उसे पुनः गोद में उठाकर मिट्टी के तीन टुकड़ों को क्रमशः तीन बार उसके सिर को चारों ओर घुमा और सिर से सटाकर फेंक दें। इस टोटके से गोद से गिरने के कारण होने वाला अनिष्ट फल समाप्त हो जाता है।

दिमाग पर दूध या घृत चढ़ जाने पर टोटका

यदि दूध पिलाते या घृत इत्यादि की घुटी देते समय वह सरक जाये, तो शीघ्र ही बच्चे की माता अपने सिर के बाल के गुच्छे से उसके मुख पर हवा करे। इससे उत्पन्न व्याकुलता समाप्त हो जाती है।

बाल-ग्रह नाशक टोटका

यदि छोटे शिशु को भूत, बैताल तथा कूष्माण्ड इत्यादि ग्रह कष्ट दे रहे हों, तो बड़े साँड की सींग में लगी मिट्टी लेकर उसमें गोरोचन मिलायें और उसका तिलक तैयार कर नित्य बच्चे के सिर पर लगाया करें तो ग्रहजनित कष्ट मिट जायें।

सर्व कार्य सिद्धि दायक कालिका

॥ मन्त्र ॥

ॐ जय अम्बा
भू की रानी
काली माता कालका
काला भैरो
है मतवाला
हनुमान चिल्ले वाला
मेरा कार्य न सवारो
तो दोहाई है
गुरु गोरख नाथ की
अंजनी का पुत्र
हनुमान साजे
शब्द साँचा
पिण्ड काँचा
फुरे मन्त्र
ईश्वरो वाचा

॥ विधि ॥

जो साधक इस मंत्र का नित्य जप करता है, तो उसके रुके हुए सभी कार्य माँ कालिका की कृपा से सिद्ध होते हैं। तथा जो साधक पानी वाले नारियल को काले कपड़े में लपेट कर माँ काली के मंदिर में, इस मंत्र को जपते हुये अर्पण करेगा, उसको कुछ ही दिनों में रोजगार की प्राप्ति होगी।

इस मंत्र को ग्रहण की रात्रि या दीपावली की रात्रि में विधि विधान से जप कर सिद्ध करने से साधक को मनोवांछित फल मिलता है।

गृह-बन्धन कालिका का सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

ॐ काली-काली जप।
निशा-रात-काली॥
काली की माता।
अढ़ाई आखर के भोर॥
मैं हारौ, परची के घावो।
अण्डा खसै, सवा भरि-॥
विय्या सोट, सम्हारि-।
सम्हारि क घाव॥
उनठ बान्ह, बनठ बान्ह।
देवता-देवी लकेसरी॥
कासा के पेरी।
तम्बोक बेड़ी-॥
बेड़ी-पर-बेड़ी।
बारह बरस, 36 युग के॥
भाषा देत छियो।
गुरु खोलो, तब न खुले राज॥
हम ही खोली, तबही खुले।
दोहाई ईश्वर महादेव॥
गौरा-पार्वती के सत्-।
वचन के प्रमाण के॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का ग्रहण काल में अनगिनत जप विधि-विधान से करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा फिर जरुरत के समय इस मन्त्र को जपते हुए घर के चारों ओर सात बार रेखा खींचने से घर अलाओं-बलाओं से सुरक्षित रहेगा।

रक्षा के लिए कालिका का सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

ओम काली।
काली महाकारी॥
इन्द्र की बेटी।
ब्रह्मा की साली॥
उड़ बैठी।
पीपल की डाली॥
दोनों हाथ।
बजावे ताली॥
जहाँ जाये।
वज्र की ताली॥
वहाँ न आवे।
दुश्मन हाली॥
दुहाई कामरु।
कामक्षा नैना॥
योगिनी की।
ईश्वर महादेव॥
गौरा पार्वती की।
दुहाई वीर॥
मसान की॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का दीपावली की रात्रि को या होली की रात्रि को 10 माला जप करने से यह मन्त्र फलीभूत होता है, फिर इस मन्त्र का 21 बार जप करके ताली बजाने से सब प्रकार से रक्षा होती है।

रोड़का काली का सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

सोने की संगली
रुपे की कड़ी
ले माई कड़क
कालका खड़ी
गुरवन्ती-गुरदन्ती
गुर के छूटे ढाई वाण
फूटे लहू चले मसाण
ढाईयाँ घड़ियाँ-दी
औणी करिके औए
ताँ रोड़का कहाए
चले मन्त्र फुरे वाचा
देखूँ रोड़का
तेरे इल्म का तमाशा

॥ विधि ॥

नदी किनारे जहाँ श्मशान पड़ता हो, वहाँ उपरोक्त मन्त्र का, नदी के किनारे बैठ कर रात्रि में साधक 21 दिन तक नियमित मांस, मद्य तथा आटे का पेड़ा भोग के लिए रख कर जप करें। तो माँ रोड़का काली साधक के अच्छे और बुरे कार्यों को सफल बनाती है। प्रत्येक दिन भोग की सामग्री बहते नदी जल में प्रवाहित कर दिया करें।

बालग्रह और भय-निवारणार्थ टोटका

यदि बच्चा डरे और किसी ग्रह के असर की शंका हो, तो उसकी कमर में काले सूत में पिरोकर अतिबला (ककही) का फल कंठ में, घोड़बच सिर में, नीम की जड़ और छाल दाहिने हाथ में तथा इन्द्रबली (इन्द्रायण) की जड़ को कमर में बाँध दें, तो उसका डरना तथा ग्रह बादा की शंका जाती रहेगी। इन जड़ियों को हमेशा धारण कराये रहना चाहिए।

माँ-काली के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

ॐ काली-काली
महा-काली
इन्द्र की बेटी
ब्रह्मा की साली
हरी-गोट, पीरी-सारी
मायके को बाँध
सासरे को बाँध
औघट को बाँध
गैल को बाँध
बार-बार में से
सोत-सोत में से
बत्तीसउ दाँत में से
ऐंच-खैंच के नल्याबे
तो फेर महाकाली-
न कहावे, तीन पहर-
तीन घड़ी में, नीलो धुँआ।
पीरी रज उड़ा के न आवे।
तो काल-भैरव की
सेज पै पग धरै॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान 41 दिन का है, इस मन्त्र की 1 माला नित्य प्रतिदिन जपना चाहिए, जप एकांत में करें माँ काली की प्रतिमा या चित्र के सामने धरती पर गाय के गोबर से चौका लगाकर उस पर सिंदूर का गोल बिन्दू लगायें उस स्थान में शराब नौ लौंग, बकरी की कलेजी, मुर्गी का अंडा, फल–फूल मिठाई रखें, सामने दीवार पर एक त्रिशूल की आकृति सिन्दूर से बनायें उपरोक्त सामग्री त्रिशूल के नीचे रख उसकी पूजा करें, जपांत में शराब, मांस से दशांश हवन गुरु आज्ञानुसार करे तो माँ काली साधक को प्रत्यक्ष दर्शन देकर कृतार्थ करती है।

सुख-समृद्धि दायक कालिका

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरु को।
सात भवानी कालिका॥
बारह वर्ष कुमार।
एक माई परमेश्वरी॥
चौदह भुवन द्वार।
दो पक्ष निर्मली॥
तेरह देवी-देव।
अष्ट भुजी परमेश्वरी॥
ग्यारह रुद्रकर सेव।
सोलह कला सम्पूर्णा॥
तीन नयन भरपूर।
दश अवतारी॥
पाँच देव रक्षा करें।
नव नाथा-चौरासी सिद्ध॥
षट्-दर्शन पाइए।
पन्द्रह तिथि जान॥
चार वेद बखानिए।
काली कर कल्याण॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का जो साधक नित्य सच्चे मन से माँ कालिका का ध्यान कर जप करता है वह संसार के सम्पूर्ण सुख प्राप्त करता है। उसको जीवन में किसी तरह का अभाव नहीं रहता है।

इस मन्त्र में महा कालिका के चौंतीस के यन्त्र की सम्पूर्ण विधि समाई हुई है इस लिए इस मन्त्र का जप कर झाड़ा करने से भूत-प्रेतादि दोषों का निवारण होता है।

रोजगार प्राप्ति के लिए माँ कालिका का पंच वाण

प्रथम वाण

ॐ नमः काली
कंकाली महा-काली
मुख सुन्दर
जिए ब्याली
चार-वीर
भैरो-चौरासी
बीतती पूजूँ
पान-ए-मिठाई
अब बोलो
काली की दुहाई

द्वितीय बाण

ॐ काली-कंकाली
महा-काली, मुख सुन्दर
जिए ज्वाला बीर-
बीर, भैरू चौरासी
बता, तो पूजूँ पान-
मिठाई॥

तृतीय वाण

ॐ काली-कंकाली
महा-काली
सकल सुन्दरी
जीहा ब्हालो
चार वीर
भैरव चौरासी
तदा तो पूजूँ
पान-मिठाई

अब बोलो
काली की दुहाई

चतुर्थ वाण

ॐ काली-कंकाली
महा-काली
सर्व सुन्दरी
जिए व्हाली
चार-वीर
भैरूँ चौरासी
तण तो पूँजूँ
पान-मिठाई
अब राज बोलो
काली की दोहाई

पंचम वाण

ॐ नमः काली
कंकाली-महा-काली
मख सुन्दर, जिए
काली, चार-बीर
भैरूँ चौरासी, तब
राज तो पूजूँ
पान-मिठाई
अब बोलो
काली की दोहाई

॥ विधि ॥

इस मंत्र का, मन एकाग्रचित्त कर नित्य आजीवन 11 बार पूर्व की ओर मुख कर एक नियमित स्थान पर धूप-दीप आदि विधि विधान से जप करें तो रोजगार की अति शीघ्र प्राप्ति होती है।

माँ कालिका की सिद्धि हेतु

॥ मन्त्र ॥

क्रीं कालिका।
षोडस वर्षीय जवान॥
हाथ में खड़ग।
खप्पर तीर कमान॥
गले नर मुण्ड।
माला रहे श्मशान॥
आओ आओ माँ।
कालिके मेरा कहना मान॥
नहीं आये कालिका।
तो काल भैरव की दुहाई॥
शब्द साँचा।
फुरे मन्त्र खुदाई॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का शुभारम्भ शनिवार की अर्ध रात्रि में निवस्त्र होकर करें, तो कालिका देवी साधक को मनोवांछित वरदान देती है तथा साधक को सिद्धियाँ प्रदान कर उसकी हर प्रकार से रक्षा करती है।

साधक इस मन्त्र का आजीवन जप करें तो अत्यन्त लाभप्रद है।

गृह सुरक्षा के लिए कालिका सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

ॐ उत्तरा-खण्ड
की काली
उत्तर को बाँध
पूरब को बाँध
पच्छिम को बाँध
दक्खिन को बाँध
आगा बाँध
पीछा बाँध
घर के चारों
कोने बाँध
मेरी बाँध न बँधे
तो काली माई
की फिरै दुहाई
शब्द साँचा
पिण्ड काचा
फुरे मन्त्र
ईश्वरो वाचा

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान 21 दिन का है पुस्तक में कही विधि के अनुसार इस मन्त्र को सिद्ध करें फिर एक मिट्टी का सकोरा (कुज्जा या पुखा) लेकर उसकी पेदी (तली) में छोटा छिद्र करें फिर उसमें शराब, दूध, गौमूत्र भरकर मंत्र का जाप करते हुए सकोरे को हाथ में लेकर घर के सात चक्कर लगायें, फिर चार निम्बू व चार बड़ी लम्बी कीलें लेकर घर के चारों कोनों में चारों निम्बुओं को धरती में दबाकर उनके ऊपर कीलें ठोक दें तो घर सदा के लिए अभिचार कर्मों से सुरक्षित रहेगा।

चोर भय निवारण कालिका सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

ॐ-काली-करालिनी स्वाहा।
ॐ-काली-कपालिनी स्वाहा।
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं चोर बंध ठं ठं ठं।

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का ग्रहण–काल में पुस्तक में लिखी विधि विधानुसार अनगिनत जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है, सिद्ध होने के बाद जब आपको कभी किसी वस्तु की चोरी हो जाने की आशंका हो तो भस्म या सफेद सरसों लेकर 21 बार अभिमंत्रित कर उक्त मंत्र जपते हुए उस स्थान को चारों ओर घेर दें तो चोर उस सुरक्षा रेखा को तोड़ कर अन्दर न जा पाएंगे।

रक्षा के लिए कालिका सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो काली-कंकाली।
धरती-माता, आकाश-॥
पिता, रक्षा करें परमेश्वरी-।
कालका! दुहाई-महा-देव की॥
शब्द सांचा पिण्ड कांचा।
फूरे मन्त्र-ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का ग्रहण काल में विधि–विधान से अनगिनत जप करने से यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर इस मन्त्र को जपते हुए अपने चारों ओर घेरा खींचने से सुरक्षा होती है।

आत्म-रक्षा के लिए कालिका सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

काया राख कालका
तालू राख तालिका
हृदय राख हणवन्त-वीर।
पीठ राख हणवन्त-वीर।
सीस राख चौख पीर
पाँच पीर रक्षा करें।
सवा भार लोहे का कोठा।
ते माँ हमारा जीव।
बैठा श्री भीम वैताली।
श्री गुरु गोरख करै रख-
वारी, हमार डील ऊपर-
कोई इष्ट कर-कोई-
मुष्ट कर, -छल कर,
छिद्र करे, जाण कर-
विजाण कर, सोई करे-
सोई मरे, गुरु की शक्ति-
मेरी भक्ति, चलो मन्त्र।
फद फद स्वाहा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान 21 दिन का है, इसे विधि विधानुसार जप कर सिद्ध करें, फिर इस मंत्र से एक मोटा सफेद धागा अभिमंत्रित कर जिस किसी को धारण करवायेंगे वह सभी उपद्रवों से सुरक्षित रहेगा।

रक्षा कारक माँ कालिका सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरु कूँ।
कपाल राखे कुमारिका।
भुवनेश्वरी, त्रिपुरा-बाला।
काम-राजा, पार्वती।
प्राण-नाथ, छत्र-पति।
नव-कोटि कात्यानी।
त्रिपुर-सुन्दरी, ज्वाला-
मुखी, तारा, तोमरा, देवी-
कालिका, भवानी, पंचो-
बैठे लिलाट, चन्दन-
केरा तिलक करो।
वीरी हमारो लात, बाऊ-
वीर हनुमन्त, तो तज्यो-
मनचिन्तयो, सो साजे हिवाऊँ।
तेही मोकूँ गुरु की शगत।
हमारी भगत, चलो मन्त्र।
ईश्वरो वाचा। शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र को दीपावली या ग्रहण वाली रात्रि में विधि–विधान सहित अनगिनत बार जप कर सिद्ध करें फिर इस मन्त्र को 21 बार पढ़कर अपने देह पर फूँक मारें तो समस्त प्रकार से रक्षा होगी।

रक्षा के लिए कालिका सिद्ध

॥ मन्त्र ॥

बाघ बिजुली।
सर्प चोर॥
चारिउ बाँधो।
एक ठौर॥
धरती माता।
आकाश पिता॥
रक्ष रक्ष।
श्री परमेश्वरी॥
कालिका माई।
की वाचा॥
दुहाई महादेव की।
शब्द साँचा॥
पिण्ड कांचा।
फुरो मन्त्र॥
ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का इक्कीस दिन, वीरान स्थान में अनुष्ठान कर इस मन्त्र को सिद्ध करें फिर कहीं पर भी निवास करते समय या सोते समय या कहीं जंगल उजाड़ में इस मन्त्र का 21 बार जाप कर 21 ताली बजाने से बाघ, बिजली, साँप तथा चोर आदि से रक्षा होती है।

सुखंडी पर

1. यदि बच्चा सुखंडी रोग से तकलीफ पा रहा हो, तो उसके गले में, धागा में पिरोयी मजीठ की मोटी लकड़ी पहना दें। इससे सुखण्डी के कारण सूखता हुआ शरीर पुनः पुष्ट होने लगेगा।
2. घोंघे में छेद कर गले में पहनने से बच्चा मोटा–ताजा हो जाता है।

कार्य में सिद्धि प्राप्त करने के लिए कालिका

॥ मन्त्र ॥

काली घाटे।
काली माँ॥
पतित पावनी।
काली माँ॥
जवा फूले।
स्थुरी जले॥
सेई जवा फूल।
में सिआ बेड़ाए॥
देवीर अनुर्बले।
एहि होत॥
करिवजा होइवे।
ताहा काली धर्मेर॥
वले काहार।
आज्ञे राठे॥
काली का।
चंडीर आसे॥

॥ विधि ॥

यह भगवती कालिका का बंगला भाषा में शाबरी मंत्र है। इस मन्त्र का ग्रहण वाली रात्रि को विधि सहित माँ कालिका की पूजा कर जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर इस सिद्ध मन्त्र का कहीं भी सात बार जप कर दायें हाथ पर फूँक मारें और जो चाहे सो कार्य करें तो पूर्ण सफलता प्राप्त हो।

सर्व कार्य सिद्धि के लिए श्री हनुमान जी के सफल एवं सिद्ध शाबर मन्त्र

इस तीसरे अध्याय में, सर्व-कार्य सिद्धि दायक, एवं सुख समृद्धि दायक मंत्र और रोग नाशक मंत्रों का विधि-विधान को विशेष रुप में प्रस्तुत किया गया है।

श्री हनुमान सिद्धि के लिये

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो देव लोक दिविख्या देवी।
जहाँ बसे इस्माईल योगी॥
छप्पन भैरों, हनुमन्त वीर।
भूत-प्रेत दैत्य को मार भगावें॥
पराई माया ल्यावें।
लाडू पेड़ा बरफी सेव-
सिघाड़ा पाक बताशा॥
मिश्री घेवर बालूसाई-
लोंग डोडा इलायची दाना॥
तेल देवी काली के ऊपर।
हनुमन्त गाजै॥
एती वस्तु मैं चाहि लाव।
न लावे तो तैंतीस कोट देवता लावें॥
मिरची जावित्री जायफल-
हरड़े जंगी-हरड़े॥
बादाम छुहारा मुफरें।
रामवीर तो बतावें बस्ती।
लक्ष्मण वीर पकड़ावे हाथ॥
भूत-प्रेत के चलावें हाथ।
हनुमन्त वीर को-
सब कोउ गावे॥
सौ कोसां का बस्ता लावे।
न यावे तो एक लाख-
अस्सी हजार पीर॥
पैगम्बर लावें।
शब्द सांचा, फुरे मन्त्र॥
ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का जप किसी निर्जन (उजाड़) स्थान में, कोई अन्धा कुँआ के ऊपर बैठ कर करें, सर्व प्रथम वहाँ से शुद्ध मिट्टी लेकर उसमें लालरंग या सिंदूर मिला कर हनुमान जी की प्रतिमा बनायें, फिर उस पर सिन्दूर का चोला चढ़ा कर मन्त्र में कही सामग्री उस प्रतिमा के समक्ष रख कर इस मन्त्र का 21 दिन तक प्रतिदिन रात्रि में 2 माला जप करें, तो रामदूत हनुमान स्वयं उपस्थित होकर साधक की इच्छा पूर्ण करते हैं या सैकंडों मेंघों की गर्जना के साथ आकाश–वाणी करते हैं इसे साधक ध्यान से सुनें और उससे तीन वचन ले लें।

श्री हनुमान जी की सिद्धि का

॥ मन्त्र ॥

अजरंग पहनूँ।
बजरंग पहनूँ॥
सबरंग रक्खू पास।
दाँये चले भीम सेन॥
बाये हनुमन्त।
आगे चले काजी साहब॥
पीछे कुल बलारद।
आतर चौकी कच्छ कुरान॥
आगे पीछे तूं रहमान।
धड़ खुदा, सिर राखे-॥
सुलेमान, लोहे का कोट॥
ताँबे का ताला, करला-।
हंसा बीरा॥
करतल बसे समुद्र तीर।
हाँक चले हनुमान की॥
निर्मल रहे शरीर॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान 21 दिन का हैं, किसी भी मंगलवार की रात्रि को हनुमान जी विषयक सभी नियम मानते हुए, साधक प्रतिदिन 11 माला जप करें तो हनुमान जी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी भी रुप में दर्शन देकर उसकी समस्त अभिलाषाएँ पूरी करते हैं।

श्री हनुमान जी के दर्शन प्राप्ति का

॥ मन्त्र ॥

ॐ हनुमान पहलवान।
वर्ष बारह का जवान॥
हाथ में लड्डू मुख में पान।
आओ-आओ बाबा हनुमान॥
न आओ तो दुहाई महादेव-।
गौरा पार्वती की॥
शब्द सांचा पिण्ड कांचा।
फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान मंगल या शनिवार से प्रारम्भ कर एक सौ बीस दिन करें, प्रतिदिन इस मन्त्र की 11 माला जप विधि–विधान से करना चाहिए, साधक ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर हनुमान जी के मन्दिर में या किसी निर्जन स्थान में हनुमान जी की मुर्ति स्थापित कर सर्व प्रथम उस मूर्ति पर सिन्दूर में चमेली का खुशबू दार तेल मिला कर चोला चढ़ाये, फिर उस प्रतिमा के आगे जनेऊ, खड़ाऊँ, लाल लंगोट, लाल चन्दन, सात लड्डू, नारियल, पेड़ा, लाल ध्वज, मौसमी फल आदि चढ़ावें तथा जप के समय साधक लाल वस्त्र धारण करें, लाल आसन पर बैठ कर लाल–चन्दन की माला से जप करें तथा प्रत्येक मंगलवार को श्री हनुमान जी का व्रत रखे तथा प्रत्येक शनिवार व मंगलवार को छोटे बालकों को चने–गुड़ तथा लड्डुओं का वितरण करें नियमों का पालन एवं मन एकाग्र कर जप करें तो श्री हनुमान जी साधक को दर्शन देकर उसे मनोवांछित वर प्रदान करते हैं।

सिद्ध टोटका विज्ञान के कुछ कण

बच्चों के दृष्टि दोष-निवारण के लिए

हल्दी में रँगे कपड़े में अजवाइन रख पोटली बनायें और उसे बच्चे के गले में लटका दें तो उसे दृष्टिदोष असर नहीं करता है।

बच्चे के गले की घण्टी के कष्ट में

कौआठूँठी (काकनासा) के फल को काले धागे में पिरोकर गले में धारण करने से बच्चे के गले की घण्टी का कष्ट मिट जाता है।

(वीर रुप) हनुमान सिद्धि के लिए

॥ जंजीरा ॥ (1)

गणा गणा कमरी गणा।
पायामधई सोन्या॥
सुवर्णाच्या वहाणा।
वहाण गेली अग्नि॥
निघाली, ओटयावर।
होता कोल्हयासर दैत॥
जाकती ज्योत जागत रहो।
खेत देव दैत चले रे॥
हनुमान बीर। सिध्यांशी॥
गुरु छू॥

॥ जंजीरा ॥ (2)

गणा ज गणपति-।
सारजा सरस्वती॥
सारजा सरस्वतीनं।
काय केलं ?॥
डाग डुबला।
डाग डुबल्याची॥
काजल आणली।
शिरी कुंकवाची॥
चिरी ल्याली।
ये अन्जनीच्या सुता॥
रामाच्य दूता।
आमचे काम सिद्ध॥
करावे नाहीं करशील।
तर राम-लक्ष्मणाची आण॥
सीता जानकी ची आण॥
सिध्यांशी गुरु छू॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की साधना 21 दिन की है, साधक श्री बजरंग बली विषयक सभी नियमों को मानते हुए आक के पौधे के नीचे किसी शुभ–दिन में ब्रह्म–मुहुर्त में उस पौधे की हल्दी, कुंकुम, अगरबती, नारियल, कपूर आदि उपचारों से पूजा करें, फिर हाथ में जल लेकर ''जंजीरा एक'' को पढ़कर पौधे की जड़ पर छोड़ें, इसी तरह इक्कीस बार करें, फिर ''जंजीरा दो'' सभी यही क्रिया 21 बार करें, फिर गुरु–मन्त्र का जप 11 बार करें, यह पहले दिन की विधि हुई, यह सब क्रिया इक्कीस दिनों तक करें तीसरे ही दिन से हनुमान जी की सिद्धि होने लगती है, इक्कीसवें दिन हनुमान जी सामने आकर खड़े हो जाएँगे।

जब ''हनुमान जी'' प्रत्यक्ष हों, तब ''जंजीरा'' दो का उच्चारण करें, इससे हनुमान जी बोलने लगते हैं, तब साधक उनसे आर्शीवाद माँगकर आवश्यकता के समय आने का वचन ले लें। इक्कीसवें दिन मीठे भोजन का नैवेद्य देकर ''आक'' का पौधा उखाड़ लें और उसकी जड़ का ताबीज बनाकर गले या कमर में धारण करें, जब आवश्यकता हो। तब ''जंजीरा एक'' को पढ़ने से हनुमान जी हाजिर हो जाते हैं और साधक की इच्छा पूरी करते हैं, या दोनों ''जंजीरों'' को पढ़कर ''ताबीज'' को कान से लगाएँ तो कान में ''हनुमान जी'' उत्तर तथा मार्ग–दर्शन देंगे।

बालकों के दंत-रोग पर टोटका

जब सूर्य डूबने लगे तब निर्गुडी की जड़ को, जिसमें पेड़ की डण्ठल न लगी हो, बच्चे के गले में बाँध देने से दाँत निकलते वक्त का कष्ट मिट जाता है।

बाल गुद-भ्रंश में (काँच निकलना) टोटका

मल त्याग करते वक्त अपना मूत्र एक पात्र में इक्ट्ठा कर लें और पहले उसे ही आबदस्त लें। लेने के बाद पुनः जल से आबदस्त लें, तो तीन दिनों में ही काँच का निकलना बन्द हो जायेगा।

हनुमान साठिका

॥ दोहा ॥

बीर बखानौं पवनसुत, जनत सकल जहान।
धन्य-धन्य अंजनि-त्तनय, शंकर, हर हनुमान॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय हनुमान अखण्डी।
जय जय महाबीर बजरंगी॥
जय कपीस जय पवन कुमारा।
जय जग-बंधन सील-अगारा॥
जय-उद्योग अमर अविकारी।
अरि-मरदन जय जय गिरधारी॥
अंजनि-उदर जन्म तुम लीना।
जय जयकार देवतन कीना॥
बाजे दुंदुभि गगन गंभीरा।
सुर-मन हरष-असुर-मन पीरा॥
कपि के डर गढ़ लंक सकाने।
छूटे बंदी देव, सब जाने॥
रिषय-समूह निकट चलि आये।
पवन तनय-के पद पर सिर नाये॥
बार-बार स्तुति करि नाना।
निरमल नाम धरा हनुमाना॥
सकल रिषय मिलि अस मत ठाना।
दीन बताय लाल फल खाना॥
सुत वचन कपि अति हरषाने।
रवि-रथ गहे लाल फल जाने॥
रथ-समेत रवि कीन अहारा।
सोर भयउ तहँ अति भयकारा॥
बिनु तमारि सुन-मुनि अकुलाने।
तब कपीस-कै स्तुति ठाने॥

सकल लोक वृतांत सुनावा।
चतुरानन तब रवि ढंगिलावा॥
कहा बहोरि, सुनहु बल-सीला।
राम-चन्द्र करिहैं बहु लीला॥
तब तुम तिनकर करब सहाई।
अबहिं रहहु कानन-महँ जाई॥
अस कहि विधि निज लोक सिधारा।
मिले सखा-संग पवन-कुमारा॥
खेलहिं खेल महातरु तोरी।
गली करत परवत-मैं फोरी॥
जेहि गिरि चरण देत कपिराई।
बल सो चमकि रसातल जाई॥
कपि सुग्रीव बालि-की त्रासा।
निरभय रहेउ राम मग-आसा॥
मिले राम लै पवन-कुमारा।
अति आनन्द समीर-दुलारा॥
मनि मुन्दरी रघुपति-सौं पाई।
सीता खोज चले कपिराई॥
सत-योजन जननिधि बिस्तारा।
अगम-अपार देव-मुनि हारा॥
बिन श्रम गोखुर सरिस कपीसा।
लाँघि गयी कपि कहि जगदीसा॥
सीता चरण शीश तिन नायौ।
अजर-अमर की आशिष दायो॥
"अजर-अमर गुन निधि सुत होहू।
करहूँ बहुत रघुनायक छोहू॥"
रहे दनुज उपवन-रखवारी।
एक-तें एक महा भट-भारी॥
तिन्हें मारि, उपवन करि खीसा।
दह्यो लंक कांप्यौ दशसीसा॥
सिया बोध दे पुनि फिरि आयो।

रामचन्द्र के पद सिर नायो॥
मेरु विशाल आनि पल माँही।
बाँध्यो सिन्धु निमिष इक माँही॥
भये फन्नीस शक्ति-बस जबहीं।
राम विलाप कीन बहु तबहीं॥
भवन समेत सुखेनहिं लाये।
भूरि सजीवनि कहं तब धाये॥
मग-महं कालिनेमि कहं मारा।
अमित सुभट निशिचर संहारा॥
आनि सजीवन शैल-समेता।
धर दीन्हयौ जहं कृपानिकेता॥
फन पति केर शोक हरि लीन्हो।
बरषि सुमन, सुमन जय जय कीन्हो॥
अहिरावण हरि अनुज-समेता।
लै गो जहाँ पाताल-निकेता॥
तहाँ रहे देवी स्थाना।
दीन्ह चहै बलि काढ़ि कृपाना॥
पवन-तनय तहं कीन्ह गोहारी।
कटक-समेत निशाचर मारी॥
रिच्छ कीसपति जहाँ बहारी।
राम-लखन कीन्हेउयक ठौरी॥
सब देवन-कै बन्दि छोड़ाई।
सोई कीरति नारद मुनि गाई॥
अच्छ कुमार दनुज बलावना।
स्वामी केतु कहं सब जग जाना॥
कुम्भ कर्ण रावण-कै भाई।
ताहि निपात कीन्ह कपिराई॥
मेघनाद संग्रामहिं मारा।
पवन-तनय सम को बरियारा॥
मुरहा-तनय नरांतक नामा।
पल-महँ ताहि हता हनुमाना॥
जहँ लगि नाम दनुज कर पावा।

शम्भु-तनय तहँ मारि खसावा॥
जय मारुत-सुत जन अनुकूला।
नाम कृसान शोक सम तूला॥
जेहि जीवन-कहँ संकट होई।
रवि-समान तम-संकट खोई॥
बन्दि परे सुमिरै हनुमाना।
गदा-चक्र लै चलु बलवाना॥
जम-कहं मारि बाम दिसि दीन्हा।
मृत्युहिं बाँधि हाल बहु कीन्हा॥
सो भुजबल का कीन कृपाला।
अछत तुम्हार मोरि यह हाला॥
आरति-हरन नाम हनुमाना।
सारद-सुरपति कीन्ह बखाना॥
रहै न संकट एक रती-को।
ध्यान धरै हनुमान यती को॥
धावहु देखि दीनता मोरी।
मेटहु बन्दि कहहुँ कर जोरी॥
कपिपति बेगि अनुग्रह करहु।
आतुर आइ दास-दुःख हरहु॥
राम-शपथ मैं तुमहिं धरावा।
जो न गुहार लागि सिव-जावा॥
बिरद तुम्हारि सकल जग जाना।
भव-भय-भंजन तुम हनुमाना॥
यंहि बन्धन-करि के तिक बाता।
नाम तुम्हार जगत सुख-दाता॥
करहु कृपा जय जय जग-स्वामी।
बार अनेक नमामि-नमामि॥
भौमवार करि होम विधाना।
धूप-दीप-नैवेद्य सजाना॥
मंगल-दायक को लौ लावै।
सुर-नर-मुनि तुरतहिं फल पावै॥

जयति-जयति-जय-जय-जग-स्वामी।
समरथ सब जग अन्तरयामी॥
अंजनि-तनय नाम हनुमाना।
सो तुलसी-कहँ कृपानिधाना॥

॥ दोहा ॥

जय कपीस सुग्रीव तुम, जय अंगद जय हनुमान।
राम-लखन-सीता सहित, सदा करो कल्यान॥
जो यह साठिक पढ़इनित, तुलसी कहैं बिचारि।
पड़े न संकट ताहि-कौ, साखि हैं त्रिपुरारि॥

॥ सवैया ॥

आरत बन पुकारत हौं कपिनाथ सुनो विनती मम भारी।
अंगद औ नल-नील महाबलि देव सदा बल की बलिहारी॥
जाम्बवन्त् सुग्रीव पवन-सुत दिबिद मयंद महा भटभारी।
दुःख दोष हरो तुलसी जन-को श्री द्वादश बीरन-की बलिहारी॥

॥ विधि ॥

यह पाठ सरल भाषा में तुलसी दास जी के द्वारा व्यक्त हुआ है, हनुमान साठिका का नित्य पाठ करने से भव-बन्धन का भंजन और साधक का कल्याण होता है, इसका साठ बार प्रतिदिन पाठ करने से साठ दिनों में इसकी सिद्धि होती है।

शत्रु संकट निवारण का हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ पूर्व-कपि-मुखाय
पंच-मुख-हनुमते
टं टं टं टं टं सकल-शत्रु-
संहरणाय स्वाहा॥

॥ विधि ॥

श्री हनुमान जी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए इस मन्त्र का जप, साधक प्रतिदिन करें तो शत्रु-भय दूर होता है।

यंत्र-मंत्र-तंत्र सिद्ध करने के लिए किसी भी तांत्रिक या पहुँचे हुए व्यक्ति की सलाह अवश्य लें। अन्यथा फायदे की जगह आपको नुक्सान हो सकता है।

हनुमान जी की अभिष्ट सिद्धि का

॥ मन्त्र ॥

ॐ ओंकार।
सत्र-मंगलवार॥
तेव्हां जन्मले।
बीदवाद हनुमन्त॥
बिलखिला के पूत्र।
जय ह्रे पूत्र॥
अलख डोंगर।
मुगद्दर पाणी॥
पाणी-पाणी।
मुख-चून-पाणी॥
जैसा बीर श्री राम।
चन्द्र जी का॥
काज करें।
वैसा ही काज॥
मेरा ही कीजिए।
अष्ट-भैरव की दुहाई॥

॥ विधि ॥

हनुमान जी विषयक सभी नियमों को मानते हुए 41 दिन तक प्रतिदिन 1 माला का जप एवं दशांश हवन करें तो यह मन्त्र सिद्ध होता है, फिर किसी भी कार्य के लिए 108 बार जप करने से साधक को अभीष्ट की प्राप्ति होती है।

बालक ग्रह नाशक टोटके

1. बालछड़ की माला बनाकर गले में धारण कराने से नैगमेय ग्रह से ग्रसित बालक शीघ्र त्राण पा जाता है।
2. नैगमेय ग्रह से ग्रसित बालक को गूलर या महुए की तरह दूधवाले वृक्ष के नीचे ले जाकर स्नान करायें और यह मंत्र पढ़ें जिसका मुख बकरे के समान है, जो अपने इच्छानुसार अनेकों रुप को धारण कर सकते हैं। बालकों की रक्षा करने वाले तथा जिनके नेत्र और भौहें चंचल हैं, ऐसे नैगमेय देव इस बालक की रक्षा करें।

हनुमान सिद्धि का

॥ मन्त्र ॥

उलटा बीर।
बजरंग का पाँव कर॥
नींसम कवटाल खाय।
बारा कोस आघाड़॥
सम तेरा कोस।
पिच्छाड्सम॥
आन पोहोंच रे उलटा।
बीर बजरंग का पाँव॥
जहाँ है वहाँ से लाव।
इस काया पिण्ड॥
के बाला कू।
नव नाड़ी से॥
बहात्तर कोठड़ी से।
रोम-रोम से॥
चाम-चाम से।
गुद-गुद से॥
पकड़ के लाव।
मेरी भक्ति॥
गुरु की शक्ति।
फुरो मन्त्र॥
ईश्वरी वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की साधना 41 दिन की है, हनुमान विषयक सभी नियमों को मानते हुए किसी मंगलवार या शनिवार से यह साधना शुरु करें, सर्व प्रथम साधक हनुमान जी की प्रतिमा को किसी साफ–स्वच्छ कमरे में रखकर विधिवत प्राण–प्रतिष्ठा करें, फिर दायें हाथ से किसी पात्र में कुएँ का जल लाकर मुर्ति को स्नान

करावें, स्नान के लिए जिस पात्र में जल लायें उस पात्र को तब तक जमीन में न रखें जब तक स्नान न करा चुकें, फिर स्नान के बाद पात्र रखकर हल्दी, कुंकुम, आक के फूल, शक्कर से निर्मित नैवेद्य, सिन्दूर, उड़द के 21 दानों से यथा विधि पूजन कर, एक आटे के दीपक में पाँच बत्तियाँ डाल कर शुद्ध घी से प्रज्वलित करें, तथा कपूर–गुग्गल की धूप दें, सवा किलो आटे का रोट बनाकर उसके ऊपर पंचमुखी दीपक रखें, फिर 1 माला का जप नित्य करें, जपांत में दशांश हवन करें। 41 दिन के इस अनुष्ठान में हनुमान जी किसी न किसी रुप में दर्शन देकर साधक की इच्छा पूरी करते हैं।

हनुमान सिद्धि के लिए

॥ मन्त्र ॥

हे हनुमान की सूरत।
हाजिरहो ब-हक राम-
चन्द्र जी महाराज॥

॥ विधि ॥

यह पवन पुत्र श्री हनुमान जी की सिद्धि का 40 दिनों का अनुष्ठान है, साधक इन दिनों ब्रह्मचर्य व्रत रखें तथा हनुमान जी विषयक सभी नियमों का विशेष ध्यान रखें, सर्वप्रथम स्नान कर स्वच्छ लाल वस्त्र पहन किसी एकान्त स्वच्छ कमरे में कुश या ऊन के आसन पर बैठें (यदि मृगछाला या बाघम्बर हो तो अति उत्तम है) जिस स्थान पर आसन बिछा हो उसके चारों ओर "शिंगरफ" से एक गोला (वृत) खींच लें उस घेरे के अन्दर ही साधना करें यह साधना रात्रि 12 बजे से शुरु करें, साधना से पूर्व अपने माथे पर सिंदूर का टीका लगा लें और थोड़ी–सी लौंग इलायची अपने पास रख लें फिर एकाग्रचित होकर प्रतिदिन पाँच सहस्त्र (5000) का जप एक ही बैठक में करें। साधना प्रारम्भ के एक सप्ताह से ही इसका प्रभाव दिखाई देने लगता है साधक के सामने अनेक डरावनी आकृतियां दिखने लगती हैं, पर साधक अपने सुरक्षा घेरे के बाहर कदापि न निकलें अन्यथा उन्हें हानि उठानी पड़ सकती है, निडर हो जप करते रहें 40 दिन के पूरे होने पर श्री हनुमान जी स्वयं साधक से पूछेंगे की "तू क्या चाहता है" तब साधक उनसे विनती करें और यह वचन देने के लिए कहें कि "जब मैं कभी भी इच्छा करुँ तब आप प्रकट हो मेरी मनोकामना पूर्ण करें" इस साधना के फल में श्री हनुमान जी की कृपा सदैव साधक पर रहती है, सिद्धि के बाद साधक इस सिद्धि के बारे में किसी को न बताये तथा हमेशा जन कल्याण के लिए ही दृढ़ संकल्प रहे अन्यथा सिद्धि समाप्त हो जाती है।

श्री हनुमान दर्शन का

॥ मन्त्र ॥

हनुमान जाग।
किलकारी मार॥
तूँ हुकारे।
राम काज संवारे॥
औढ़ सिंदूर सीता मइया का।
तूँ प्रहरी राम द्वारे॥
मैं बुलाऊँ, तूँ अब आ।
राम गीत तूँ गाता आ॥
नहीं आये हनुमाना-।
तो राजा राम-॥
सीता मइया की दुहाई।
मन्त्र सांचा फुरै खुदाई॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान 40 दिन का है, इसे कभी भी मंगलवार से हनुमान जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए दो माला प्रतिदिन रात्रि को जप करें तो हनुमान जी किसी भी रुप में साधक को दर्शन देकर उसकी मन की इच्छा पूर्ण करते हैं।

बालग्रह की शान्ति के लिए टोटका

हाथी के दाँतों में लगी हुई थोड़ी मिट्टी लेकर उसमें गोरोचन मिलायें और चंदन बनाकर बच्चे के सिर पर उसका त्रिपुंड लगा दें, तो उसके अनेक प्रकार के रोग तता बालग्रह शान्त हो जायेंगे।

सम्पूर्ण ग्रह की शान्ति के लिए टोटका

मूँग की दाल को बकरी के मूत्र में भिगो दें। प्रातः काल उसे पीसकर मुगौड़ी बनाकर सुखा लें। जो बच्चा बीमार या किसी ग्रह से ग्रसित हो रहा हो, तो उसके शरीर में उबटन लगाते वक्त, किसी लेप की दवा शरीर पर लगाते वक्त, धूप देने के समय पानी या दवा पिलाने के समय या स्नान कराते समय उस जल में ही मुगौड़ी का एक टुकड़ा मिला देने से सभी प्रकार के रोग या बाल ग्रह मिट जाते हैं।

हनुमान सिद्धि के लिए

॥ मन्त्र ॥

ॐ हँ हनुमते नमः।
हनुमान पुकारे॥
वज्र फोड़ू।
सात समुंदर लंका तोड़ू।
कहाँ हैं लंका ?
कहाँ है आकाश ?
आकाश बैठे।
आकाश फाटे॥
धरतरी बैठे।
धरतरी फाटे॥
श्री राम सरीखा मित्र कीजे।
पाँच पान का बीड़ा दीजे॥
श्री हनुमन्त जी हमारे।
काजकू आईजे॥
हमारे कार्ज सिद्ध कीजे।
चलो मन्त्र॥
भगवन्त वाच्छा पूरी छू॥

॥ विधि ॥

पवन–पुत्र हनुमान जी की सिद्धि का अनुष्ठान 21 दिन का है, साधक हनुमान जी विषयक समस्त नियम मानें, किसी भी शुभ मुहुर्त पर साधना शुरु कर निश्चित समय, एक ही स्थान पर प्रतिदिन 2 माला का जप तथा दशांश हवन करें। पहले दिन हनुमान जी के मंदिर जाकर तेल, सिन्दूर, दही–भात नैवेद्य, पुष्प, फल, धूप, दीप आदि से बजरंगी का यथा–शक्ति पूजन करें और मन्त्र सिद्धि के लिए उनकी प्रार्थना करें। 21 दिनों की साधना के बाद हनुमान किसी भी रुप में दर्शन देते हैं, साधक उनसे इच्छित वर माँग लें, तथा भय प्रद आकृति अगर दिखे तो साधक डरे नहीं, तथा घर मैं ''रजस्वला'' ''अशौच'' हो तो साधना कदापि न करें, हो सकता है, साधना के समय में बड़े–बड़े बन्दर रास्ते रोकें, भयंकर आवाज़ें सुनाई दें, साँप आदि दिखें अतः साधक अत्यन्त सावधानी से साधना करें।

हनुमान सिद्धि के लिए

॥ मन्त्र ॥

ॐ बजरु साले।
बजरु साले? ॥
उन पर खैर।
उनकी माता जोगणसरी॥
उनका बेटा।
आम्या वेजाल॥
आदेश नमो गुरु जी कू।
नव-नाथ, चौरासी सिद्धन कू॥
अलटन भेद, पलटन काया।
हाँक मारता, हनुमान आया॥
गाँजता आया, घोरता आया।
बिजली कवाड़े, फोड़ता आया॥
लोहे के चने चबाता आया।
तेल-सिंदूर, लाल लंगोट॥
अपनी पूजा लेना।
श्याम सवेरे हमकू दरशन देना॥
चलो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।
वाच्छा पुरी छू॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की साधना 21 दिनों की है, साधक इस मंत्र की सिद्धि के लिए, पिछली विधि की तरह ही यह अनुष्ठान सम्पन्न करें।

वातज्वर नाशक टोटका

तुलसी के पौधे को एक रोज पूर्व ही निमंत्रित कर रविवार के दिन उसकी जड़ को उखाड़ लें और उसे लाल सूत में लपेट 107 बार निम्नलिखित मंत्र से अभिमंत्रित कर रोगी की शिखा में बाँध दें, तो उसका ज्वर नष्ट हो जायेगा। मन्त्र इस प्रकार है– 'ओं कुरु वन्दे अमुकस्य (अमुकस्य शब्द को हटाकर रोगी का नाम लेना चाहिए) ज्वरं नाशाय नाशाय ह्रीं स्वाहा।'

हनुमान जी का "विचित्र"

॥ मन्त्र ॥

ओं नमो आदेश गुरु को।
हो हनुमन वीर॥
बसती नगरी, कल करता।
जेहु कहु, जेहु चेतु॥
जेहु मांगु, ओं जो न करें।
जो न करावै।
अंजनी का सीधा पाँव धरेगा।
अंजनी का चूसा दूध हराम करेगा॥
नेलती खेलती की वाचा चूके।
गौतम रुखै॥
सर का कमण्डला पानी सूखै।
चलो मन्त्र, गौतमी वाचा॥

॥ विधि ॥

यह मन्त्र अत्यधिक भय–प्रद है, अतः इसकी साधना गुरु के दिशा निर्देशन में ही करें, इसकी सिद्धि से स्वयं देवता प्रत्यक्ष होकर अपनी कार्य विधि व्यक्त करता है, इस मन्त्र के प्रयोग कर्ता को त्यागी होना चाहिये तथा किसी को भी दृष्टि भरकर नहीं देखना चाहिये।

रात्रि ज्वर में टोटका

1. सूर्य के उदय होने से जिस प्रकार अंधेरा खत्म हो जाता है उसी प्रकार मकोय की जड़ को कान में बाँधने से बहुत दिनों से नियमपूर्वक रात्रि में आनेवाला ज्वर नष्ट हो जाता है, इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं।
2. बिस (कमल की जड़) के टुकड़ों को सायंकाल सिर पर धारण करने से रात में आनेवाला ज्वर मिट जाता है।

विषम ज्वरनाशक टोटका

1. सफेद धतूरे की जड़ को रविवार के दिन उखाड़ दाहिने हाथ में बाँधने से उसी दिन रोगी विषम ज्वर से मुक्त हो जाता है।
2. शिवलिंगी बूटी के 107 बीजों को एक पीले कपड़े की थैली में भर गले में लटकाने से पुराना विषम ज्वर का आना रुक जाता है और दुर्बल शरीर में पुनः रक्त का संचार होने लगता है।

श्री हनुमान जी की सिद्धि का

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो भगवते हनुमन्त्ते।
जगत्प्राण नन्द नाय ज्वलित॥
पिंगल लोच्च नाय सर्व आकर्षण।
कारणाया कर्ष याकर्षय॥
आनय-आनय-आनय।
"अमुकं" दर्शन-दर्शन॥
कर्षय-कर्षय-कर्षय।
राम दूताय आनय॥
आनय-आनय।
राम आज्ञापयति स्वाहा॥

॥ विधि ॥

यह सर्व–सिद्धि कारी केरल भाषा का हनुमच्छवार (हनुमतशाबर) मंत्र है, इस मन्त्र का अनुष्ठान रविवार की रात्रि को हनुमान जी की प्रतिमा को सिंदूर का चोला, जनेउ, खड़ाउँ, लंगोट, लड्डू, नारियल और ध्वजा चढ़ाकर पूजा–जप आदि कार्य आरम्भ करें, इसके अनुष्ठान में शुद्ध धूप का प्रयोग करें, इस तरह 21 दिन में 42000 जप पूरा करें, तथा पाँच बटुकों को भोजन करायें तो रात को स्वप्न में श्री हनुमान जी दर्शन देकर, साधक को आर्शीवाद प्रदान करते हैं।

इस तरह देवता की प्रसन्नता से यह मन्त्र सिद्ध होता है। फिर साधक नदी के मध्य में सूर्य बिम्ब पर अर्ध्य देता हुआ हजार मन्त्र का जप करें तो उस नदी में रहने वाले, मच्छ, कच्छ आदि जल जन्तु निश्चय ही साधक के पास आ जाते हैं, तथा अपने बायें पाँव की धूल साधक अपने बायें हाथ से लेकर इस मन्त्र का हजार बार जप करके यदि स्त्री, इस धूल को प्रातः काल जल में मिलाकर अपने पति को पिला देवे तो उसका पति गुलाम की तरह कार्य करता है।

शीतज्वर नाशक टोटका

शीतज्वर से परेशानी में, स्त्री के ऋतुधर्म के कपड़े को जलाकर उसकी धूनी देने से ज्वर रुक जाता है।

हनुमान सिद्धि के लिए

॥ मन्त्र ॥

करु कामन चलै।
नाटक व चैण्टक से चले॥
हनुमान के अखाड़े से चले।
बावन सौ वीर, चौदह॥
मसान चलें, ना चलें, ।
तो बीबी फात्मा खातून॥
के पाक दामन की दुहाई॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की साधना 21 दिन की है, साधक श्री हनुमान विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए, शनिवार के दिन किसी समय कुम्हार के घर से, बर्तन बनाने वाला डोरा (जिससे कुम्हार चाक के ऊपर से काटकर गीले बर्तन नीचे रखता) तथा बर्तन बनाने वाली गीली मिट्टी और जिसमें कुम्हार हाथ धोता है उस पात्र का थोड़ा पानी चुरा लायें, इस क्रिया को करते समय किसी से बात न करें, यह बे–टोक होनी चाहिये, अब इसी शनिवार या दूसरे शनिवार को उक्त गीली मिट्टी की छोटी–छोटी 108 गोलियाँ बनावें, अगर मिट्टी सूख गई हो तो जो चुराया हुआ पानी लायें है उसी से मिट्टी को साने अन्य पानी का प्रयोग न करें, गोलियों को बनाकर ढक कर रख देवें, और यह ध्यान रहे कि इन गोलियों में दरार न पड़े, तथा स्वयं की छाया न पड़े, सुविधा के लिए ज्यादा गोलियाँ बनालें ताकी 1 अच्छी माला तैयार हो सके, गोलियाँ बनाकर बीच से दबा दें जिससे वह चौड़ी हो जाएगी, गोलियों के बीच में कौए के पंख से छेद कर सुखा लें, फिर कुम्हार के उस धागे में इन सूखी हुई गोलियों को पिरोयें, धागा छोटा हो तो एक तरफा कर दें, धागे में बिना दरार की व सही सलामत गोली ही पिरोयें पिरोने के बाद किसी मिठाई आदि के डिब्बे में स्वच्छ कपड़ा रखकर या स्वच्छ रुई के ऊपर रखें ताकि माला टूटे नहीं।

फिर किसी भी शनिवार से साधना शुरु करें, यदि शुक्ल पक्ष हो तो उत्तम है, साधना के लिए एकान्त स्थान हो जहाँ पर प्रातः काल सूर्य भगवान् निकलते हुए स्पष्ट दिखें, साधना के लिए साफ–स्वच्छ कपड़ा पहन के रखें, ''आसन'' के लिए एक नया आसन का कपड़ा और पूजन सामग्री रखने के लिए एक और कपड़ा, नैवेद्य में पाँच प्रकार की सूखी मिठाइयाँ, एक नारियल का सूखा गोला (गरी) होना

चाहिये। अब आप सूर्योदय से पहले ही स्नान कर साफ स्वच्छ कपड़े पहन कर पूजन सामग्री माला आदि लेकर साधना स्थल पर जायें, और वहाँ जाकर सूर्योदय से पूर्व, अपने सारे वस्त्र उतार कर स्वच्छ आसन बिछा कर बैठें, पूजन सामग्री को सामने कपड़ा बिछाकर उसके ऊपर रखें, जैसे ही सूर्य भगवान् निकलते हुए दिखें उसी समय वह मिट्टी की माला लेकर जप प्रारम्भ कर दें, ''माला'' के दानों को सावधानी से स्पर्श करते हुए जप करें, हाथ में लटकाने की वजह से टूट भी सकता है अतः हाथ में लटका कर न जपें, साधना के बाद ''माला'' को सावधानी से डिब्बे में रख लेवें, तथा समस्त पूजन सामग्री आदि को अलग किसी थैले में रख लें, इसी तरह लगातार 21 दिनों तक यह क्रिया करने पर हनुमत दर्शन होंगे, डरें नहीं अगर कुछ चमत्कार होने लगे तो, साधक निर्भयता से जप पूरी कर माला रखकर, बायें हाथ में सूखे हुए नारियल के गोले को लेकर, दायें हाथ की मुट्ठी से दो टुकड़े कर, एक टुकड़ा हनुमान जी को अर्पण करें और दूसरा टुकड़ा तथा शेष पूजा सामग्री एक डिब्बे में अच्छी तरह बंद करके रखें और डिब्बे को बाहर की ओर से अच्छी तरह सील करके किसी ऐसे जगह में गाड़ दें जहाँ धूप या पानी न जाये, जब तक यह सामग्री गड़ी रहेगी तब तक हनुमत कृपा साधक पर बनी रहेगी तथा स्मरण करने पर इच्छित कार्य पूर्ण करेंगे।

बाल-रोग नाशक टोटका

1. पत्थरचूर की जड़ को ताम्बे के ताबीज में बन्द कर और उसे लाल डोरे से बाँधकर, बच्चे के गले में लटकाने से दाँत निकलने में कष्ट नहीं होता और पीला, हरा एवं लाल दस्त भी बन्द हो जाता है।
2. कपड़े की थैली में कौवे की बीठ बाँधकर बालक के गले में लटका देने से खाँसी आराम हो जाती है और यदि रविवार के दिन, बीठ वाली थैली बालक के गले में लटकायी जाये तो बालक का कव्वा उठ आता है।
3. सीपियों की माला बच्चे के गले में पहनाने से दाँत आसानी से निकल आते हैं।
4. दूध पिलाने वाली माँ या धाय के कपड़े में से एक टुकड़ा कपड़े का काट, पानी में भिगो बालक के माथे पर रखने से हिचकी आराम होती है।
5. लोहे या ताम्बे का कड़ा हाथ-पैरों में पहनाने से बच्चों के दाँत आसानी से निकल आते हैं और दृष्टि-दोष नहीं लगने पाता।
6. सम्भालू की जड़ गले में बाँधने से बिना कष्ट दाँत निकला आते हैं।
7. सिरस के बीजों में छेद कर, धागे में पिरोकर माला बनायें और उसे बच्चे के गले में पहनायें। माला ऐसी होनी चाहिए कि वह बालक के सीने से बराबर छूती रहे। इससे बालक के दाँत बड़ी आसानी से निकल आते हैं।
8. पूरब दिशा में उपजी हुई सफेद सम्हालू की जड़ बालक के गले में बाँधने के दाँत उगने के समय की पीड़ा और पोतों का छिटकना आदि रोग नाश होते हैं।

चमत्कारी बजरंग बाण

॥ दोहा ॥

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करै हनुमान॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमन्त सन्त हितकारी।
सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी॥
जन के काज विलम्ब न कीजै।
आतुर दौरि महा-सुख दीजै॥
जैसे कूदि सिन्धु महि पारा।
सुरसा बदन पैठ विस्तारा॥
आगे जाई लंकिनी रोका।
मारे हु लात गई सुर लोका॥
जाय विभीषण को सुख दीन्हा।
सीता निरखि परम पद लीन्हा॥
बाग ऊजारि सिन्धु महँ बोरा।
अति आतुर यम कातर तोरा॥
अक्षय कुमार को मार संहारा।
लूम लपेट लंक को जारा॥
लाह समान लंक जरि गई।
जय-जय ध्वनि सुर पुर में भई॥
अब विलम्ब केहि कारण स्वामी।
कृपा करहु प्रभु अन्तरयामी॥
जय-जय लक्ष्मण प्राण के दाता।
आतुर होय दुःख करहु निपाता॥
जय गिरिधर जै जै सुख सागर।
सुर समूह समरथ भट नागर॥
ॐ हनु-हनु हनुमन्त हठीले।
वैरिहिं मारु वज्र की कीले॥
गदा वज्र लै बैरिहिं मारो।

महाराज प्रभु दास उचारो॥
सुनि उँकार हँकार दै धावो।
वज्र गदा हनु विलम्ब न लावो॥
ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमान कपीशा।
ॐ हुँ हुँ हुँ हनु उर शीशा॥
सत्य होहु हरि सत्य पाय कै।
राम दूत धरु मारु धाय के॥
जय-जय-जय हनुमन्त अनन्त अगाधा।
दुःख पावत जन केहि अपराधा॥
पूजा जप तप नेम आचारा।
नहीं जानत है दास तुम्हारा॥
वन-उपवन मग गिरि गृह माँही।
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥
पाँय परौं कर जोरि मनावौं।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥
यह अंजनि कुमार बलवन्ता।
शंकर स्वयं वीर हनुमन्ता॥
बदन कराल काल कुल घातक।
राम सहाय सदा प्रति पालक॥
भूत-प्रेत-पिशाच निशाचर।
अग्नि बैताल वीर मारी मर॥
इन्हें मारु तोहि शपथ राम की।
राखु नाथ मर्याद नाम की॥
जनक सुता हति दास कहावो।
ता की शपथ विलम्ब न लावो॥
जय-जय-जय धुनि होत अकाशा।
सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा॥
चरण पकरि कर जोरि मनावौं।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥
उठु-उठु चलु तोहि राम दोहाई।
पाँय परौं कर जोरि मनाई॥
ॐ-चं-चं-चं-चं-चपल चलंता।
ॐ-हनु-हनु-हनु-हनु-हनुमन्ता॥

ॐ-हँ-हँ-हाँक देते कपि चंचल।
ॐ-सं-सं-सहमि पराने खल दल॥
अपने जन को तुरत उबारो।
सुमिरत होय आनन्द हमारो॥
यह बजरंग बाण जेहि मारे।
ताहि कहौ फिर कौन उबारे॥
पाठ करें बजरंग बाण की।
हनुमत रक्षा करैं प्राण की॥
यह बजरंग बाण जो जापै।
ताते भूत-प्रेत सब काँपै॥
धूप देय अरु जपै हमेशा।
ताके तन नहीं रहै क्लेशा॥
उर प्रतीति दृढ़ शरण कर।
पाठ करै धरि ध्यान॥
बाधा सब हर, करैं सब-।
काम सफल हनुमान॥

॥ दोहा ॥

प्रेम प्रतीतिहि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान श्रद्धा और निष्ठापूर्वक रह कर किसी भी शनिवार या मंगलवार के दिन प्रारम्भ करें सबसे पहले संकट मोचन हनुमान जी की प्रतिमा जप के समय अपने सामने रखें, ऊनी या लाल रंग के कपड़े का आसन प्रयोग करें, पूजन के समय शुद्ध घी गाय का उपयोग में लायें। चन्दन, रक्त पुष्प, धूप आदि का उपयोग करें, जप के समय इस मन्त्र से ध्यान स्तुति करें।

अतुलित बलधामं हेमशैलाभदेहं।
दनुज वन कृषानुं ज्ञानि नाम ग्रगण्यम्॥
सकल गुणनिधानं वानराणाम धीशं।
रघुपतिप्रिय भक्तं वातजातं नमामि॥
श्री हनुमान जी की जय॥

इस बजरंग बाण का इस प्रकार अनुष्ठान, जप करने से साधक के प्रत्येक कार्य श्री हनुमान जी की कृपा से सिद्ध होते हैं और भूत–प्रेत का प्रकोप, दारिद्रता, दुर्भाग्य का अन्त होता है।

हनुमान सिद्धि के लिए

॥ मन्त्र ॥

ॐ हँ हनुमते नमः।
हनुमान पुकारो॥
वज्र फोड़ू।
सात समुंदर लंका तोड़ू।
कहाँ है लंका ?
कहाँ है आकाश ?
आकाश बैटे।
आकाश फाटे॥
धरतरी बैठे।
धरतरी फाटे॥
श्री राम सरीखा मित्र कीजे।
पाँच पान का बीड़ा दीजे॥
श्री हनुमन्त जी हमारे।
काजकू आईजे॥
हमारे कार्ज सिद्ध कीजे।
चलो मन्त्र॥
भगवन्त वाच्छा पूरी छू॥

॥ विधि ॥

पवन–पुत्र हनुमान जी की सिद्धि का अनुष्ठान 21 दिन का है, साधक हनुमान जी विषयक समस्त नियम मानें, किसी भी शुभ मुहुर्त पर साधना शुरु कर निश्चित समय, एक ही स्थान पर प्रतिदिन 2 माला का जप तथा दशांश हवन करें। पहले दिन हनुमान जी के मंदिर जाकर तेल, सिन्दूर, दही–भात नैवेद्य, पुष्प, फल, धूप, दीप आदि से बजरंगी का यथा–शक्ति पूजन करें और मन्त्र सिद्धि के लिए उनकी प्रार्थना करें। 21 दिनों की साधना के बाद हनुमान किसी भी रुप में दर्शन देते हैं, साधक उनसे इच्छित वर माँग लें, तथा भय प्रद आकृति अगर दिखे तो साधक डरे नहीं, तथा घर मैं ''रजस्वला'' ''अशौच'' हो तो साधना कदापि न करें, हो सकता है, साधना के समय में बड़े–बड़े बन्दर रास्ते रोकें, भयंकर आवाज़ें सुनाई दें, साँप आदि दिखें अतः साधक अत्यन्त सावधानी से साधना करें।

सर्व-कार्य सिद्धिदाता हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ पीर बजरंगी।
राम-लक्ष्मण के संगी॥
जहाँ-जहाँ जायें।
फतह के डंके बजायें॥
दुहाई माता।
अंजनी की आन॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र को ग्रहण-काल में श्री हनुमान विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए अनगिनत जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय जब आप को किसी से अपना कोई कार्य करवाना हो तब कार्य प्रारम्भ करने से पहले या अभिलाषित व्यक्ति के पास जाते समय इस मन्त्र को जपते हुए जायें तो कार्य की सिद्धि होगी।

हनुमान जी की कृपा पाने के लिए

॥ मन्त्र ॥

मा मुगनर,
बनर-कमर,
गासा नासे,
स्वाहा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान 21 दिन का है, साधक श्री बजरंग बली विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन 11 माला का जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर इस सिद्धि में हनुमान जी दर्शन देकर साधक की मनोकामनाएं पूरी करते हैं।

हनुमान जी को प्रसन्न करने का

॥ मन्त्र ॥

अरे-अरे
अंजनी
कुमारा!
मारु-मार।
जाल-जाल॥
कोट-कोट॥
बन्द-बन्द॥
पूर्व-बन्द।
पश्चिम बन्द॥
उत्तर-बन्द।
दक्षिण-बन्द॥
आकाश-बन्द।
पाताल-बन्द॥
ताल के देव बन्द।
शब्द सांचा॥
पिण्ड कांचा।
फुरो मन्त्र॥
ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

सर्व प्रथम इस मन्त्र को ग्रहण–काल में 11 माला जप कर सिद्ध कर लें, हनुमान जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए हनुमान मन्दिर या उनकी प्रतिमा स्थापित कर प्रतिदिन यथा शक्ति पूजन तथा 10 माला का जप एवं दशांश हवन करें, यह क्रिया नित्य करते रहने से कुछ ही दिनों में हनुमान जी प्रसन्न होकर साधक की मनोकामना पूर्ण करते हैं।

सर्व-कार्य सिद्धि दाता हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ विनायक कण्ठा बेठो आय।
सबके पहली सिमर सूँ भूल्या॥
राय बताय, अंजनी-पुत्र, पवन-।
पुत्र, सूद-पुत्र, मैं हुंकारु॥
जद ही आओ, मेरा काम।
सिद्ध कर ल्यावो, हनुमान।
बजर की काया, जद हुँकारूँ।
जद ही धाया, मैं जाणू पारी-॥
जातः, तू जलम्यो अमावस।
की रातः. लूँग-सुपारी-जायफल-॥
तीनू पूजा लेय, सीध पैरूँ।
बैठ के तीधारा खाण्डा लेय॥
अटक-अटक लंका-सा कोट।
समुद्र-सी खाई, लोह की कील॥
बजर का ताला, आ बैठ हनुमन्त।
वज्र रखवाला, आव हनुमन्त।
जल्दी आव, हमारा काम सिद्ध।
करि ल्याव, शब्द सांचा। पिण्ड कांचा॥
चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान 41 दिन का है, साधक श्री हनुमान जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन एक माला का जप व दशांश हवन करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा।

यह अनुष्ठान किसी भी मंगलवार से शुरु कर सकते हैं। अब आप किसी .कार्य के शुभारम्भ में या किसी अन्य कार्यों के समय इस मन्त्र की एक माला जपें तो समस्त कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होंगे।

सम्पूर्ण संकट मोचन सिद्ध

॥ पाठ ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

बाल समय रवि भक्षलियो।
तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो॥
ताहि सो त्रास भयो जग को।
यह संकट काहु सो जात न टारो॥
देवन आनि करी विनती तब॥
छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो॥
को नहिं जानत है जग में
कपि संकट मोचन नाम तिहारो॥
बालि की त्रास कपीस बसै।
गिरि जात महा-प्रभु पंथ निहारो॥
चौकि महा मुनि साप दियो तब।
चाहिय कौन विचार विचारो॥
कै द्विज रुप लिवाय महा-प्रभु।
सो तु दास के शोक निवारो॥
अंगद के संग लेन गये सिय।
खोज कपीस यह बैन उचारो॥
जीवत ना बचिहौ हमसों जु।
बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो॥
हेरि थके तट सिन्धु सबै तब।
लाय सिया सुधि प्राण उबारो॥
रावण त्रास दई सिय को।
सब राक्षसि सो कहि शोक निवारो॥
ताहि समय हनुमान महा-प्रभु।
जाय महा रजनीचर मारो॥
चाहत सीय अशोक सों आगि सु।
दै प्रभु मुद्रिका शोक निवारो॥

बान लग्यो उर लछिमन के तब।
प्राण तजे सुत रावण मारो॥
लै गृह वैद्य सुखेन समेत।
तबै गिरि द्रोण सुबीर उपारो॥
आनि सजीवन हाथ दई तब।
लक्षिमन के तुम प्राण उबारो॥
रावण जुद्ध अजान कियो तब।
नाग का फाँस सबै सिर डारो॥
श्री रघुनाथ समेत सबै दल।
माँहि भयो यह संकट भारो॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु।
बन्धन काटि सुत्रास निवारो॥
बन्धु समेत जबै अहिरावण।
लै रघुनाथ पाताल सिधारो॥
देविहि पूजि भली विधि सौं।
बलि देऊँ सबै मिलि मन्त्र विचारो॥
जाय सहाय भयो तब ही।
अहि रावण सैन्य समेत संहारो॥
काज किये बड़ देवन के तुम।
बीर महा-प्रभु देखि बिचारो॥
कौन सो संकट मोर गरीब को।
जो तुमसे नहिं जात है टारो॥
बेगि हरो हनुमान महा-प्रभु।
जो कुछ संकट होय हमारो॥

॥ दोहा ॥

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपिसूर॥

॥ विधि ॥

यह पाठ हनुमान चालीसा की भाँति ही सरल भाषा में है और इसका अनुष्ठान मानव के समस्त संकटों का शमन करता है, इसे प्रतिदिन संध्या में 21 बार पढ़ते हैं एवं 21 दिन तक करते हैं।

इसे प्रतिदिन या 40 दिनों तक पढ़ने से विशेष लाभ होता है।

संकट मोचन स्तोत्रम्

काहे विलम्ब करो अंजनी-सुत।
संकट बेगि में होहु सहाई॥
नहिं जप जोग न ध्यान करो।
तुम्हरे पद पंकज में सिर नाई॥
खेलत खात अचेत फिरौं।
ममता-मद-लोभ रहे तन छाई॥
हेरत पन्थ रहो निसि वासर।
कराण कौन विलम्बु लगाई॥
काहे विलम्ब करो अंजनी सुत।
संकट बेगि में होहु सहाई॥
जो अब आरत होइ पुकारत।
राखि लेहु यम फाँस बचाई॥
रावण गर्वहने दश मस्तक।
घेरि लंगूर की कोट बनाई॥
निशिचर मारि विध्वंस कियो।
घृत लाइ लंगूर में लंक जराई॥
जाइ पाताल हने अहिरावण।
देविहिं टारि पाताल पठाई॥
वै भुज काह भये हनुमन्त।
लियो जिहि ते सब संत बचाई॥
औगुन मोर क्षमा करु साहेब।
जानिपरी भुज की प्रभुताई॥
भवन अधार बिना घृत दीपक।
टूटि परे यम त्रास दिखाई॥
काहि पुकार करो यहि औसर।
भूलि गई जिय की चतुराई॥
गाढ़ परे सुख देत तुहीं प्रभु।
रोषित देखि के जात डेराई॥
छाड़े हैं माता पिता परिवार।
पराई गही शरणागत आई॥

बान लग्यो उर लछिमन के तब।
प्राण तजे सुत रावण मारो॥
लै गृह वैद्य सुखेन समेत।
तबै गिरि द्रोण सुबीर उपारो॥
आनि सजीवन हाथ दई तब।
लक्षिमन के तुम प्राण उबारो॥
रावण जुद्ध अजान कियो तब।
नाग का फाँस सबै सिर डारो॥
श्री रघुनाथ समेत सबै दल।
माँहि भयो यह संकट भारो॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु।
बन्धन काटि सुत्रास निवारो॥
बन्धु समेत जबै अहिरावण।
लै रघुनाथ पाताल सिधारो॥
देविहि पूजि भली विधि सौं।
बलि देऊँ सबै मिलि मन्त्र विचारो॥
जाय सहाय भयो तब ही।
अहि रावण सैन्य समेत संहारो॥
काज किये बड़ देवन के तुम।
बीर महा-प्रभु देखि बिचारो॥
कौन सो संकट मोर गरीब को।
जो तुमसे नहिं जात है टारो॥
बेगि हरो हनुमान महा-प्रभु।
जो कुछ संकट होय हमारो॥

॥ दोहा ॥

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपिसूर॥

॥ विधि ॥

यह पाठ हनुमान चालीसा की भाँति ही सरल भाषा में है और इसका अनुष्ठान मानव के समस्त संकटों का शमन करता है, इसे प्रतिदिन संध्या में 21 बार पढ़ते हैं एवं 21 दिन तक करते हैं।

इसे प्रतिदिन या 40 दिनों तक पढ़ने से विशेष लाभ होता है।

संकट मोचन स्तोत्रम्

काहे विलम्ब करो अंजनी-सुत।
संकट बेगि में होहु सहाई॥
नहिं जप जोग न ध्यान करो।
तुम्हरे पद पंकज में सिर नाई॥
खेलत खात अचेत फिरौं।
ममता-मद-लोभ रहे तन छाई॥
हेरत पन्थ रहो निसि वासर।
कराण कौन विलम्बु लगाई॥
काहे विलम्ब करो अंजनी सुत।
संकट बेगि में होहु सहाई॥
जो अब आरत होइ पुकारत।
राखि लेहु यम फाँस बचाई॥
रावण गर्वहने दश मस्तक।
घेरि लंगूर की कोट बनाई॥
निशिचर मारि विध्वंस कियो।
घृत लाइ लंगूर में लंक जराई॥
जाइ पाताल हने अहिरावण।
देविहिं टारि पाताल पठाई॥
वै भुज काह भये हनुमन्त।
लियो जिहि ते सब संत बचाई॥
औगुन मोर क्षमा करु साहेब।
जानिपरी भुज की प्रभुताई॥
भवन अधार बिना घृत दीपक।
टूटि परे यम त्रास दिखाई॥
काहि पुकार करो यहि औसर।
भूलि गई जिय की चतुराई॥
गाढ़ परे सुख देत तुहीं प्रभु।
रोषित देखि के जात डेराई॥
छाड़े हैं माता पिता परिवार।
पराई गही शरणागत आई॥

जन्म अकारथ जात चले।
हनुमान बिना नहिं कोउ सहाई॥
मझधारहिं मम बेड़ी अड़ी।
भवसागर पार लगाओ गोसाईं॥
पूज कोऊ कृत काशी गयो।
मह कोऊ रहे सुर ध्यान लगाई॥
जानत शेष-महेष-गणेश।
सुदेश सदा तुम्हरे गुण गाई॥
और अवलम्ब न आस छुटै।
सब त्रास छुटे हरि भक्ति दृढ़ाई॥
संतन के दुःख देखि सहैं नहिं।
जान परि बड़ी वार लगाई॥
एक अचम्भो लखो हिय में।
कछु कौतुक देखि रहो नहिं जाई॥
कहुं ताल मृदंग बजावत गावत।
जात महा दुःख बेगि नसाई॥
मूरति एक अनूप सुहावन।
का वरणों वह सुन्दरताई॥
कुंचित केश कपोल विराजत।
कौन कली विच भौंर लुभाई॥
गरजै घनघोर घमण्ड घटा।
बरसै जल अमृत देखि सुहाई॥
केतिक क्रूर बसे नभ सूरज।
सूरसती रहे ध्यान लगाई॥
भूपन भौन विचित्र सोहावन।
गैर बिना वर बेनु बजाई॥
किंकिन शब्द सुनै जग मोहित।
हीरा जड़े बहु झालर लाई॥
संतन के दुःख देखि सको नहिं।
जान परि बड़ी बार लगाई॥
संत समाज सबै जपते सुर।
लोक चले प्रभु के गुण गाई॥
केतिक क्रूर बसे जग में।

भगवन्त बिना नहिं कोऊ सहाई॥
नहिं कछु वेद पढ़ो, नहि ध्यान धरो।
बनमाहिं इकन्तहि जाई॥
केवल कृष्ण भज्यो अभिअंतर।
धन्य गुरु जिन पन्थ दिखाई॥
स्वारथ जन्म भये तिनके।
जिन्ह को हनुमन्त लियो अपनाई॥
का वरणों करनी तरनी जल।
मध्य पड़ी धरि पाल लगाई॥
जाहि जपै भव फन्द कटैं।
अब पन्थ सोई तुम देहु दिखाई॥
हेरि हिये मन में गुनिये मन।
छूटि गयो जिय काह समाई॥
साँस चले पछितात सोई तन।
जात चले अनुमान बड़ाई॥
यह जीवन जन्म है थोड़े दिना।
मोहिं का करि है यम त्रास दिखाई॥
काहि कहै कोऊ व्यवहार करै।
छलछिद्र में जन्म गवाँई॥
रे मन चोर तू सत्य कहा अब।
का करि हैं यम त्रास दिखाई॥
जीव दया करु साधु की संगत।
लेहि अमर पद लोक बड़ाई
रहा न औसर जात चले।
भजिले भगवन्त धनुर्धर राई॥
काहे विलम्ब करो अंजनी-सुत।
संकट बेगि में होहु सहाई॥

॥ विधि ॥

यह स्तोत्र पाठ विभीषण जी ने कहा था, और श्री गरुड़ जी ने इसका अनुष्ठान करके प्रमाणित किया था। यह स्तोत्र ''सुदर्शन संहिता'' में दिया हुआ है। इसके नित्य पाठ से श्री हनुमान जी की साधक पर विशेष कृपा रहती है इस स्तोत्र के प्रभाव से साधक की सम्पूर्ण कामनाएँ पूरी होती हैं।

सिद्ध हनुमान

॥ जंजीरा ॥

ॐ वीर बज्र हनुमताय नमः
चलो राम दूताय नमः
चलो बाँध लोहे का गदा
वज्र का कछौटा
पान-तेल-सिंदूर की पूजा
ओं खं खं खं खट पवन पतंग।
ओं चं चं चं कहसि कुबेर
भैरव कील, मसान कील।
देव कील, दानव कील, दैत्य-
कील, ब्रह्म-राक्षस कील।
छल-छिद्र मेंद कील, नाफ-
की तिजारी कील, देव-अचल-
चल कील, पृथ्वी कील, मेघ-
कील, मेरे ऊपर घात करे।
छाती फाट के मरैं, माता-
अंजनी की दुहाई, सूर्य-वंशी-
राजा राम चन्द्र की दुहाई।
जती लक्ष्मण की दुहाई।
शब्द साँचा, पिण्ड काँचा।
फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

यह सिद्ध हनुमान जंजीरा है, जो साधक इस जंजीरे का नित्य जाप श्री हनुमान जी विषयक सभी नियमों को ध्यान में रख श्रद्धा से करता है। तो श्री बजरंगी जी की साधक पर असीम कृपा बनी रहती है तथा उसके समस्त संकट नाश होते हैं।

हनुमद् बीसा

॥ दोहा ॥

राम भक्त विनती करूँ, सुन लो मेरी बात।
दया करो कुछ मेहर उपाओ, सिर पर रखो हाथ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमन्त, जय तेरा बीसा।
कालनेमि को जैसे खींचा॥
करुणा परदो कान हमारो।
शत्रु हमारे तत्क्षण मारो॥
राम भक्त जय जय हनुमन्ता।
लंका को थे किये विध्वंसा॥
सीता खोज खबर तुम लाए।
अजर अमर के आशिष पाए॥
लक्ष्मण प्राण विधाता हो तुम।
राम के अतिशय पासा हो तुम॥
जिस पर होते तुम अनुकूला।
वह रहता पतझड़ में फूला॥
राम-भक्त तुम मेरी आशा।
तुम्हें ध्याऊँ मैं दिन राता॥
आकर मेरे काज संवारो।
शत्रु हमारे तत्क्षण मारो॥
राम भक्त जय जय हनुमन्ता।
तुम्हरी दया से हम चलते हैं।
लोग न जाने क्यों जलते हैं॥
भक्त जनों के संकट टारे।
राम द्वार के हो रखवारे॥
द्विविधा मेरी तुरन्त मिटा दो॥
रुद्रावतार हो मेरे स्वामी।

तुम्हरे जैसा कोई नाहीं॥
ॐ हनु हनु हनुमन्त का बीसा।
बैरिहुं मारु जगत के ईशा॥
तुम्हरो नाम जहाँ पढ़ जावे।
बैरि व्याधि न नेरे आवे॥
तुम्हरा नाम जगत सुखदाता।
खुल जाता है राम दरवाजा॥
संकट मोचन प्रभु हमारो।
भूत-प्रेत-पिशाच को मारो॥
अंजनी-पुत्र नाम हनुमन्ता।
सर्व जगत् बजता है डंका॥
सर्व व्याधि नष्ट हो जावे।
हनुमद् बीसा जो कह पावे॥
संकट एक न रहता उसको।
हं हं हनुमंत कहता नर जो॥
ह्रीं हनुमन्ते नमः जो कहता।
उससे तो दुःख दूर ही रहता॥

॥ दोहा ॥

मेरे राम भक्त हनुमन्ता कर दो बेड़ा पार।
हूँ दीन मलीन कुलीन बड़ा करलो मुझे स्वीकार॥
राम-लखन-सीता सहित करो मेरा कल्याण।
संताप हरो तुम मेरे स्वामी, बना रहे सम्मान॥
प्रभु राम जी माता जानकी जी सदा हों सहाई।
संकट पड़ा यशपाल पे, तभी आवाज लगाई॥

॥ विधि ॥

यह पाठ परम पूज्य गुरुदेव योगीराज यशपाल जी कृत है, इस पाठ का नित्य जप करने से हनुमान जी की कृपा प्राप्त होती है तथा इस पाठ का प्रतिदिन 108 बार, इक्कीस दिन तक जप करने से हनुमान जी साक्षात दर्शन देते हैं।

हनुमान जी का सिद्ध

॥ जंजीरा ॥

ॐ गुरु जी
हनुमन्ता बलवन्ता
जेने तात तेल चडन्ता
जे नर आवे मार-
मार करन्ता
ते नर पाय पड़न्ता
इन्ह कहाँ से आयो ?
मेरु पर्वत से आयो
कोण लायो ?
गौरी-पुत्र गणेश लायो
कोण के काज ?
वीर हनुमान के काज
हनुमान बंका मारे डंका
गुरु चोट डकणी-साकणी
माथे हाँक वगाडे वीर हनुमन्ता
कागज-पत्र-रोल-सोल-मोल
जती-सती की मदद मति
संज्ञा माथे फारगती
चल-चल कर जहाँ पड़े डेरी
पड़े जले थले नवकुल
नाँग की आज्ञा फिरे
मेरा शब्द फिरे।
श्री रामचन्द्र की आज्ञा फिरे
सबद सांचा,
पण्ड कांचा
फुरो मन्त्र
ईश्वरी वाचा

झल-झल-महा-झल

बोलते की जीभ कील
चलते का पाँव कील
मारते का हाथ कील
देखते की नजर कील
मुए की कबर कील
भूत बाँध, पलीत बाँध
बाँधने वाला हनुमान
कहाँ से आया ?
कली कोट से आया
सब हमारा विघ्न
हरता आया
जैसा रामचन्द्र का
काज सुधार्या
तेसा काज हमारा सुधारो
मेरा शब्द फिरे
श्री रामचन्द्र की आज्ञा फिरे
शब्द सांचा, पण्ड कांचा
फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा

उत्तर खण्ड से जोगी आया
साथे हनुमान वीर लाया
अताल बाँधू, पाताल बाँधू
पर मन बाँधू चार मन बाँधु
चोरा बाँधू, चौंटा बाँधू
भूत बाँधू, चौंटा बाँधू
भूत बाँधू, पलीत बाँधू
डाकनी बाँधू, साकणी बाँधू
दश मस्तक वाला रावण बाँधू
सबद सांचा, पण्ड कांचा
चलो मन्त्र ईश्वरी वांचा

॥ विधि ॥

इस जंजीरे का नित्य हनुमान विषयक नियम मानते हुए जप करने से श्री हनुमान जी साधक की सर्व-प्रकार से रक्षा करते हैं तथा उसकी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं।

चोर पकड़ने के लिए हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो सत्तर सौ पीर।
चौंसठ सौ योगिनी॥
बावन सौ वीर।
बहत्तर सौ वीर।
बहत्तर सौ भैरों॥
तेरह सौ तन्त्रा।
चौदह सौ मन्त्रा॥
अठारह सौ परबत।
सत्तर सौ पहार॥
नौ सौ नदी।
निन्यानवें सौ नाला॥
यति हनुमन्त।
गोरखनाथ रखवाला॥
काँसे की कटोरी।
चार अंगुर चौड़ी॥
कहौ वीर कहाँ से चलाई ?
गिरनार परवत से चलाई।
अठारह भार वनस्पता॥
चल लोना चमारिन।
वाचा फूटे॥
काली कुम्हारी चाक।
ज्यों-ज्यों फिरै॥
कहाँ-कहाँ जाय ?
चण्डाल के घर जाय॥
तिहाँ लावे चोर को-
चण्डाल को, गडा-धन बताय॥

चल-चल रे हनुमन्त वीर।
जहाँ चले, वहाँ रहे॥
न चले, तो गंगा-जमुना।
उल्टी बहें, न चले, तो सीता॥
माता की छाती, अंजनी मैय्या।
के सिर पर पैर रखे, सत्-॥
के हनुमान होबे, तो चोर।
के गाड़े धन के पास ठहरबे॥
दुहाई रामचन्द्र के॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की साधना 21 दिन की है, साधक श्री रामदूत हनुमान जी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए 1 माला का जप व दशांश हवन करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर प्रयोग करने के पहले ही काँसे की एक छोटी–सी चार अंगुल की कटोरी लेकर दीपावली को कटोरी की विधि–वत् पूजनादि करे व एक पाव के लगभग काले उड़द को मंत्र से शक्तिकृत कर किसी सुरक्षित स्थान पर रख लें, जब किसी का चोरी गया धन या चोर का पता करना हो तो तब उस कटोरी को चौंक में रखकर, अभिमन्त्रित उड़दों को मन्त्र जपते हुए कटोरी पर मारें तो कटोरी चलने लगेगी जब कटोरी रुके तो फिर उड़द मारें इस तरह वह कटोरी वहीं जाकर रुकेगी जहाँ धन होगा।

चौथिया बुखार में टोटका

जिसे चौथिया बुखार आता हो उसे प्रातःकाल अगस्त के ग्यारह फूलों की माला बनाकर गर्दन में डाल दें। जब सायंकाल शरीर की गर्मी से फूल मुरझा जायें तब उसे चौराहे पर फेंक दें। इस प्रकार तीन दिनों के प्रयोग से ज्वर का आना रुक जाता है।

विषम ज्वर में टोटका

बेवक्त के, कभी दिन और कभी सायंकाल या रात्रि में जिसे ज्वर आता हो, तो उसे काली तुलसी की पत्तियों की माला गले में धारण करनी चाहिए। सात दिनों के प्रयोग से ज्वर चला जाता है।

सभी प्रकार के बुखार में टोटका

चक्रपाणिदत्त ने अपने ग्रन्थ चक्रदत्त के ज्वर प्रकरण में लिखा है–'यदि सफेद जयन्ती के मूल को सिर में धारण करें, तो सभी प्रकार के ज्वर का नाश हो जाता है।'

सिद्ध हनुमान चालीसा

॥ दोहा ॥

श्री गुरु चरण सरोज, निज मनु मुकुर सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहुं मोहि, हरहु कलेस बिकार।

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर, जय कपीस तिहूँ लोक उजागर॥
राम दूत अतुलित बल धामा, अंजनि-पुत्र पवन-सुत नामा॥
महाबीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन वरन विराज सुबेसा, कानन कुण्डल कुंचित केसा॥
हाथ-वज्र औ ध्वजा बिराजै, कांधे मूँज जनेऊ साजे॥
शंकर सुवन केशरी नन्दन, तेज-प्रताप महा जग वन्दन॥
विद्यावान गुनी अति चातुर, राम काज करिबे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया, राम-लखन सीता मन बसिया॥
सूक्ष्म रुप धरि सियहिं दिखावा, बिकट रुप धरि लंक जरावा॥
भीम रुप धरि असुर संहारे, रामचन्द्र जी के काज सँवारे॥
लाय सजीवन लखन जियाये, श्री रघुबीर हरिष उर लाये॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई, तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥
सहस बदन तुम्हरो यश गावै, अस कहि श्रीपति कंठ लगावै॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा, नारद सारद सहित अहीसा॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते, कवि कोविद कहि सके कहा ते॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा, राम मिलाय राज पद दीन्हा॥
तुम्हरो मन्त्र विभीषनु माना, लंकेश्वर भय सब जग जाना॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू, लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं, जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥
दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥
राम दुआरा तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिन पैसारे॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना, तुम रक्षक काहू को डर ना॥
आपन तेज सम्हारो आपै, तीनों लोक हाँक ते काँपै॥
भूत-पिशाच निकट नहिं आवै, महावीर जब नाम सुनावै॥
नासै रोग हरे सब पीरा, जपत निरन्तर हनुमत बीरा॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै, मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥
सब पर राम तपस्वी राजा, तिनके काज सकल तुम साजा॥
और मनोरथ जो कोई लावै, सोई अमित जीवन फल पावै॥
चारो जुग परताप तुम्हारा, है परसिद्ध जगत उजियारा॥
साधु संत के तुम रखवारे, असुर निकंदन राम दुलारे॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता, अस वर दीन जानकी माता॥
राम रसायन तुम्हरे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा॥
तुम्हरे भजन राम को भावै, जनम-जनम के दुःख बिसरावै।
अंतकाल रघुबर पुर जाई, जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥
और देवता चित्त न धरई, हनुमत सेई सर्व सुख करई॥
संकट कटै मिटै सब पीरा, जो सुमिरै हनुमत बल बीरा॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं, कृपा करहु गुरु देव की नाईं॥
जो सत बार पाठ कर कोई, छूटहिं बन्दि महा सुख होई॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा, होय सिद्धि साखी गौरीसा॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा, कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥

॥ दोहा ॥

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रुप।
राम-लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप॥

॥ विधि ॥

यह हनुमान चालीसा भक्त शिरोमणि श्री गोस्वामी तुलसी दास जी के द्वारा रचित है, इसका पाठ प्रायः प्रतिदिन करते ही रहते हैं। इसका 51 बार 101 बार जप करना शत्रु व भूत–प्रेतादि निवारक है। इसे प्रतिदिन चालीस बार पढ़ना चाहिये व नित्य पढ़ते हुए चालीस रोज पूर्ण करने चाहिये। इस प्रकार से यह पाठ सिद्ध होता है। पीपल के नीचे बैठ कर जपने से शनि प्रकोप शान्त होता है। शमी वृक्ष के नीचे पाठ करने से भी शनि का अनिष्ट प्रभाव दूर होता है।

दाँत दाढ़ का दर्द निवारक हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश।
गुरु जी का॥
बन में ब्याई अंजनी।
जिन जाया-
हनुमन्त॥
कीड़ा मकुड़ा माकड़ा।
ये तीनों भस्मन्त॥
गुरु की शक्ति।
मेरी भक्ति॥
फुरे मन्त्र।
ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का ग्रहण के समय 11 माला जप हनुमान जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा। फिर आवश्यकता के समय नीम की डाली लेकर दर्द वाले स्थान पर छुआते हुए मंत्र जपते हुए ही 21 बार झाड़ा करें तो उस व्यक्ति का दाँत/दाढ़ का दर्द कुछ ही क्षणों में दूर हो जायेगा तथा वह व्यक्ति सुख का अनुभव करेगा, फिर रोगी व्यक्ति से पीला प्रसाद बटवा दें।

एकाहिक ज्वर में टोटका

जिस दिन एकाहिक (एकतरा) ज्वर आने वाला हो उस दिन, सूर्योदय से पहले ही, कर्कजंतु (केकड़ा) के रहने के स्थान अर्थात् उसके जल के निकट के बिल में से गीली मिट्टी को लेकर रोगी के सिर पर मोटा लेप चढ़ा दें, तो ज्वर का आना रुक जायेगा।

अग्निरोहिणी (प्लेग) में टोटका

जिसे प्लेग की गाँठ निकल आयी हो उसे लाल रंग के हंसराज की जड़ के रस में दो कपड़े तर कर सुखा लें और उसी का बिछावन और ओढ़ना बनायें। रोगी को इसी पर सुलाना और ओढ़ाना भी चाहिए। इससे प्लेग के कीटाणु मर जायेंगे और ज्वर भी दूर हो जायेगा।

बाय रोग झाड़ने का हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो तडम।
उतड भड तेल करे॥
दीजे बाती तैल बरै।
गलत-सलत॥
तू बाई रोग।
निनाई रहै॥
तो यति हनुमन्त।
की दुहाई फिरै॥
शब्द सांचा।
पिण्ड काँचा॥
फुरो मन्त्र।
ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र को ग्रहण-काल, होली, दीपावली में श्री बजरंगी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए 11 माला का जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर इस मन्त्र से बाय वाले रोगी का झाड़ा ''भस्म'' से करें तो रोगी बाय-रोग से निदान पाये।

कान दर्द दूर करने का हनुमान

॥ मन्त्र ॥

आसमीन नगोर।
वन्ही कर्म न जायते॥
दोहाई महावीर की।
जो रहे कान की पीर॥
अंजनी-पुत्र कुमार।
वायु-पुत्र महाबल को मार॥
ब्रह्मचारी हनुमन्तई।
नमो-नमो॥
दुहाई महावीर की।
जो पीर मुण्ड की॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की साधना दीपावली की रात्रि में श्री रामदूत हनुमान जी विषयक समस्त नियमों का ध्यान रख कर पाँच माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होता है फिर जब कोई कान दर्द से पीड़ित व्यक्ति आये तो साँप के बिल की मिट्टी लेकर इस मन्त्र को जपते हुए 21 बार झाड़ा करे तो रोगी दर्द में आराम पाएगा।

अर्श (बवासीर) नाशक टोटका

अर्श रोग शमन के लिए

1. सीसे (नाग) की अँगूठी बनवाकर पैरों के अँगूठों में धारण करने से बवासीर का कष्ट मिटता है।
2. यदि बवासीर पुरानी हो और तकलीफ दे रही हो, तो जवासे के काँटे का आसन बनवायें और उस पर एक कपड़ा चढ़ाकर एक भारी पत्थर से दबा दें। जब कभी काँटे दब जायें, उस पर बैठने से काँटे न गड़ें तब उस आसन पर बवासीर के रोगी को नित्य बैठायें। इस प्रकार कष्ट मिट जाता है।
3. बवासीर के रोगी को ऊँट के चमड़े के आसन पर बैठायें, इससे मस्से सूख जाते हैं।

अण्ड वृद्धि व सर्प भगाने का हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरु जी का।
जैसे के लेहु रामचन्द्र॥
कबूत ओसई करहु राध।
बिनि कबूत पवनपूत॥
हनुमन्त धाउ हर-हर।
रावन कूट मिरावन श्रवइ॥
अण्ड खेतहि श्रवइ अण्ड।
अण्ड विहण्ड खेतहि श्रवइ॥
वाजं गर्भ हिश्रवइ स्त्री।
षीलहि श्रवइ शाप हर-हर॥
जंबीर हर जंबीर हर-हर।
शब्द सांचा॥
पिण्ड काँचा।
फुरो मन्त्र॥
ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान 11 दिन का है, साधक श्री हनुमान जी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन 2 माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर इस मंत्र को जपते हुए अण्डकोश को हलके हाथ से मले तथा 21 बार जल को शक्तिकृत कर रोगी को पिलाए तो अण्डकोश वृद्धि शान्त हो जाती है, तथा मिट्टी के एक ढेले को 21 बार अभिमंत्रित कर साँप के बिल पर रखने से साँप निकल जाता है।

4. यदि बवासीर के मस्से फूले हुए हों और वे विशेष कष्ट दे रहे हों, तो गेंडे की जननेन्द्रिय को सुखाकर उसका कंकण बनवा लें और उसे रोगी के दाहिने हाथ की कलाई में धारण करवायें, तो सभी मस्से सूख जायेंगे तथा बवासीर की पीड़ा भी शान्त हो जायेगी।

हवा आदि रोग दूर करने का हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश-
गुरु जी का॥
काली चिड़ी-
चिग-चिग करे।
धोला आवे-
वाते आवे हरे॥
यती हनुमान-
हाँक मारे॥
मथवाई और-
वाई जाये भगाई।
हवा हरे॥
गुरु को शक्ति।
मेरी भक्ति॥
फुरो मन्त्र।
ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र को होली या दीपावली की रात्रि को किसी कुएँ के ऊपर श्री हनुमान जी की प्रतिमा स्थापित कर हनुमान जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए, इस मन्त्र का अनगिनत जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय पृथ्वी पर मन्त्र का जाप करते हुए 21 रेखाएं सीधी खींचे फिर रोगी को उन रेखाओं के पास बिठा कर इन रेखाओं के ऊपर रोगी के दोनों हाथ रखवा दें पुनः इस मन्त्र से रोगी का 21 बार झाड़ा मोर पंख से या लोहे की वस्तु से करें, झाड़ा करते समय रोगी अचानक या अंजाने में आगे की ओर खिसक पड़ेगा तो उसकी मथवाय, वाय, हवादि रोग उसी क्षण नष्ट हो जाएँगी और वही सुखी होगा।

दाद झाड़ने का हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ हाथ वेगे चलाई।
आदि-नाथ, पवन-पूत॥
हनुमन्त कर मोरकत।
मेरु चाल, मन्दिर चाल॥
नव-ग्रह चाल, दोष-चाल।
दिनाई चाल, डोरी चाल॥
इन्द्रहि चाल, चाल-चाल।
हनुमन्त बिना, सह-काल॥
उठि विषि तरु-वर चाल।
हम हनुमन्ते मुगरे॥
लिंगडा परोरे वर्ध छले।
तरुयरी घानपरि हि॥
यष अष्टोत्तर-शत व्याधि।
लावरे विशालाव अहरो॥
विष आह॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र को ग्रहण काल या दीपावली में श्री राम दूत हनुमान जी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए 11 माला जप व दशांश हवन करने से यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर ताँबे के कलश में शुद्ध जल भर कर 21 बार शक्ति-कृत कर दाद-वाले व्यक्ति को पिलायें, यह क्रिया नित्य करें जब तक दाद न दूर हो जाय।

आधा शीशी विनाशक हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ कारी चिरई चौकही।
राव तीरे बासा॥
या किसी हाँक दे-
हनुमन्त वीर, आधा-
शीश विनाशा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र को ग्रहण–काल में पवन–पुत्र हनुमान विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए 11 माला का जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा। फिर आधा–शीशी दर्द से पीड़ित व्यक्ति का उपलों की राख से झाड़ा करने से आधा–शीशी का दर्द दूर होता है।

कान की पीड़ा निवारक हनुमान

॥ मन्त्र ॥

वनरा गाँठि वानरी।
तो डाँटे हनुमान, कंठ॥
बिलारी, बाधी, थनैली।
कर्ण मूल, सम जाइ॥
श्री रामचन्द्र की बानी।
पानी पथ होइ जाइ॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का अनुष्ठान सात दिन का है, साधक अंजनी–पुत्र श्री बीर बजरंगी के समस्त नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन 1 माला का जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा। फिर जब कान की पीड़ा से व्यथित व्यक्ति आये तो मोर पंख और भस्म से 21 बार झाड़ा करें, तो रोगी व्यक्ति की पीड़ा दूर हो, वह सुखी होवेगा।

नकसीर रोग निवारक हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश।
गुरू जी का॥
सार-सार।
महा-सागरे बाँधूँ॥
सात बार फिर बाँधूँ।
तीन बार लोहे की॥
तार बाँधूँ।
सार बाँधे-
हनुमन्त वीर॥
पाके न फूटे।
तुरन्त सेखे॥
आदेश।
आदेश।
आदेश॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र को ग्रहण-काल में 11 माला जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, साधना में श्री हनुमान जी विषयक सभी नियमों का पालन करें, एवं जब किसी व्यक्ति के नाक से रक्त गिर रहा हो तो राख लेकर इस मन्त्र को जपते हुए 21 बार नाक का झाड़ा करें तत्काल ही नकसीर बन्द हो जाएगी और पीड़ित व्यक्ति सुख का अनुभव करेगा।

पाण्डु रोग नाशक टोटका

कामला रोग की शान्ति के लिए

1. जिसे कामला रोग हो गया हो उसके देह के सूती कुर्त्ते को साफ कर एक मिट्टी की हँडी में रखें और उसमें इतवार के दिन इक्कीस तोले कुटी हुई कुटकी का चूर्ण डालें तथा जिस पात्र में एक पाव जल आता हो उसी से नापकर इक्कीस पात्र पानी कुरता और कुटकी रखे पात्र में डाल दें। दूसरे दिन दो-दो हाथ की पतली इक्कीस लकड़ियों की मंद-मंद आँच देकर पानी को खौलायें और सभी लकड़ियाँ जला डालें। फिर उस बर्तन में रखे कुरते को बिना निचोड़े ही सूखने दें। सूख जाने पर रोगी को पहना दें। इक्कीस दिनों तक इस कुर्त्ते को शरीर में धारण किये रहने से कामला रोग से छुटकारा मिल जाता है।

समस्त रोग शान्ति का हनुमान

॥ मन्त्र ॥

पर्वत ऊपर पर्वत।
पर्वत ऊपर स्फटिक शिला॥
स्फटिक शिला पर अंजनी।
जिन जाया हनुमन्त॥
नेहला-टेहला-
काँख की कखराई॥
पीछे की आदटी।
कान की कनफेट॥
राल की बद।
कष्ठ की कष्ठमाला॥
घुटने का डहरु।
दाढ़ की दढ़शूल॥
पेट की ताप, तिल्ली किया।
इतने को दूर करे॥
भस्मंत न करे तो-
तुझे माता अंजनी का॥
दूध पिया हराम।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति॥
फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।
सत्यनाम आदेश गुरु जी का॥

॥ विधि ॥

जो साधक ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया हो वह इस मंत्र का जप करते हुए रोगी का झाड़ा करे तो रोगी व्यक्ति तत्काल रोग से निदान पाएगा।

आधा सीसी नाशक हनुमान

॥ मन्त्र ॥

बन में ब्याई अंजनी।
कच्चे बन फल खाय॥
हाँक मारी हनुमन्त ने।
इस पिण्ड से आधा-॥
सीसी उतर जाय॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र को ग्रहण काल में 10 माला का जप श्री हनुमान जी विषयक सभी नियमों को ध्यान रखते हुए करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर जब आपके पास कोई आधा–सीसी दर्द से पीड़ित व्यक्ति आये तो राख लेकर 21 बार इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए झाड़ा करें तो वह शीघ्र ही आधा सीसी दर्द से निजात पायेगा।

रक्तपित्त नाशक टोटके

जिसके ऊपर के अंगों–नाक और मुँह से खून गिरने के बीमारी हो उसके सिर पर ताजे अड़ूसे के पत्तों के रस में रँगे औरछाया में सुखाये हुए मलमल के साफे को ग्यारह दिनों तक बाँधना चाहिए। ग्यारह दिनों के बाद जब रोगी सोया रहे तभी चुपके से सिर से साफे को लेकर आधी रात के वक्त चौराहे पर फेंक दें और फिर उधर न ताकें। घर लौट आयें। इस टोटके से सदा के लिए रक्तपित्त या खून गिरने की बीमारी दूर हो जाती है।

खून बन्द करने के लिए

लाल रंग के असल हकीक पत्थर को गले या बाँह में पहनने से रक्तपित्त, प्रदर, बवासीर या अन्य किसी कारण से निकलने वाला शरीर का खून बन्द हो जाता है।

रक्त रोकने के लिए

यदि किसी के शरीर से रक्तस्राव हो रहा हो, तो सूर्योदय से पहले ही लजालु के सात पौधे उखाड़ और सफेद सूत में सात गाँठ देकर माला बनायें। रोगी के गले में इस माला को धारण कराने से रक्तस्राव रुक जाता है।

बालहिक्का (हिचकी) में टोटका

यदि दूध पीने वाले छोटे बच्चे को बहुत वेग के साथ हिचकी आये, तो उसके सिर और कलेजे पर तेल की मालिश करने के बाद एक तृण का टुकड़ा लें कर बच्चे के सिर से निहुँछकर फेंक दें, तो हिचकी बन्द हो जायेगी।

डिब्बा (पसली) का रोग दूर करने के लिए हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ सत्य नाम-
आदेश गुरु जी का॥
डंक खारी।
खंखरा कहाँ गया ?
सवा लाख पर्वतो गया।
सवा लाख पर्वतो-
जाय क्या करेगा ?
सवा भार को-
कोयला करेगा॥
सवा भार कोयला-
कर क्या करेगा ?
हनुमन्त वीर-
नव चन्द्रहास-
खड्ग घड़ेगा॥
नव चन्द्रहास खड्ग-
घड़ क्या करेगा ?
जात व ढोख-
पसली बाय काल
कूट खारो समुद्र नखेगा।
जगद्‌गुरु की शक्ति॥
मेरी भक्ति।
फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मंत्र का ग्रहण–काल में 11 माला जप श्री हनुमान जी विषयक सभी नियमों को ध्यान में रखकर करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय तिल के तेल में असली सिंदूर मिला कर डिब्बा वाले बालक का झाड़ा करने से वह बालक शीघ्र ही इस रोग से निदान पाता है।

नेत्र पीड़ा निवारक हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो।
झल-मल॥
जहर भरी-
तलाई॥
अस्ताचल-
पर्वत ते आई॥
तहाँ बैठा-
हनुमन्त जाई॥
फूटे न पाकै
करै न पीड़ा
यती हनुमन्त-
राखै हीड़ा॥
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा॥
फुरो मन्त्र।
ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मंत्र का ग्रहण–काल में सात माला का जप, हनुमान जी के विषयक सभी नियम मानते हुए करने से यह मंत्र सिद्ध होता है, फिर आवश्यक समय में निम्बू की टहनी लेकर 21 बार रोगी के नेत्रों का झाड़ा मंत्र जपते हुए करने से वह नेत्र पीड़ा से मुक्ति पाता है।

बवासीर नाशक हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ काका कता।
क्रोरी कर्ता॥
ॐ करता से होय।
यरसना दश-
हूँस प्रकटे॥
खूँनी-बादी-
बवासीर न होय॥
मन्त्र जान के-
न बताए, द्वादश-
ब्रह्म हत्या का पाप होय।
लाख जप करे तो-
उसके वंश में न होय॥
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा॥
फुरे मन्त्र।
ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मंत्र का अनुष्ठान सात दिन का है, साधक श्री हनुमान जी के नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन 1 माला जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा फिर आवश्यकता के समय रात्रि का रखा हुआ पानी लेकर, इस मन्त्र से 21 बार अभिमंत्रित करके गुदा प्रक्षालन करें तो खूनी और बादी बवासीर दोनों ठीक हो जाती है।

बगली दर्द दूर करने का हनुमान

॥ मन्त्र ॥

वात् वात्।
अकाल वात्॥
अन्ध वात्।
कुन-कुने वात्॥
कुट-कुटरे वात्।
आभार प्रति-
चक्रे शीघ्र फाट॥
तौमार डांके।
पवन-पुत्र-
हनुमान कार आज्ञाय॥
राजा श्री-
रामेर आज्ञाय॥

॥ विधि ॥

इस मंत्र को होली, की रात्रि या मंगल–पुष्य नक्षत्र में हनुमान जी विषयक सभी नियमों को मानते हुए सात माला जप करें, तो यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यक समय में 21 बार झाड़ा करने तथा शुद्ध पीली सरसों का तेल को लेकर 21 बार अभिमंत्रित कर दर्द वाले स्थान पर मर्दन करने से रोगी शीघ्र रोग से मुक्ति पायेगा, रोगी के ठीक हो जाने पर रोगी व्यक्ति से सात बालकों को मीठा भोजन तथा हनुमान जी को चोला व लंगोट चढ़वायें।

आधा सीसी नाशक हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश-।
गुरु जी का॥
काली चिडी-।
चिग-चिग करे॥
घोली आवै वासे हरै-।
जती हनुमन्त-।
हाँक मारे॥
मथवाई और-।
आधा-सी सी नाशै॥
गुरु की शक्ति॥
मेरी भक्ति।
फुरे मन्त्र।
ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का ग्रहण–काल में हनुमान जी विषयक सभी नियमों को ध्यान रख सात माला जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर रोगी का माथा पकड़ कर इस मंत्र से 21 बार झाड़ा करने सेरोगी व्यक्ति का आधा–सीसी का दर्द थोड़ी देर में दूर हो जाएगा।

दिल फरक कराने के लिए

प्रेमिका के सिर के बालों को एक मिट्टी के प्याले में जलायें और उसे फेंक दें। फिर उसी प्याले में प्रेमी को पानी पिलाने से दिल फरक हो जाता है।

उन्माद में

उन्मादग्रस्त रोगी को मंगलवार के दिन ग्यारह अदद वानरी (केवाँच) बीजों को बासी जल के साथ पीसकर उसके सम्पूर्ण शरीर में उबटन लगवा दें और ग्यारह फेरा धूप में घुमायें। इस प्रकार तीन मंगलवार तक करने से रोग मिट जाता है।

उखड़ी नाभि ठीक करने का हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो नाड़ी-नाड़ी।
नौ से नाड़ी॥
बहत्तर कोठा।
चलै अगाड़ी॥
डिगै न कोठा।
चले नाड़ी॥
रक्षा करे यती-।
हनुमन्त की आन॥
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा॥
फुरे मन्त्र।
ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र को ग्रहण–काल में श्री पवनतनय के सभी नियमों को मानते हुए 11 माला का जप करें, तो मंत्र सिद्ध होगा फिर आवश्यकता के समय रोगी व्यक्ति जिसकी नाभी उखड़ी होवे, उसे लिटा करके उसकी नाभि के ऊपर एक ऐसा बाँस का पोला, जिसमें कि नौ गाँठ हों, खड़ा कर दें, और इस मंत्र को जपते हुए 21 बार फूँक बाँस के छेद में जोर–जोर से मारें तो उखड़ी हुई नाभि ठीक हो जायेगी।

अपस्मार (मिर्गी) नाशक टोटका

1. मिर्गी वाले के गले में एक साबूत जायफल को कपड़े की ताबीज या धागे में गूँथकर लटका दें तो दौरा समाप्त हो जायेगा।
2. असल हींग की ताबीज पहनने से भी दौरे रुकते हैं।
3. जिसे मृगी के दौरे आयें उसे मंगलवार के दिन सूअर के खुर की अँगुठी धारण करा देने से रोग का दौरा रुक जाता है। अँगूठी दाहिने हाथ में पहनानी चाहिए।
4. मृगी रोग से ग्रसित रोगी अपने पास जंगली सूअर के मूत्र से तर मिट्टी लाकर रखे तो दौरा रुक जाता है।
5. भेड़िये के दाँतों से बनी ताबीज को गले में पहनाने से बालकों की मृगी के दौरे खत्म हो जाते हैं।

बाला झाड़ने का हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो वारा रे।
तू सदा बलवन्ता॥
बाला ने खोदे-।
हनुमन्ता॥
शब्द साँचा।
पिण्ड काँचा॥
फुरो मन्त्र।
ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र को होली, दीपावली या पर्व–काल में श्री हनुमान जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए 11 माला का जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय साँभर नमक की कंकड़ी को 21 बार शक्तिकृत कर बाला वाले स्थान पर 21 बार झाड़ा करें, जब तक पीड़ा न दूर होवे तब तक रोज ही झाड़ा करें।

यंत्र-मंत्र-तंत्र सिद्ध करने के लिए किसी भी तांत्रिक या पहुँचे हुए व्यक्ति की सलाह अवश्य लें। अन्यथा फायदे की जगह आपको नुक्सान हो सकता है।

वातव्याधि नाशक टोटका

वातव्याधिनाशार्थ

लकवा से पीड़ित रोगी के बिस्तर पर 'लक्का' कबूतर को लाकर रखने और रोगी के शरीर से उसका स्पर्श कराने से शीघ्र ही आरोग्य लाभ होता है।

अर्दितवात (मुँह टेढ़ा होना) में

अर्दित रोग से ग्रस्त रोगी की गर्दन और टेढ़े हुए चेहरे पर, कछुए के ताजे पकते हुए मांस की भाप में कपड़े को गर्म कर एक सप्ताह तक नित्य 108 बार सेंक करने और सेंक के काम में आनेवाले कपड़े को रोगी की पीठ की ओर फेंक देने से रोग मिट जाता है।

सिर दर्द निवारक हनुमान

॥ मन्त्र ॥

लंका में बैठ के।
माथ हिलावे हनुमन्त॥
सो देखि के राक्षस-।
गण पराय दूरंत॥
बैठी सीता देवी।
अशोक वन में॥
देखि हनुमान को।
आनन्द भई मन में॥
गई उर विषाद देवी।
स्थिर दरशाय॥
"अमुक" के सिर।
व्यथा पराय॥
"अमुक" के नहिं कछु।
पीर नहिं कछु भार॥
आदेश कामाख्या हाड़ी।
दासी चण्डी की दोहाई॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का सात दिन का अनुष्ठान है, साधक श्री हनुमान जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन 1 माला का जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा, और जब आवश्यकता हो तो रोगी व्यक्ति को दक्षिण की ओर मुख करके बैठा दें और उसके सिर को हाथ से पकड़ कर इस मन्त्र को जपते हुए राख द्वारा 21 बार झाड़ा करें तो उसका सिर–दर्द दूर हो वह सुख का अनुभव करे।

(अमुक की जगह पीड़ित का नाम उच्चारण करें)

आधा-सीसी दर्द नाशक हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो वन मे।
ब्याई बानरी॥
उछल वृक्ष पर।
जाय, कूद-कूद॥
शाखा नरी।
कच्चे वन॥
फल खाय।
आधा तोड़े॥
आधा फोड़े।
आधा देय गिराय॥
हंकारत हनुमान जी।
आधा सीसी जाय॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की सिद्धि के लिए ग्रहण काल में श्री हनुमान जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए 10 माला का जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। फिर जब कभी आवश्यकता हो तो राख (भस्म) लेकर आधा-सीसी से पीड़ित व्यक्ति का झाड़ा करे तो वह शीघ्र ही सुख का अनुभव करेगा।

तिल्ली नाशक टोटके

1. झाऊ की लकड़ी की कटोरी बनाकर उसमें पानी भर दें और प्यास लगने पर उसी पानी को पीने के काम में लायें। कटोरी ख़ाली होने पर फिर उसमें पानी भरते रहना चाहिए। इससे बढ़ी हुई तिल्ली घट जाती है और पित्त की वृद्धि के कारण दाह भी मिट जाता है।
2. लोहे को खूब गरम कर उसे जल में बुझायें और वही जल तिल्ली के रोगी को पिलायें। इससे तिल्ली घटने लगती है।
3. पुरानी तिल्ली हो और साथ-साथ जाड़ा देकर बुखार भी आता हो तथा पित्त बिगड़कर शरीर पीला पड़ गया हो, तो रविवार के दिन सुबह रोहेड़ा के पेड़ पर चढ़ गिनती में इक्कीस फूल तोड़ लें और लाल सूत में उन फूलों की माला गूँथकर रोगी के गले में धारण करायें। इस क्रम से इक्कीस दिनों तक माला बनाकर धारण कराने से तिल्ली, बुखार और पित्त की खराबी मिट जाती है। रोग अच्छा होने पर इक्कीस दिनों की इक्ट्ठी मालाओं को, उत्तर-दक्षिण की ओर बहने वाली नदी की धारा में डाल दें।

नेत्र रोग नाशक हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ नमो वने बिआई।
बानरी जहाँ-जहाँ॥
हनुमन्त।
आँखि पीड़ा॥
कषावरि गिहिया।
लाइ चरिउ जाइ॥
भस्मन्तन।
गुरु की शक्ति॥
मेरी भक्ति।
फुरो मन्त्र॥
ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र को ग्रहण–काल में श्री हनुमान जी विषयक सभी नियमों को मानते हुए 10 माला का जप करें तो यह सिद्ध होगा। फिर जब आवश्यकता हो तब नेत्ररोग से पीड़ित व्यक्ति के आँख पर हाथ फेरते हुए 21 बार इस मन्त्र को जपते हुए फूँक मारें तो रोगी की व्यथा मिट जाएगी और वह सुखी होगा।

हृदय की धड़कन कम करने का टोटका

हृदय की धड़कन बढ़ने पर

हौलदिल की बीमारी वाले को नित्य ताजे दौने की पत्तियों की माला धारण करनी चाहिए। इससे धड़कन कम हो जाती है। पत्तियों के कुम्हला जाने पर उसे चौराहे पर फेंक दें।

मूत्राघात नाशक टोटका

मूत्र की रुकावट पर

सेंधा नमक का एक बड़ा–सा टुकड़ा सुपारी के बराबर लेकर पत्थर पर घिसें और चिकना कर लें। फिर उसे मल–मार्ग पर रख लँगोट कस लें। इससे मूत्राधात के कारण रुका मूत्र उतर जाता है।

दन्त पीड़ा निवारक हनुमान

॥ मन्त्र ॥

ॐ राई-राई।
तू मेरी माँई॥
धरती नी धूलि।
मसानी छाई॥
सान खवाई।
सो हनुवन्त॥
की दुहाई।
मारा गुरु॥
जपत जलत बाई।
हालि मन्त्र गुरु खवाई॥
मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति॥
फुरे मन्त्र।
ईश्वरो वाचा॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र की साधना 21 दिन की है, श्री हनुमान जी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन 1 माला का जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है फिर जब दाँत के दर्द वाला कोई व्यक्ति आये तो इस मन्त्र को जपते हुए 21 बार झाड़ा करने से शीघ्र ही दाँत दर्द से पीड़ित व्यक्ति आराम पायेगा।

अश्मरी (पथरी) नाशक टोटका
पथरी रोग पर

जिसे पथरी की बीमारी हो उसे अपने हाथ की अँगुली में लोहे की अँगुठी धारण करनी चाहिए। इससे पथरी का दर्द रुका रहता है।

पुरानी पथरी की बीमारी में रोगी को बरुण (बरुना) के पेड़ के नीचे खाट बिछाकर उसी पर दिन में विश्राम करना चाहिए। इससे पथरी की पुरानी तकलीफ धीरे-धीरे खत्म हो जाती है।

स्त्री सर्व-रोग नाशक हनुमान

॥ मन्त्र ॥

हनुमान हठीले।
लोहे की लाट॥
वज्र का खीला।
भूत को बाँध॥
प्रेत-को बाँध।
मैली कुचमैली॥
कूँख मैली, रक्त मैली।
ऐसी चौदा मैली।
पकड़ चोटी न निकाले।
तो अंजनी का दूध॥
हराम करे।
महादेव की जटा॥
में आग लगे।
ब्रह्मा के वचन से॥
राम चन्द्र के वचन से।
मेरे वचन से॥
मेरे राजगुरु।
के वचन से॥
इसी वक्त भाग जा॥

॥ विधि ॥

इस मंत्र का अनुष्ठान 21 दिन का है, साधक केशरी नन्दन बजरंग बली विषयक सभी नियमों का ध्यान रख कर प्रतिदिन 1 माला का जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय रोगी व्यक्ति का झाड़ा लोहे की वस्तु से इस मंत्र को जपते हुए करें तो रोगी रोग से निदान पायेगा।